॥ श्री ॥

महंत मुनि तिलोकऋषिजी कृत

सामायिक प्रतिक्रमण

सूत्रार्थ

दश पच्चक्खाणो तथा सज्झायो विगेरे सहित

स्थानकवासी जैन भाइओने भणवा वांचवा माटे

बीजी आवृत्ति करता सुधारो वधारो करीने

छपावी प्रसिद्ध करनार,

बालाभाई छगनलाल शाह

ठे. जीकाभटनी पोळ मु. अमदावाद

त्रीजी आवृत्ति नकल ११००

संवत १९८१—सन १९२५

किम्मत चार आना

श्री लक्ष्मी प्रिन्टिंग प्रेसमां शा. मणीलाल छगनचंद छाप्युं
रीचीरोड–अमदावाद.

सूचना
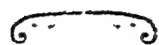
महारे त्यां जैनधर्मनां तमाम जातनां पुस्तको जेवां के श्रावक भीमसींह माणेक, श्री जैनधर्म प्रसारक सभा विगेरे प्रसिद्ध कर्त्ताओनां तथा मारां पोतानां छापेलां तथा तमाम स्थळोए मळतां जैन पुस्तको मोटा जथ्थामां तैयार मळे छे. लायब्रेरी सारु तथा जैनशाळा सारु मंगावनारने सारुं कमीशन आपवामां आवे छे वधु विगत साथे मोटुं सूचीपत्र छापेल तैयार छे. एक आनानी टीकीट बीडी नीचेना शीरनामाथी मंगावो.

ली. बालाभाइ छगनलाल शाह.
जैन बुकसेलर ठे. कीकाभटनी पोळ.
मु. अमदावाद.

प्रस्तावना.

आ सामायिक प्रतिक्रमण सूत्रनी अर्थ साथेना पुस्तकनी घणीज जरुर हती ने ते पुस्तक छापवा बाबत घणा जैन धर्मीभाइओनी अमारा उपर उपराउपरी मागणी थवाथी, तेनी त्रे त्रण प्रतो एकठी करीने तेमां बनतो सुधारो वधारो करीने मारवाड, मेवाड, दक्षिण, पंजाव आदिना स्थलोना दरेक स्थानकवासी जैन भाइओने जेवी रीते उपयोगी थाय तेवी रीते करवा अमोए अमाराथी बनती महेनते शुद्ध करीने आ पुस्तकनी पहेली आवृत्ति संवत १९६२ नी सालमां १०००) नक्कल ने बीजी आवृत्ति सवत १९६८ मां छपावेली परन्तु लखवाने घणो आनद थाय छे के आपणा स्वधर्मीभाइओनी मददथी आ नवीन आवृत्ती खपी गइ छे ने आ त्रीजी आवृत्ति छापवानो शुभ प्रसग मलेल छे तो आ त्रीजी आवृत्तिने पण मारो आश्रय मळशे तो मारो श्रम सफल थशे

आ त्रीजी आवृत्तिमां प्रथमनी आवृत्ति करतां सामायिक प्रतिक्रमण विगेरेना अर्थ घणाज विस्तारथी आवेला छे कारणके आ पुस्तक रतलाम ट्रेनींग कोलेज तथा पुनाजी इंद्रमल कावडीयाना आग्रहथी महंतमुनि तिलोकरीखजीना प्रतिक्रमण उपरथी तथा अमारी प्रथम आवृत्ति साथे राखीने छपावेल छे.

आ पुस्तकनी अंदर सामायिक प्रतिक्रमण घणाज विस्तारथी अर्थ साथे तथा ते शिवाय दश पच्चक्खाणो घणा खुलासा साथे, चत्तारीमंगळं, चार शरणां, श्रावकने चिंतववाना त्रण मनोर्थ, प्रतिक्रमणनी सज्जाय, जीवराशीनी सज्जाय, हावीरस्वामीनुं चोढालीयुं विगेरे विषयो आवेला छे तेथी आ पुस्तक अति उपयोगी थएल छे.

ली. बालाभाइ छगनलाल शाह.
जैन बुकसेलर ठे. कीकाभटनी पोळ,
मु. अमदावाद.

॥ श्री ॥

॥ श्री गौतमाय नमः ॥

॥ अथ श्री नवकारमत्र प्रारंभ ॥

॥ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सवसाहूणं ॥ एसो पच णमुक्कारो, सव पावप्पणासणो ॥ मगलाणं च सवेसि, पढमं हवइ मंगलं ॥ इति नमस्कार ॥ १ ॥

अर्थ.—(अरिहंताणं के०) अरि एटले कर्मरूप शत्रु तेने हंताण एटले हणनार, अर्थात् जेणें चार घनघाती कर्मरूप शत्रुनो नाश कर्यो अने जे चोत्रीश अतिशयोये करी शोभित तथा वाणीना पांत्रीश गुणोये करी विराजमान एहवा विहरमान श्रीअरिहंतने महारो (णमो के०) नमस्कार हो (सिद्धाण के०) जेणे सकल कार्य साध्यां, अने जे आठ कर्म खपावी, मोक्ष नगरे पहोच्या अने एकत्रीश गुणोयें करी सहित एवा श्रीसिद्धभगवाननें महारो (णमो

के०) नमस्कार हो. (आयरियाणं के०) जे पोते पांच आचार पाले अने बीजाने पलावे छत्रीश गुणें करी सहित एहवा श्रीआचार्यजीने महारो (णमो के०) नमस्कार हो. (उवज्झायाणं के०) जे शुध्ध सूत्राक्षर पोते भणे, अने बीजाने भणावे तथा पच्चिश गुणें करी सहित एहवा श्री उपाध्यायजीने महारो (णमो के०) नमस्कार हो. (लोए के०) अढीद्वीपरूप मनुष्य लोकने विषे, (सव्वसाहूणं के०) थिविर कल्पादिक भेदोवाला सर्व साधुं जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तपना साधनार तथा जे सत्तावीश गुणें करीने सहित छे तेमने महारो (णमो के०) नमस्कार हो. (एसो के०) ए जे अरिहंतादिक संबंधी, (पंचण मुक्कारो के०) पांच प्रकारनो नमस्कार छे ते केहवो छे ? तो के (सव्वपाव के०) ज्ञानावरणादिक सर्व पाप तेहनो, (प्पणासणो के०) प्रकर्षे करी विनाशनो करणहार छे. वली ते केहवो छे? तो के (मंगलाणचं सव्वेसिं के०) सर्वमंगलमांहे (पढमं के०) प्रथम एटले मुख्य, (मंगल के०) मंगल (हवइ के०) छे॥१॥

॥ अथ तिख्खुत्तानी पाटी प्रारंभ. ॥

॥ तिख्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवय चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ २ ॥

अर्थ –(तिक्खुत्तो के०) त्रण वार (आयाहिण के०) आदक्षिणतः एटले जिमणापासा थकी प्रारंभीने, (पयाहिणंकरेमि के०) प्रदक्षिणा प्रत्ये करुं छुं, (वंदामि के०) वांदु छुं, पगे लागु छु, (नमंसामि के०) मस्तक नमाडीने नमस्कार करुं छुं, (सक्कारेमि के०) सत्कार दउं छुं, (सम्माणेमि के०) सन्मान दउ छु, (कल्लाण के०) कल्याणकारी, (मगलं के०) मंगलकारी, (देवयं के०) धर्मदेव समान, (चेइय के०) छकायना जीवने सुखदायक एवा ज्ञानवत प्रत्ये (पज्जुवासामि के०) पर्युपासु छु एटले मन वचन कायायें करीने सेवा करु छु, (मत्थएण वंदामि के०) मस्तके करी वांदु छु ॥१॥

॥ अथ इरियावहीनी पाटी प्रारंभ. ॥

॥ इच्छाकारेण मदिसह भगवन् इरियाव्रहियं पडि-

क्कमामि, इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरि-यक्कमणे, उसा उत्तिंग, पणग दग, मट्टीमक्कडा, संताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किला मिया, उद्दविया, ठाणाओठाणं संकामिया, जीवि-याओ ववरोविया, तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ ३ ॥

अर्थः—(इच्छाकारेण के०) तमारी इच्छापूर्वक, (संदिसह के०) आज्ञा करो तो, (भगवन् के०) हे महाभाग्य ज्ञानवंत ! (इरियावहियं के०) चाल-वानो जे मार्ग तेमांहे थइ एवी जे जीवबाधादिक सपापक्रिया तेथकी हुं (पडिक्कमामि के०) पडिक्कमुं निवर्त्तुं ? इहां गुरु कहे, (पडिक्कमह के०) पडिक्कमो, निवर्त्तो, पाप टालो. तेवारें शिष्य कहे, (इच्छं के०) प्रमाण छे, हुं पण (इच्छामि के०) इच्छुं छुं. जे (इरि-यावहियाए के०) गमन छे प्रधान मुख्य जेमां एवो

जे मार्ग तेने विषे थती एवी जे (विराहणाए के०) जंतुओनी विराधना तेथकी (पडिक्कमिउं के०) प्रतिक्रमवाने निवर्त्तवाने वांछुं छुं हवे जीवविराधना शाथकी थाय ? ते कहे छे. (गमणागमणे के०) जातां ने आवतां, (पाण के०) प्राणीने (क्कमणे के०) पगे करी चांप्याथकी (वीय के०) वीजने (क्कमणे के०) पगे करी चांप्याथकी, (हरिय के०) नीलवर्णवाली वनस्पति तेने, (क्कमणे के०) पगे करी चांपवाथकी (ओसा के०) ठार एटले सूक्ष्म अप्काय आकाशथकी पडे ते, (उत्तिग के०) कीडीयोनां नागरां, (पणग के०) पांच वर्णी नील फूल, (दग के०) पाणी, (मट्टी के०) काची माटी, (मक्कडा के०) मर्कट एटले कोलियावडाना (संताणा के०) सन्तान, ए सर्वने (संकमणे के०) पगे करी पीड्याथकी अथवा मसल्याथकी, घणुं शु कहुं ? (जे के०) जे कोइ, (मे के०) में के० (जीवा के०) जीवो, (विराहिया के०) विराध्या होय दुःखमांहे पाड्या होय ते कया जीवोने में विराध्या दुःखी कीधा होय?

तेनां नाम कहे छे. (एगिंदिया के०) जेहने शरीर रूप एकज इंद्रिय होय ते पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पतिना जीव, (वेइंदिया के०) शरीर तथा मुख ए दोय इंद्रियवाला जे शंख, शीप, गंडोला, अलसीयां, एहवा जेहने पग न होय ते, (तेइंदिया के०) तीन इंद्रियवाला ते जेने शरीर, मुख, नाक होय ते, कुंथुवा, जू, लीख मांकड, कीडी प्रमुख जेहना मुख उपर शिंग होय ते (चउरिंदिया के०) चार इंद्रियवाला ते जेने शरीर, मुख, नाक ने आंख होय ते, माखी, मच्छर, डांस, वींछी, भमरी, टीड, जे उडनारा जीव जेने आठ पग, तथा मस्तके शिंग होय ते, (पंचिंदिया के०) पांच इंद्रियवाला जेने शरीर मुख, नाक, आंख्य अने कान होय, ते जल-चर, खेचर, ए सर्वतिर्यंच जाणवा तथा मनुष्य, देव, नारकी, ए सर्व पंचेंद्रिय जीव कहिये. हवे ए सर्व जीवोने केवी रीते विराध्या होय ? तेना प्रकार कहे छे. (अभिहया के०) सामा आवतां हण्या, (वत्तिया के०) एक ढगले करया तथा धूले करी ढांक्या,

(लेसिया के०) भूमिये घश्या तथा लगारेक मसल्या (संघाइया के०) मांहोमांहे शरीरने मेलववे करी एकठा कीधा, (संघट्टिया के०) थोडो स्पर्श करवे करी दुहव्या (परियाविया के०) समस्त प्रकारे परिताप पमाड्या, पीडया, (किलामिया के०) गाढी किलामणा उपजावीने मारया नही, पण मृत प्राय कीधा, (उद्दाविया के०) त्रास पमाडीने हाली चाली शके नही एहवा कीधा, (ठाणाओ के०) एक स्थानकथकी उपाडीने (ठाण के०) बीजे ठेकाणे (संकामिया के०) संक्रमाव्या मूक्या, (जीवियाओ के०) जीवित थकी, (ववरोविया के०) चूकाव्या, मारया, नाश कीधा (तस्स के०) ते सबंधी जे अतिचार लाग्या ते (दुक्कडं के०) पाप कहीये ते दुष्कृत (मिच्छामि के०) महारुं मिथ्या एटले निष्फल थाओ ॥ ३ ॥

॥ अथ तस्सउत्तरीनी पाटी प्रारंभ. ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहिकरणेणं, विसलीकरणेणं, पावाणंकम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं, अन्नत्थ उससिएणं, निस-

सिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिठ्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो. अविराहिओ, हुज्ज मेकाउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि, तावकायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४ ॥

अर्थः–(तस्स के०) ते पापनीज वली विशेष शुद्धिने अर्थे जे कांइ आगल करवुं तेने उत्तरीकरण कहीये एटले तेनेज (उत्तरी करणेणं के०) विशेषे करी वली उपर शुद्ध करवुं अर्थात् जे अतिचारोनुं आलोयण प्रमुख पूर्वे कीधुं छे, तेनी वली विशेष शुद्धिने अर्थे कायोत्सर्ग करुं छुं. ते कायोत्सर्गतो (पायच्छित्तकरणेणं के०) शुद्ध प्रायश्चित्त ते पापनी आलोयणा करवाथकी होय. ते प्रायश्चित्त पण (विसोहिकरणेणं के०) विशुद्धि, निर्मलता करवे करीने होय वली ते विशुद्धि पण विशल्य होय, तो थाय माटे (विसल्लीकरणेणं के०) मायाशल्य नियाण-

शल्य मिथ्यात्वशल्य, ए तीन शल्य टालवा थकी थाय, ए उत्तरीकरणादिक चार हेतुये करीने शुं करवुं छे? ते कहे छे (पावाणंकम्माणं के०) संसार-हेतुरूप जे पाप कर्म तेने (निग्घायणट्ठाए के०) निर्घातन एटले उच्छेदन करवाने अर्थे (ठामि के०) कायाने एक ठामे करुं छुं, (काउस्सग्गं के०) कायाने हलाववी नही ते रूप काउस्सग्गप्रत्ये करुं छुं हवे इहां काया हलाववी नहीं. एवी प्रतिज्ञा करी छे माटे शरीरनुं कांइ पण हालवुं थवाथी प्रतिज्ञानो भंग थाय तेथी काउस्सग्गमां वार आगार मोकला राख्या छे (अन्नत्थ के०) उच्छ्वासादिक जे आगारो कहेशे, ते आगारो वर्जीने बीजे स्थानके कायाने हलाववानो नियम करुं छुं तेनां नाम कहे छे (उ-ससिएण के०) उंचो श्वास लेवाथी, (निससिएण के०) नीचो श्वास मूकवाथी (खासिएण के०) खांसी आवे एटले खोखलो आव्या थकी, (छीएण के०) छींक आव्या थकी, (जंभाइएण के०) जाभली ते बगासु लेवाथकी. (उड्डुएण के०) ओडकार आव्यां-

थकां, (वायनिसग्गेणं के०) वायु निकलतां थकां, (भमलिए के०) भ्रमरी चक्री आववाथी, (पित्तमुच्छाए के०) पित्तरा कोपसूं मूर्च्छा आया थकां, (सुहुमेहिं के०) सूक्ष्म थोडोक, (अंगसंचालेहिं के०) शरीर हलाववाथी, (सुहुमेहिं के०) थोडो, (खेलसंचालेहिं के०) श्लेष्म तथा मूखना थुंकनुं चालववुं करवाथकी, कफ गलवाथकी (सुहूमेहिं के०) सूक्ष्म थोडी, (दिट्ठिसंचालेहिं के०) चक्षुर्दृष्टिनो संचार थवाथी एटले चक्षु हलाववा थकी, (एवमाइएहिं के०) ए आदि करीने इहां आदि पदे बीजा पण (आगारेहिं के०) आगार लेवां पडे, ते लेतां थकां महारो काउस्सग्ग (अभग्गो के०) भांगे नही, खंडित हुवे नही, (अविराहिओ के०) अविराधित अखंडित हानी पहोंचे नही एवो (हुज्ज के०) होजो, (मे के०) महारो, (काउस्सग्गो के०) कायास्थिर राखवी ते रूप व्यापार ते (जाव के०) ज्यांसुधि, (अरिहंताणं भगवंताणं के०) श्रीअरिहंत भगवंतने, (नमुक्कारेणं के०) नमस्कार सहित (नपारेमि के०)पारूं नही, ध्यान

संपूर्ण न करू, (ताव के०) त्यां सुधी (कायं के०) महारी कायाने, शरीरने, (ठाणेणं के०) एक ठिकाणे स्थिरपणे राखीने, (मोणेणं के०) अबोलो रहीने, (झाणेणं के०) एकाग्र जे ध्यान तेणे करीने, (अप्पाण के०) महारी जे काया ते प्रत्ये [वोसिरामि के०] हुं वोसिरावुछु तजुं छु आ पाटी कहीने काउस्सग्ग करवो. इरियावहीनी पाटी मनमांहे कहेवी. पछी नवकार कहीने काउस्सग्ग पारियें ॥ ४ ॥

॥ अथ लोगस्सकी पाटी लिख्यते ॥

॥ लोगस्स उज्जोयगरे, धम्म तित्थयरे जिणे ॥ अरिहंत कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभ मजियं च वंदे संभव मभिणंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपास जिण, च चंदप्पह वंदे ॥ २ ॥ सुविहि च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥ विमल मणंतं च जिणं, धम्मं संति च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिट्टनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय रयमला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि

जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा॥ सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ इति ॥ ५ ॥

अर्थः—(लोगस्स के०) पंचास्तिकायात्मक लोकने (उज्जोयगरे के०) आद्योतना करणहार, (धम्मतित्थयरे के०) धर्मरूप तीर्थना करनार एवा, (जिणे के०) राग द्वेषना जितनार जे (अरिहंत के०) श्री अरिहंत तेनुं, (कित्तइस्सं के०) कीर्त्तन करीश तेमां (चउवीसंपि के०) ऋषभादिक चोवीस परमेश्वरनुं तो नामोच्चारण पूर्वक कीर्त्तन करीश. अने अपिशब्दथकी अन्य जिनोनुं पण कीर्त्तन करीश ते केहेवा छे ? तो के (केवली के०) केवलज्ञानी छे. ते तीर्थंकरनुं हुं कीर्त्तन करीश॥१॥ हवे ते चोवीश जिननां नाम कहे छे. (उसभ के०) श्री रूषभदेवस्वामी प्रत्ये (च के०) वली (मजियं के०) श्रीअजितनाथप्रत्ये, (वंदे के०) वांदुं छुं, (संभव के०) श्रीसंभवनाथ प्रत्ये, (मभिणंदणं

के०) श्रीअभिनदननाथ प्रत्ये (च के०) वली (सुमइं के०) श्रीसुमतिनाथने (च के०) वली (पउमप्पहं के०) श्री पद्मप्रभस्वामी प्रत्ये, (सुपासं के०) श्री सुपार्श्वनाथजीने (जिणं के०) रागद्वेपना जितनार, (च के०) वली (चदप्पहं के०) श्रीचंद्रप्रभजीने, (वदे के०) वांदुं छुं ॥२॥ (सुविहि के०) श्रीसुविधिनाथजीने (च के०) वली एमनु बीजुं नाम (पुप्फदंतं के०) श्री पुष्पदंतजी छे, ते प्रत्ये, (सीयल के०) श्रीशीतलनाथजीने, (सिज्जंस के०) श्रीश्रेयांसनाथजीने, (वासुपुज्जं के०) श्रीवासुपुज्यस्वामि प्रत्ये, (च के०) वली, (विमल के०) श्रीविमलनाथजीने, (मणतं के०) श्रीअनंतनाथजीने, (च के० वली, (जिण के०) राग द्वेपना जीतनार, एहवा (धम्मं के०) श्रीधर्मनाथजीने, (संति के०) श्रीशांतिनाथजीने (च के) वली, (वदामि के) वांदुछु ॥३॥ (कथुं के) श्रीकुंथुनाथजीने, (अरं के०) श्रीअरनाथजीने, (च के०) वली, (मल्लिं के०) श्रीमल्लिनाथजीने, (वंदे के०) वांदुं छु, (मुणिसुव्वयं के०) श्री मुनिसुव्रतस्वामी प्रत्ये, (नमिजिण के०)

श्रीनमिजिनने, (च के०) वली, (वंदामि के०) वांदुं छुं. (रिट्ठनेमिं के०) श्री अरिष्टनेमिजी प्रत्ये, (पासं के०) श्री पार्श्वनाथस्वामी प्रत्ये, (तह के०) तथा, (वद्धमाणं के०) श्रीवर्द्धमानस्वामी प्रत्ये, हुं वांदुं छुं, चकार पादपूर्णार्थ छे ॥ ४ ॥ (एवं के०) ए प्रकारे (मए के०) महारे जीवे जे, (अभिथुआ के०) नाम पूर्वक स्तव्या, ते चोवीशे परमेश्वर केहवा छे ? तो के (विहुय के०) टाल्या छे, (रयमला के०) कर्मरूपी रज तथा मल जेणे एवा छे. वली (पहीण के०) अतिशये करीने क्षय कर्या छे, (जरमरणा के०) जरा तथा मरण जेणे एवा जे (चउवीसंपि के०) चोवीश तीर्थंकर तथा अपि शब्दथकी बीजा पण तीर्थंकर पूर्ववत् लेवा. ते सर्व (जिणवरा के०) जिनवर, (तित्थयरा के०) तीर्थंकर ते, (मे के०) महारा उपर (पसीयंतु के०) प्रसन्न हो ॥ ५ ॥ (कित्तिय के०) कीर्त्तित्त छे (वंदिय के०) वंदित छे (महिया के०) पूज्य छे एहवा, (जे के०) जे तीर्थंकर, (ए के०) ए प्रत्यक्ष

(लोगस्स के०) लोकने विषे (उत्तमा के०) उत्तम एहवा, (सिद्धा के०) सिद्ध थया एटले सिद्धि पाम्या निष्ठितार्थ थया एवा हे सिद्धभगवंत तमे मुझने, (आरुग्ग के०) रोग रहित निर्मल एवो सिद्धपणु जाणवुं ते सिद्धपणु तो (बोहिलाभं के०) बोधबीज जे श्रीजिनधर्मनी प्राप्ति थाय तेवारे प्राप्त थाय छे माटे श्रीजिनधर्मनी प्राप्तिनो लाभ थवाने अर्थे (उत्तमं के०) उत्कृष्ट ते उंची एहवी (समाहिवर के०) प्रधान समाधि ते प्रत्ये (दितु के०) दिओ आपो ॥ ६ ॥ (चंदेसु के०) चंद्रमाथी (निम्मलयरा के०) अत्यंत निर्मल (आइच्चेसु के०) सूर्य समुदायथकी पण, (अहियं के०) अधिक, (पयासयरा के०) प्रकाशना करणहार (सागरवर के०) प्रधान, छेल्लो स्वयंभुरमण नामा समुद्र तेनी पेरे, (गंभीरा के०) गुणे करी गंभीर, एहवा जे (सिद्धा के०) सिद्धो ते, (सिद्धि के०) मुक्ति जे तेने, (मम के०) मुझ प्रत्ये, (दिसंतु के०) दिओ आपो ॥७॥ इति लोगस्स पाठ समाप्त ॥ ५ ॥

॥ अथ सामायिक लेवानी पाटी लिख्यते ॥

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं, पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥ इति ॥ ६ ॥

अर्थः–(भंते के०) हे पूज्य ! (सामाइयं के०) समता परिणामरूप सामायिकने, (करेमि के०) हुं करूं छुं (सावज्जं के०) अवद्य जे पाप, तेणे करी सहित एवा (जोगं के०) मन वचन कायाना योग, ते प्रत्ये (पच्चक्खामि के०) हुं निषेध करूं छुं, (जाव के०) ज्यां सुधी, (नियमं के०) सामायिक व्रतना नियमने (पज्जुवासामि के०) हुं सेवुं, रहुं, त्यां सुधी, (दुविहं के०) दोयकरणसुं एटले करणो, करावणो ए दोयप्रकारका जो सावद्य व्यापार ते प्रत्ये (मणसा के०) मने करी, (वयसा के०) वचनें करी, (कायसा के०) कायायें करी ए, (तिविहेणं के०) तीन जोगसुं (नकरेमि के०) हुं करूं

नहि, (नकारवेमि के०) हुं दुजा पासे न करावुं, (तस्स के०) ते सावद्यव्यापाररूप पापने, (भते के०) हे भगवंत ! आपनी समीप हुं (पडिक्कमामि के०) पडिक्कमुं छुं, (निदामि के०) हु आत्मानी साखे निदु छुं, (गरिहामि के०) गुरुनी साखे हु गर्हु छुं, एटले विशेपे निदु छुं, (अप्पाणं के०) माहरा आत्माने, ते दुष्ट क्रियाथकी (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छुं, एटले विशेपे करीने तजुं छु ॥१॥ ६ ॥

॥ अथ श्री नमुत्थुणंनी पाटी लिख्यते ॥

नमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं. पुरिसवरपुंडरीयाणं, पुरिसवर गंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं. लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोयगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं. जीवदयाणं, वोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं. धम्मवरचाउरतचक्कवट्टीणं दिवोत्ताणं, सरणगइपइट्ठाणं, अप्पडिहय वरनाणं दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं, जाव-

याणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहियाणं, मुत्ताणं, मोयगाणं, सव्वन्नूणं, सव्वदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मक्खाय मव्वाबाह मपुणरावित्ति, सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जियभयाणं ॥१॥ इति ॥ ७ ॥

अर्थः–(नमुत्थुणं के०) इहां नमोस्तु एटले नमस्कार हो अने णंकार जे छे, ते वाक्यालंकारने माटे छे, कोने नमस्कारहो, तो के (अरिंहताणं के०) श्री अरिहंत देवने, (भगवंताणं के०) भगवंतने, (आइगराणं के०) धर्मनी आदिना करनारने (तित्थयराणं के०) तीर्थना स्थापनार एटले साधु, साधवी श्रावक अने श्राविका, ए चार जातिना तीर्थना स्थापनारने, (सयंसंबुद्धाणं के०) पोतानी मेले सम्यक्प्रकारे तत्त्वना जाण थया (पुरिसुत्तमाणं के०) पुरुषमांहे उत्तम (पुरिससीहाणं के०) पुरुषमांहे सिंहसमान, (पुरिसवरपुंडरीयाणं के०) पुरुषमांहे (वर के०) प्रधान, (गंधहत्थीणं के०) गंधहस्ती समान छे, (लोगुत्तमाणं के०) लोकमांहे उत्तम छे,

(लोगनाहाणं के०) लोकना नाथ छे, (लोगहियाणं के०) लोकना हितकारी छे, (लोगपईवाण के०) लोकने विषे प्रदीप समान छे, (लोगपज्जोयगराणं के०) लोकमांहे प्रकर्षे करी उद्योतना करनारछे (अभयदयाणं के०) अभयदाननादेनार छे, (चक्खुदयाण के०) ज्ञानरूप चक्षुना देनार छे, (मग्गदयाणं के०) मोक्षमार्गना देनार छे, (सरणदयाण के०) शरणना देनार छे, (जीवदयाणं के०) संयमरूप जीवतरना देनार छे, (बोहिदयाण के०) समकित रूप बोधना देनार छे, (धम्मदयाणं के०) धर्मना देनार छे, (धम्मदेम्मियाणं के०) धर्मना उपदेशना देणार छे, (धम्मनायगाणं के०) धर्मना नायक छे, (धम्मसारहीणं के०) धर्मरूप रथना सारथि छे, (धम्म के०) धर्मने विषे. (वर के०) प्रधान (चाउरंत के०) चार गतिनो अंत करवा माटे, (चक्कवट्टीणं के०) चक्रवर्त्ती समान छे, (दिवोत्ताण के०) संसारसमुद्रमा द्वीप समान, दुःखना निवारण करनारछे, (सरणगइपइट्टाणं के०) सरणगतिना स्थानक भूत शरणागत वत्सल छे (अप्प-

डिहय के०) नही हणाय एवुं, (वर के०) प्रधान, (नाण के०) ज्ञान (दंसण के०) दर्शन तेने (ध-राणं के०) धरनार, (विअट्ट के०) गयुं छे, (छउ-माणं के०) छद्मस्थपणुं एटले कर्मरूपी आवरण जेने एवा, (जिणाणं के०) रागद्वेषने जीत्या छे जेणे, (जावयाणं के०) वीजाने राग द्वेषथकी मूकावे छे (तिन्नाणं के०) संसाररूपी समुद्र पोते तर्या छे अने (तारयाणं के०) वीजाने संसारसमुद्रथी तार-नार छे (वुद्धाणं के०) पोते तत्वज्ञानने समज्या छे (वोहियाणं के०) वीजाने तत्वज्ञान समजावनार, (मुत्ताणं के०) पोते चातुर्गतिक विपाकविचित्र कर्म थकी मूकाणा छे, तथा (मोयगाणं के०) वीजा भव्य प्राणीने कर्मथकी मूकावनार छे, (सव्वन्नूणं के०) सर्वज्ञ छे, (सव्वदरिसिणं के०) सर्व पदार्थना देख-नार छे, (सिव के०) सर्व उपद्रव रहित एवा (म-यल के०) अचल (मरुय के०) अरुज रोग रहित (मणंत के०) अनंतज्ञानादि चतुष्टये करी युक्त छे माटे अनंत छे (मक्खय के०) सर्वकाल निश्चल

(मव्वाबाह के०) आव्यावाध एटले बाधा पीडा रहित (मपुणरावित्ति के०) जे गतिथकी फरी संसारने विषे अवतार लेवो नथी एहवी (सिद्धिगइ के०) सिद्धिगति एवुं छे (नामधेयं के०) नाम जेनुं एवा (ठाणं के०) स्थानकने (संपत्ताणं के०) पाम्या छे. अर्थात् मोक्ष नगर प्रत्ये पाम्या छे, एहवा अरिहंत भणी (नमो के०) महारो नमस्कार हो ते जिन भगवान् केहवा छे ? तो के (जिणाण के०) कर्मरूपी शत्रुने जीतनार, तथा (जियभयाण के०) इहलोकादिक सात भयप्रत्ये जीतनार छे ॥ ७ ॥

॥ अथ सामायिक पारवानी पाटी लिख्यते ॥

नवमा सामायिक व्रतना, पंच अइयारा, जाणयव्वा, न समाचरियव्वा, तं जहा ते आलोउं, मण दुप्पणिहाणे वय दुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे, सामाइयस्स अकरणयाए, मामाइयस्स अणवुट्टियस्स करणयाइ, तस्स मिच्छामि दुक्कडं मामायिकने विषे दस मनना दस वचनना, बार कायाना, ए बत्रीश दोष मांहेलो कोई दोष लाग्यो होय तो मिच्छामि दुक्कडं

आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मिहुणसंज्ञा, परिग्गहसंज्ञा, ए चार संज्ञामांहेली कोई संज्ञा करी होय तो मिच्छामि दुक्कडं. स्त्रीकथा, राजकथा, भक्तकथा, देशकथा, ए मांहेली कोई कथा करी होय तो मिच्छामि दुक्कडं. सामायिक समकाएणं, फासियं, पालियं, सोहियं, तिरियं, कित्तियं, आराहियं, आणाए अणुपालियं, न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ ८ ॥

अर्थः—नवमा सामायिक व्रतना (पंच अइयारा के०) पांच अतिचार (जाणियव्वा के०) जाणवा योग्य, (नसमाचरियव्वा के०) समाचरवा योग्य नहीं. (तंजहा के०) ते हवे कहे छे तेने (आलोउं के०) आलोचुं छुं, (मणदुप्पणिहाणे के०) मन माठुं वर्त्ताव्युं होय, (वयदुप्पणिहाणे के०) वचन माठुं वर्त्ताव्युं होय; (कायदुप्पणिहाणे के०) काया माठी प्रवर्त्तावी होय, (सामाइयस्स के०) सामायिकने (अकरणयाए के०) कीधुं के नही कीधुं तेनी बराबर खबर न रही होय, (सामाइयस्स के०) सामायिकने (अणवुठियस्सकरणयाए के०) पूरी थया विना पारी

होय, तो (तस्स के०) तेनुं (दुक्कडं के०) पाप ते (मिच्छामि के०) मारुं निष्फल थाओ (आहार-संज्ञा के०) खावानी इच्छा थइ होय, (भयसंज्ञा के०) भयनी संज्ञा थइ होय (मिहुणसंज्ञा के०) मैथुननी इच्छा करी होय, (परिग्गहसंज्ञा के०) धन द्रव्यनी इच्छा करी होय. ए चार संज्ञा मांहेली कोइ संज्ञा करी होय तो ते दुष्कृत पाप (मिच्छामि के०) मारु निष्फल थाओ (सामायिकसमकाएणं के०) सामायिक कायाये बराबर रीते (फासियं के०) स्पर्श करयुं फरस्युं, अंगीकार करयुं (पालिय के०) तेवुंज पाल्यु, (सोहियं के०) शोध्यु शुद्ध करयुं (तिरियं के०) पार उतारियु, (कित्तियं के०) कीर्त्युं (आरा-हियं के०) आराध्युं (आणाए के०) वीतराग देवनी आज्ञाये करी (अणुपालिय के०) पालेलु, (नभवइ के०) न होय (तस्स मिच्छामिदुक्कड के०) तेनु दुष्कृत जे मने लागेलुं होय ते मारु मिथ्या हो ॥ इति सामायिक पारवानी पाटीनो अर्थ संपूर्ण ॥ ८ ॥

॥ अथ सामायिकविधि प्रारंभः ॥

॥ प्रथम श्री सीमंधर स्वामीजीनी आज्ञा लेइने एक नवकार गुणीजे " इरियावहिनी " पाटी भणवी; पछी तस्स उत्तरिनी पाटी भणीने काउस्सग्ग करवो, काउस्सग्गमांहि " इरियावहियाएथी " मांडीने " जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं " सुधीनो पाठ मनमां बोलीने एक नवकार मनमां कहीने काउस्सग्ग पारवो. पछी प्रगट " लोगस्सकी " पाटी कहीने सामायिकनी आज्ञा लईने " करेमि भंतेनी " पाटो " जावनियमं " सुधी कहीने आगल मुहूर्त्त (घालणो हुवे तिके) घालणो, पछी "पज्जुवासामि" थकी " अप्पाणं वोसिरामि " सुधी पाठ कहीने सामायिक पच्चक्खवो. पछी डाबो गोडो उभो करीने दोयवार " नमुत्थुणं " नी पाटी केहवी. दुजा नमुत्थुणंने छेहडे " ठाणं संपाविओ कामे नमो जिणाणं " एम केहवुं. अने सामायिक पारती वेला " इरियावही, तस्स उत्तरी "नी पाटी भणीने काउस्सग्ग करवो, पछी काउस्सग्गमांहे इरियावहिनी पाटी कहिने एक नवकार

गणीने काउस्सग्ग पारवो. पछी " लोगस्स " भणी " नमुत्थुणं " दोय वार उपर लिख्या मुजब कहीने नवमा सामायिकव्रतनी पाटी " अणुपालियं न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कडं " सुधी कहीने तीन नवकार गणीने सामायिक पारवु

॥ इति श्री सामायिक अर्थ विधि. संपूर्ण. ॥

॥ अथ श्री प्रतिक्रमण अर्थ विधिसहित प्रारभ ॥

प्रथम " चोविस स्तव " कीजे उभो रहिने "तिक्खुत्तो" गुणीजे देव, गुरु तथा वडा साधर्मीभाइनी पडिक्कमण ठायवानी आज्ञा लेइने " इच्छामिण भंते " नी पाटी कहीजे ते लखीये छैये

॥ अथ इच्छामिणंभतेनी पाटी प्रारभ. ॥

इच्छामिण भते, तुभ्मेहि अभणु नायसमाणे, देवसिपडिक्कमणुं ठाएमि, देवसि नाण, दंसण, चारित्त, तप अतिचार चितवणार्थ करेमि काउस्सगं॥१॥ इति॥

अर्थः—(इच्छामिण के०) हुं इच्छुछु, (भंते के०) हे भगवन्! (तुभ्मेहि के०) तुमारी (अभणुनायसमाणे के०) आज्ञा मागीने, (देवसि के०) दिवस

संवंधी (पडिक्कमणुं के०) पापनुं निवारण करवुं ते प्रत्ये, (ठाएमि के०) ठाउंछुं (देवसि के०) दिवस संवंधि, (नाण के०) ज्ञान, (दंसण के०) दर्शन समकित, (चारित्त के०) कर्मरूपि शत्रुको नाशकारणार, ते रूप चारित्र तथा (तप के०) तपस्या ते संबंधि जे (अतिचार के०) व्रत भांगवाने तैयार थवुं, ते रूप अतिचार लाग्यो होवे तेनी (चिंतवणार्थ के०) चिंतवणा करवाने अर्थें, (काउस्सग्गं के०) कायोत्सर्ग प्रत्ये (करेमि के०) हुं करुं छुं ॥ १ ॥

पछी " नवकार" कहीजे. "तिक्खुत्तारा" पाठसूं पहिला आवश्यकनी आज्ञा मागीने " करेमि भंते," की पाटी कहीजे. पछी " इच्छामि ठामि " नी पाटी भणीजे ते लखीये छैये.

अथ इच्छामि ठामिनी पाटी प्रारंभ.

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ, अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुविचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छियव्वो, असावगपाउग्गो,

नाणे तह दंसणे, चरित्ता चरित्ते, सुए सामाइए, तिन्हं गुत्तीणं, चउन्हं कसायाणं, पंचन्हमणुव्वयाणं, तिन्हं गुणव्वयाण, चउन्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावग धम्मस्स,, जं खंडियं, जं विराहियं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

अर्थ.–(ठामि के०) एक ठेकाणे रहीने, जे (काउस्सग्ग के०) कायानी स्थिरता करवी तेने (इच्छामि के०) हु इच्छुं छुं (जो के०) जे, (मे के०) महारा जीवे, (देवसिओ के०) दिवस संबंधि, (अइयारो के०) अतिचार, (कओ के०) कीधो होय, (काइओ के०) काया सवधी, (वाइओ के०) वचन सवधि, (माणसिओ के०) मन संबधि, (उस्सुत्तो के०) सूत्र विरुद्ध प्ररूपणा कीधा थकी उपनो जे (उमग्गो के०) उन्मार्ग एटले जिनमार्ग उल्लंघीने दुजो मार्ग ते थकी नीपनो जे (अकप्पो के०) अकल्पनीय एटले चरण करण व्यापारथकी रहितपणु तेनाथी उत्पन्न थया जे (अकरणिज्जो के०) करवायोग्य नही एवा कार्य तेने करवे करी ए सर्व अतिचारनु

स्वरूप कह्युं. हवे मनःसंबंधि अतिचारनुं स्वरुप कहे छे. (दुज्झाओ के०) दुर्ध्यान ते आर्त्त, रौद्र ध्यान ध्यावुं ते माटेज (दुव्विचिंतिओ के०) दुष्ट अशुभ कार्यनुं मनमां चिंतववुं ते माटेज(अणायारो के०) अनाचार कहीये. एटले जे थकी व्रतादिकनो सर्वथा भंग थाय जे माटे अनाचार आचरवा योग्य नही ते माटेज (अणिच्छियव्वो के०) इच्छवा योग्य नही, ते माटेज (असावगपाउग्गो के०) श्रावकने उचित नथी, हवे ए सर्व अतिचार शेने विषे लगाड्या होय ? ते कहे छे. (नाणे के०) ज्ञानने विषे, (तह के०) तेमज, (दंसणे के०) समकित दर्शनने विषे, (चरित्ताचरित्ते के०) कांइएक चारित्रने कांइएक नहि चारित्र एहवुं जे श्रावकनुं चारित्र तेने विषे, (सुए के०) सूत्र सिद्धांतने विषे, (सामाइए के०) समतारूप सामायिकने विषे, (तिन्हं गुत्तीणं के०) मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति, ए तीन गुप्ति न पालवे करी (चउन्हं कसायाणं के०) क्रोध, मान, माया ने लोभ, ए चार कषायने करवे करी (पंचन्हमणुव्वयाणं के०) (१) प्राणा-

तिपात विरमण, (२) मृपावाद विरमण, (३) अदत्तादान विरमण, (४) मैथुन विरमण, (५) परिग्रह विरमण, ए पांच प्रकारना अणुव्रतने विपे, (तिन्हं गुणव्वयाणं के०) छट्टो, सातमो ने आठमो, ए तीन प्रकारका गुणव्रत मांहेथी, (चउन्ह सिक्खावयाणके०) चार प्रकारका शिक्षाव्रत, नवमो, दसमो, इग्यारमो, ने वारमो ए मांहेथी घणु थु कहिये परतु (बारसविहस्स के०) ए वारे प्रकारका व्रतरूप, (सावगधम्मस्स के०) श्रावक सवधि जे धर्म तिणमांहेसू महारा जीवे, (जखडियं के०) जे देशथकी भग कीधु. (जविराहियं के०) जे सर्वथकी भंग कीधु (तस्स के०) तेहनुं (दुक्कडं के०) पाप (मिच्छामि के०) महारु निष्फल थाओ ॥ २ ॥

पछी " तस्स उत्तरी नी पाटी कहीने उभो रहीने काउस्सग्ग ठाईजे काउस्सग्गमांहे, १४ ग्यानका, ५ समकितका, ६० वारा व्रतका, १५ कर्मादानका, ५ सलेहणाका, एव " ९९ अतिचार ' नी चिंतवणा कीजे. ते अतिचार आ प्रमाणे.—तपस्या,

अशक्तपणा वगेरे कारणसूं उभो रहीने काउस्सग्ग करणकी शक्ति न होय तो नीचे वेसीने काउस्सग्ग ठाईजे.

१४ ग्यानका आगम तिविहे पन्नत्ते तं जहा, सुत्तागमे, अत्थागमे तदुभयागमे, एहवा श्री ज्ञानने विषे जे कोई अतिचार लाग्या होय, ते आलोउं, जं वाइद्ध वच्चामेलियं, हीणक्खरं, अच्चक्खरं, पयहीणं, विनयहीणं, जोगहीणं, घोसहीणं, सुहुदिन्नं, दुट्ठुपडिच्छियं, अकाले कओ सज्झाओ, काले न कओ सज्झाओ, असज्झाए सज्झायं, सज्झाइए न सज्झायं, भणतां, गुणतां, चिंतवतां, अने विचारतां, ग्यान अने ग्यानवंतोनी आशातना कीनी होय ॥

(५ समकितना अतिचार) दंसण समकित ॥ परमत्थ संथवो वा, सुदिट्ठ परमत्थ सेवणावावि ॥ वावन कुदंसण व, ज्जणा समत्त सद्दहणा ॥ १ ॥ एहवा समकितना समणोवासयाणं सम्मत्तस्स, पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं, संका, कंखा, वितिगिच्छा, परपाखंडी

परसंसा, परपाखंडी सथुवो ॥

(६० व्रतांका अतिचार) पहिला थूल प्राणातिपात विरमण व्रतना पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउ वंधे वहे छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए ॥

बीजा थूल मृपावादविरमणव्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं, सहस्साभक्खाणे, रहस्साभक्खाणे, सदारमंतभेए, मोसोवएसे, कूडलेहकरणे ॥

त्रीजा थूलअदत्तादान विरमणव्रतना पच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं, तेनाहडे, तक्करप्पओगे, विरुद्धरज्जाइक्कमे, कूडतोले, कूडमाणे, तप्पडिरुवगववहारे ॥

चोथा थूल मेहुण विरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरिव्वा तं जहा ते आलोउं, इत्तरपरिग्गाहियागमणे, अपरिग्गाहियागमणे, अनंग कीडा, परविवाहकरणे, कामभोगेसु तिव्वाभिलासे ॥

पांचमा थूल परिग्रह परिमाण विरमण व्रतना

प्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सज्जासंथारए, अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय सज्जासंथारए, अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय उच्चारपासवणभूमि, अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय उच्चार-पासवणभूमि, पोसहस्स, सम्मं अणणुपालणया.

वारमा अतिथिसंविभाग व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं, स-चित्त निक्खेवणिया, सचित्त पिहणिया, कालाइक्कम्मे, परोवएसे मच्छरियाए ॥

५ संलेहणारा ॥ अपच्छिम मरणांतिक संलेहणा झुसणा आराहणाना पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरिव्वा तं जहा ते आलोउं, इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे, जीवियासंसप्पओगे, मरणासंस-प्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे ॥

१८ पापस्थानक १ प्राणातिपात, २ मृषावाद, ३ अदत्तादान, ४ मैथुन, ५ परिग्रह, ६ क्रोध, ७ मान, ८ माया, ९ लोभ, १० राग, ११ द्वेष, १२ कलह, १३ अभ्याख्यान, १४ पैशुन्य, १५ परपरिवाद, १६ रति अरति, १७ मायामोसो, १८ मिथ्यात्वदंसणशल्य. एवं

१८ पापस्थानकमांहेलुं जे कोइ पापस्थानक माहारे जीवे, मने, वचने, कायाये करी सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवता प्रत्ये भलुं जाण्युं होय

एम "९९ अतिचार, १८ पापस्थानक" काउस्सग्गमां चितवी ॥ पछी "इच्छामिठामि'नी पाटी 'जं विराहिय' सुधी चितवी 'नवकार' भणीने काउस्सग्ग पारीये ॥ इति प्रथम 'समायिक आवश्यक' संपूर्ण

विधि.—पछी 'तिक्खुत्ता'नो पाठ कही दूजा आवश्यकनी आज्ञा लइने प्रगट एक 'लोगस्स'नी पाटी कहीजे ॥ इति दूजुं 'चउविसत्थो' आवश्यक संपूर्ण.

पछी तिक्खुत्तो गुणी त्रीजा आवश्यकनी आज्ञा लेइने दोय वार "इच्छामिखमासमणा"नी पाटी कहीजे पाटीमांहे प्रथम जिहा 'निसीहियाए' शब्द आवे तिहां उभा गोडा करी, हाथ जोडीने वेसीजे तथा छ आवर्त्त करिये ते आ प्रमाणे—प्रथम "अहोकाय काय" ए शब्द उचारतां तीन आवर्त्त हुवे

छे, ते कहे छेः—दोनुं हाथ लांवा करी हाथनी दश आंगुली भूमी उपर लगावतां मुखसुं " अ " अक्षर कहेवो. पछी तेमज दश आंगुली आपणा मस्तकने लगावतां " हो " अक्षर कहेवो, ए दोनुं अक्षर कहेतां १ पहेलो आवर्त्त हुवो, इणहीज रीतिसूं " का " ने "यं" ए वे अक्षर उच्चारतां २ दुजो आवर्त्त हुवो. तथा "का" ने "य" ए वे अक्षर उच्चारतां ३ त्रीजो आवर्त्त हुवो. पछी " जत्ता " भे, जवणि ज्जं, च, भे ए शव्द उच्चारतां ३ आवर्त्त हुवे छे, ते कहे छेः— प्रथम "ज" अक्षर मंदस्वरसूं " त्ता " अक्षर मध्यमस्वरसूं, ने "भे" अक्षर उंचा स्वरसूं उपरली रीतिसूं, मस्तके हाथ लगावतां कहेवो. एम तीन अक्षर कहेतां प्रथम आवर्त्त, तथा (ज) (व) (णि) ए तीन अक्षर त्रिविध स्वरसूं उपर मुजव उच्चारतां दुजो आवर्त्त. तथा (ज्जं) (च) (भे) ए पण तीन अक्षर पूर्वली रीते कहेतां त्रीजो आवर्त्त होय, एवं छ आवर्त्त एक पाटी मांहे थाय. एवी वे पाटी कहीजे तेवारे वार आवर्त्त थाय. तथा " तित्तीसन्नयराए "

ए पाठ आवे तिहां पाछा उभा रहीजे एव ए दोय वार "खमासमणा" री पाटी सपूर्ण कहीजे, ते पाटी लखीये छेये.

अथ खमासमणारी पाटी प्रारंभ.

इच्छामि, खमासमणो, वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहियाए, अणुजाणह, मे, मिउग्गहं, निसीही, अहो, कायं, काय संफासं, खमणिज्जो, भे, किलामो, अप्प किलंताणं, बहु सुभेण, भे. दिवसो. वइक्कंतो, ज त्ता, भे, ज व णि ज्जं. च, भे, खामेमि, खमासमणो, देवसियं, वइक्कमं, आवसियाए, पडिकमामि, खमासमणाण. देवसियाए, आसायणाए, तित्तोसन्नयराए. जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए. कोहाए. माणाए मायाए. लोहाए, सव्वकालियाए, सव्वमिच्छोवयाराए. सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए. जो. मे. देवसिओ अइयारो कओ. तस्स खमासमणो पडिक्कमामि. निंदामि. गरिहामि. अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ३ ॥

अर्थ —(खमासमणो के०) हे क्षमाश्रमण !

(जावणिज्जाए के०) जेणे करी कालक्षेप करीये तेवी शक्तिये करी सहित एवी (निसीहिआए के०) प्राणातिपातादिकथी निवृत्तिरूप प्रयोजन छे जेमां तेने नैषेधिकी तनु एटले शरीर कहीये तेवा शरीरे करी तुमने (वंदिउं के०) वांदवाने (इच्छामि के०) हुं इछुं छुं. वांछुं छुं. माटे (मिउग्गहं के०) मित अवग्रह एटले प्रमाण करेला साडा त्रण हाथना अवग्रह मांहे प्रवेश करवानी (मे के०) मुझने (अणुजाणह के०) अनुज्ञा आपो एटले आज्ञा आपो.

पछी शिष्य (निसीहि के०) एक गुरुवंदन विना अन्य क्रिया रूप व्यापारने निषेध्यो छे जेणे एवो छतो मर्यादा करेला अवग्रहमांहे पेसीने गुरुप्रत्ये कहे के तुमारा (अहोकायं के०) अधःप्रदेशनो छेहलो भाग जे चरण ते प्रत्ये (कायसंफासं के०) महारी काया संबंधि हाथ अने मस्तके करीने स्पर्शुं? एवी आज्ञा पामीने गुरुना चरणने स्पर्शी पछी उंचो थइ मस्तके बे हाथ चडावी 'खमणिज्जो भे' इत्यादि पाठ कहे. तेनो अर्थ लखीये छैये.

हे पूज्य ! तुमारा चरण स्पर्शतां जे कांइ (मे के०) महारे जीवे तुमने (किलामो के०) ग्लानि एटले पीडा उपजावी होय खेद उपजाव्यो होय ते (भे के०) तमोये (खमणिज्जो के०) खमवा योग्य छे. एटलु कहीने वली पण शिष्य, दिवससवंधि क्षेम कुशलनुं स्वरूप पूज्यने पूछे, ते आवी रीतेः—

(वहुसुभेण के०) वहु शुभे करीने क्षेमकुशल समाधिभावे करीने (भे के०) तमारो (दिवसो के०) दिवस (वइक्कंतो के०) व्यतिक्रांत थयो एटले वीत्यो ? तमे कहेवा छो ? तो के (अप्पकिलंताणं के०) अल्पकिलामणावाला छो एम शरीरसंवंधि सुखशाता पूछीने वली तप नियमादिक सवंधी वार्त्ता पूछे, ते आवी रीते —

हे पूज्य ! (जत्ता के०) तप संयम रूप यात्रा ते (भे के०) तमारे आव्यावाध पणे वर्त्ते छे ? (जवणिज्ज के०) इद्रियोये करी पीडित नही एवु निरावाध शरीर (च के०) वली (भे के०) तमारु छे?

(खमासमणो के०) हे क्षमावत साधु ! (दे-

वसियं के०) दिवस संबंधि, (वइक्कमे के०) व्यतिक्रम एटले अवश्य करणीय विराधनारूप माहारो अपराध, ते प्रत्ये (खामेमि के०) हुं खमावुं छुं. हवे वली आ प्रमाणे कहे. (आवासियाए के०) अवश्य करणी करतां जे अतिचार लाग्यो होय, ते थकी (पडिक्कमामि के०) हुं निवर्तुंछुं, (खमासमणाणं के०) क्षमावंत साधुनी, (देवसियाए के०) दिवसने विषे थइ एवी जे, (आसायणाए के०) आशातना, खंडना, ते आशातनाये करीने, ते केवी आशातनाये करीने? तो के (तित्तीसन्नयराए के०) तेत्रीश आशातना मांहेली अनेरी कोइ एक पण आशातनाये करीने, (जं किंचि मिच्छाए के०) जे कांइ कूडुं आलंबन लइने मिथ्याभाव वर्त्ताव्यो होय (मणदुक्कडाए के०) मन संबंधी दुष्कृत जे पाप तेणे करी, (वयदुक्कडाए के०) वचनसंबंधी दुष्कृत जे पाप तेणे करी, (कायदुक्कडाए के०) काया संबंधि दुष्कृत जे पाप तेणे करी, (कोहाए के०) क्रोध भाव रूप आशातनाये करी, (माणाए के०) मानरूप

आशातनाये करी, (मायाए के०) कपटरूप आशातनाये करी, (लोहाए के०) लोभरूप आशातनाये करी, (सव्वकालियाए के०) अतीत, अनागत अने वर्त्तमान एवं सर्व कालने विषे, (सव्वमिच्छोवयाराए के०) सर्व, कूडकपट क्रियारूप जे मिथ्या उपचार ते रूप आशातनाये करीने, (सव्वधम्माइक्कमणाए के०) सर्व धर्मनी जे करणी, तेने उल्लघवारुप आशातनाये करीने, ए पूर्वोक्त सर्व प्रकारनी (आसायणाए के०) आशातनाये करी, (जो के०) जे, (मे के०) महारे जीवे, (देवसिओ के०) दिवस संबधी (अइयारो के०) अतिचार दोष, जे (कओ के०) कर्यो होय, सेव्यो होय, (तस्स के०) ते अतिचारने (खमासमणो के०) हे क्षमाश्रमण! तमारी समीपे, (पडिक्कमामि के०) हु प्रतिक्रमु छुं, मिच्छामि दुक्कडं दउ छुं, (निंदामि के०) ते दुष्टकर्मकारी आत्मानें हु निंदु छु, (गरिहामि के०) गुरुनी साखे हु विशेषे निंदु छु (अप्पाण के०) दुष्ट पापिष्ट आत्मा प्रत्ये. (वोसिरामि के०) हु तजु छु,

वोसिरावुं छुं ॥ २ ॥ इति त्रीजुं वंदनावश्यक संपूर्ण ॥

पछी 'तिक्खुत्तारा' पाठसूं चोथा आवश्यकनी आज्ञा मागी जे, प्रथम काउस्सग्गसांहि ९९ अति-चार कह्या ते "आगमे तिविहे"नी पाटी थकी "इ-च्छामिच्छामि" नी पाटी सुधी प्रगटपणे केहवा; जिण मांहि प्रत्येक पाटी तथा थूलने छेहडे "तस्स मि-च्छामि दुक्कडं" कहेवुं. पछी "तस्स सव्वस्स"नी पाटी कहीजे. ते कहे छेः—

॥ अथ तस्स सव्वस्सकी पाटी प्रारंभः ॥

तस्स सवस्स देवसियस्स अइयारस्स दुप्भासियं दुच्चिंतियं आलोयंते पडिक्कसामि ॥ ४ ॥

अर्थः—(तस्स के०) ते पूर्वे चिंतव्या जे, (स-व्वस्स के०) सर्व पण (देवसियस्स के०) दिवस संबंधी, (अइयारस्स के०) अतिचार, तेने तथा (दुप्भासियं के०) उपयोग रहित अनिष्ट भाषा बोलवा थकी जे थयो, वली (दुचिंतियं के०) दुष्ट-कार्य मनमां चिंतववा थकी जे, थयो तेने (आलोयंते के०) आलोचवा माटे, प्रगटपणे कहीने, ते थकी

(पडिक्कमामि के०) हुं निवर्तुं छु ॥ ४ ॥

विधिः--पछी नीचे बेसीने जिमणो गोडो उभो करीने "नवकार, तथा करेमि भंते" नी पाटी कहीजे. तथा "चत्तारि मंगल"नी पाटी कहीजे ते पाटी लखीये छैये

॥ अथ चत्तारि मंगलकी पाटी प्रारंभः ॥

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहता सरणं पवज्जामि, सिद्धा सरणं पवज्जामि, साहु सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्म सरणं पवज्जामि अरिहंताजीको सरणो, सिद्धाजीको सरणो, साधुजोको सरणो, केवलिपरूप्या दयाधर्मको सरणो ॥ दुहो ॥ चार सरणां दु:खहरणां, ओर न बीजो कोय ॥ जो भविप्राणी आदरे, तो अखय अचल गति होय ॥ ५ ॥

अर्थ.–(चत्तारि के०) चार, (मंगलं के०)

मांगलिक छे, ते मांहि एक तो. (अरिहंता के०) जेणे रागादिक अंतरंग वैरीने हण्या ते श्री अरिहंत (मंगलं के०) मांगलिक छे, दूजा (सिद्धा के०) अष्ट कर्मने क्षय करीने जे सिद्ध पदने पाम्या छे एवा जे श्री सिद्ध, ते (मंगलं के०) मांगलिक छे, त्रीजा (साहू के०) सम्यक् ज्ञाने करी शिवसुखना साधक जे साधु ते (मंगलं के०) मांगलिक छे. चोथो (केवली के०) श्री केवलि भगवंतनो, (पण्णत्तो के०) प्ररूप्यो एवो जे श्रुतचारित्ररूप, (धम्मो के०) धर्म, ते (मंगल के०) मांगलिक छे. (चत्तारि के०) चार, (लोगुत्तमा के०) लोकमांहे उत्तम छे, एक (अरिहंतो के०) श्री अरिहंतजी छे, ते (लोगुत्तमा के०) लोकमांहे उत्तम छे, बीज़ा (सिद्धा के०) सिद्ध जे छे, ते (लोगुत्तमा के०) लोकमांहे उत्तम छे त्रीजा (साहू के०) साधु जे छे, ते (लोगुत्तमा के०) लोक मांहे उत्तम छे, चोथो (केवलिपण्णतो के०) केवली भगवाने प्ररूप्यो एवो, (धम्मो के०) धर्म जे छे, ते (लोगुत्तमो के०) लोकमांहि उत्तम छे, हवे (च-

त्तारि के०) चारे, (सरणं के०) शरणने (पवज्जा-
मि के०) अंगीकार करूं छुं, एक (अरिहंतासरण
के०) श्री अरिहंतजीना शरणने, (पवज्जामि के०)
अंगीकार करूं छुं, वीजो (सिद्धा सरण के०) श्री
सिद्धना शरणने, (पवज्जामि के०) अगीकार करूंछु,
त्रीजो (साहू सरण के०) साधुशरण प्रत्ये, (पवज्जा-
मि के०) अगीकार करू छु, चोथो (केवलि के०)
श्री केवलिये (पणत्तं के०) भांख्यो एवो जे (धम्मं
के०) धर्म तेना, (सरणं के०) शरण प्रत्ये, (पवज्जा-
मि के०) अगीकार करूं छु आगलनो पाठ तथा
दुहाको अर्थ सुलभ छे जिणसू इहां लिख्यो नहि हे.

विधि.—पछी "इच्छामि ठामि' तथा "इरिया-
वहि 'नी पाटी कहीने ' तिख्खुत्तारा ' पाठसू " व्रत,
अतिचार ' भेला केहवानी आज्ञा मागीजे तिहां
"आगमे तिविहे 'नी पाटी कहीजे, ते आ प्रमाणे—

॥ अथ आगमे तिविहे पण्णत्तेकी पाटी प्रारंभ ॥

आगमे तिविहे पण्णत्ते तं जहा, सुत्तागमे, अ-
त्थागमे, तदुभयागमे, एहवा श्री ज्ञानने विषे जे कोई

वस्त्र देखी दुगंछा कीनी होय, ४ (परपाखंडी परसंसा के०) मिथ्यात्वीनी प्रभावना देखी प्रशंसा किनी होय, (परपाखंडी संथवो के०) मिथ्यात्वना प्ररूपकनो संस्तव परिचय कीधो होय, एवं पांच अतिचार मांहेलो जे कोइ अतिचार लाग्यो होय, (तस्स के०) ते संबंधी, (दुक्कडं के०) दुष्कृत जे पाप ते (मिच्छामि के०) मुजने निष्फल थाओ ॥ ६ ॥ इति ॥ पछी १२ वारे "व्रत अतिचार" कहीजे, ते कहे छेः—

(१) पहेलुं अणुव्रत थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं त्रसजीव बेइंदिय, तेइंदिय चउरिंदिय पचिंदिय, जाणी प्रीच्छी विण अपराधी आकुटी संकल्पी सलेसी हणवानिमित्ते हणवानां पच्चक्खाण, जावजीवाए दुविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा वयसा, कायसा, एहवा पहिला थूलप्राणातिपात विरमण व्रतना पंच अइयारा, पयाला जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलो० ॥ बंधे वहे छविच्छेए, अइभारे भत्त पाणवुच्छेए ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ८ ॥

अर्थः—(पहिलुं के०) पहिलुं (अणुव्रत के०)

साधुना पंचमहाव्रतनी अपेक्षाये छोटो व्रत, छे जेमां केटलुं एक अविरति पणुं मोकलुं रहे माटे एने (थूलाओ के०) थूल कहिये एवा, (पाणाइ वायाओ के०) प्राणीयोना प्राणनी अतिपात एटले हिंसा करवी ते थकी (वेरमण के०) निवर्तुं छुं. (त्रस-जीव के०) त्रस जीव, ते हालता चालता एवा, (बेइंदिय के०) दोय इंद्रियवाला, (ते इंदिय के०) तीन इंद्रियवाला, (चउरिंदिय के०) चार इंद्रियवाला, (पचिंदिय के०) पांच इंद्रिय वाला जीव, तेने (जाणी के०) जाणीने, (प्रीच्छी के०) ओलख्यांथकां, (विण अपराधी के०) निरपराधी जीवने (आकुटी के०) उदेरी (सकल्पी के०) संकल्प करीने, (सलेसी के०) लेश्यासहित, (हणवा निमित्ते के०) हणवानी बुद्धिये करीने, हणवानां पच्चख्खाण कीधां छे ते आ प्रमाणे के (जावजीवाए के०) ज्यां सुधी जीवुं त्यां सुधी (दुविहं के०) दोय करण, अने (तिविहेणं के०) तीन जोगसू (न करेमि के०) हुं करुं नहीं, (नकारवेमि के०) दुजा पासे हुं करावु नही,

(मणसा के०) मने करी, (वयसा के०) वचने करी, (कायसा के०) कायाये करी. हिंसा करुं नही एहवा पहिला थूल एटले म्होटा, (प्राणातिपात के०) जीवनी हिंसा करवा थकी (विरमणव्रतना के०) निवर्तवा रूप व्रतना (पंच अइयारा के०) पांच अतिचार, (पयाला के०) महोटा छे ते, (जाणियव्वा के०) जाणवा, पण (न समायरियव्वा के०) आदरवा नही, (तं जहा ते आलोउं के०) ते०) ते जिम छे तिम तेनां नाम कहीने आलोउं छुं, (बंधे के०) जीवने गाढे वंधणे वांध्यो होय, (वहे के०) गाढा घाव घाल्या होय, (छविच्छेए के०) शरीरना अवयवो छेद्या होय, (अइभारे के०) अति भार भर्यो होय, (भत्तपाणवुत्थेए के०) अन्न पाणीनो व्युच्छेद कीधो होय, (तस्स मिच्छामि दुक्कडं के०) ते अतिचार रूप दुष्कृत जे पाप ते महारुं निष्फल थाओ ॥ ८ ॥ इति ॥

(२) बीजुं अणुव्रत थूलाओ मोसावायओ वेरमणं कन्नालिए गोवालिए, भोमालिए, थापण मोसो, मोटकी

कूडी साख. इत्यादिक मोटकूं जूठ बोलवाना पच्चक्खाण जावजीवाए, दुविहं, तिविहेण न करेमि न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा बीजा थूल मृषावादविरमण व्रतना पंच अइयारा, जाणियव्वा, न समायरिवा तं जहा ते आलोउं, सहसाभक्खाणे, रहस्साभक्खाणे, सदारा मंतभेए, मोसोवएसे, कूडलेहकरणे, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

अर्थ.—बीजुं अणुव्रत, (थूलाओ के०) महोटा. (मोसावायओ के०) मृषावादथकी एटले जूठुं बोलवाथी. (वेरमणं के० हु निवर्तुं छु (कन्नालिये के०) कन्या तथा वर संबंधि जूठ, (गोवालिए के०) गाय, भेंप आदि ढोर सबंधि जूठ, (भोमालिए के०) जमीन सबंधि जूठ, (थापणमोसो के०) कोईनी स्थापण ओलववी, (मोटकी कूडी साख के०) मोटी खोटी साक्षी भरवी, (इत्यादिक के०) ए आदे करीने, (मोटकू झूठ के०) महोटुं जूठ, (बोलवा के०) बोलवानु (पच्चक्खाण के०) पच्चक्खाण, (जावजीवाए के०) जावजीव लगे, (दुविह तिविहेण के०) इत्यादिक

नो अर्थ आगल लखाइ गयो छे, (सहसाभक्खाणे के०) सह सत्कारे कोई प्रत्ये कूडुं आल दीधुं होय (रहस्साभक्खाणे के०) कोईनी रहस्य ते छानी वात प्रगट कीनी होय, (सदारामतंभेए के०) पोतानी स्त्रीना मर्म प्रकाश्या होय, (मोसोवएसे के०) मृषा ते खोटो उपदेश दीधो होय, (कूडलेहकरणे के०) कूडालेखनुं करवुं एटले खोटा लेख लिख्या होय, (तस्स मिच्छामि दुक्कडं के०) ते पाप महारुं निष्फल थाओ ॥ ९ ॥ इति ॥

(३) त्रीजुं अणुव्रत थूलाओ अदिन्नादाणाओ, वेरमणं, खातर खणी, गांठडी छोडी, तालुं परकुंचिये करी, पडी वस्तु धणीयाती जाणी लेवो, इत्यादिक मोटकूं अदत्तादान लेवानां पच्चक्खाण, सगा संबंधी, व्यापार संबंधी तथा निभ्रमी वस्तु उपरांत अदत्तादान लेवानां पच्चक्खाण जावजीवाए दुविहं तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा त्रीजा थूल अदत्तादान विरमण व्रतना पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं, ते-

नाहडे, तक्करप्पओगे, विरुद्धरज्जाइक्कमे, कूडमाणे, तप्प-
डिरुवगववहारे, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १० ॥

अर्थ.–(त्रीजुं अणुव्रत के०) त्रीजुं अणुव्रत (थूलाओ के०) मोहोटुं, (अदिन्नादाणाओ के०) अण दीधेलुं लेवाथकी, एटले चोरी करवाथकी, (वेरमणं के०) निवर्तुं छु (खातरखणी के०) कोइना घरमां खातर पाडी चोरी कीधी होय, (गांठडी छोडी के०) कोईनी गांठडी छोडी होय, (तालुपरकुचियेकरी के०) कोईनु तालुं बीजी कुंचीथी उघाडी होय, (पडी वस्तु धणीयाती जाणी लेवी के०) कोईनी पडेली वस्तुनो, कोई धणी छे एम जाण्यां छतां ते लेवी, (इत्यादिक मोटकूं के०) ए आदि मोटकां, (अदत्तादान के०) धणीना दीधा विनानी वस्तुने (लेवाना पच्चक्खाण के०) लेवानो त्याग, अने पोतानां सगां वाहालां सवधी कोइ चीज होय अथवा व्यापार संबंधी कोइ चीज नमुना दाखल तथा सोपारीनो कटको प्रमुख जे उपाडवाथकी तेना मालेकने कोइ भ्रम उपजे नही तेनी जयणा उपरांत पच्चक्खाण (जावजीवाए के०)

जावजीव सुधी, दुविहं तिविहेणं, इत्यादिनो अर्थ सुलभ छे. एना पांच अतिचार कहे छे. (तेनाहडे के०) चोरीनी वस्तु लीनी होय, (तक्करप्पओगे के०) चोरने द्रव्य, उपगरण वगेरे कोइ सहाय दीनी होय, (विरुद्धरज्जाइक्कमे के०) राज्य विरुद्ध कार्य कीधुं होय, राजानुं दाण भांग्युं होय, तथा राजाये मना करेला गुन्हा कर्या होय, (कूडतोले के०) खोटां तोलां कीनां होय, (कूडमाणे के०) खोटां मापां कीनां होय, (तप्पडिरुवगववहारे के०) एक वस्तु मांहे ते वस्तु जेवीज बीजी वस्तुनी भेल संभेल कीनी होय, सरसी वस्तु देखाडीने नरसी वस्तु आपी होय, तो (तस्स मिच्छामिदुक्कडं के०) तेनुं पाप म्हारे निष्फल थाओ ॥ १० ॥ इति ॥

(४) चोथुं अणुव्रत थूलाओ मेहुणाओ वेरमणं, सदारा संतोसिए, अवसेसं, मेहुणविहं पच्चक्खाण, ए पुरुषने, अने स्त्रीने सभर्तारसंतोसिए, अवसेसं मेहुणनुं पच्चक्खाण, अने जे स्त्री पुरुषने मूलथकीज कायाए करी मेहुण सेववानुं पच्चक्खाण होय, तेहने

देवता मनुष्य तिर्यंच संबंधी मेहुणनुं पच्चक्खाण, जाव-
जीवाए देवता संबंधी दुविहेणं तिविहेणं, न करेमि,
न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, मनुष्य तिर्यंच
संबंधी एगविहं एगविहेणं न करेमि, कायसा, एहवा
चोथा थूलमेहुण विरमणव्रतना पंच अइयारा, जाणि-
यव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं, इत्तरिय
परिग्गहियागमणे, अपरिग्गहियागमणे, अनंगकीडा,
परविवाहकरणे, कामभोगेसु तिव्वाभिलासा, तस्स मि-
च्छामि दुक्कडं ॥ ११ ॥

अर्थ.—(चोथुं अणुव्रत के०) चोथुं अणुव्रत
(थूलाओ के०) महोटा (मेहुणाओ के०) मैथुन थकी
(वेरमणं के०) निवर्तुं छुं, (सदारा के०) पोतानी
स्त्रीथीज (संतोसिए के०) संतोष राखवो, (अवसेसं
के०) ते शिवाय बीजा कोइनी साथे (मेहुणविहं
के०) मैथुन सेववानां (पच्चक्खाण के०) त्याग बंधी
छे, ए पुरुष आश्रयी कह्युं अने स्त्रीने (सभर्तार के०)
पोताना भर्तारथी (संतोसिए के०) संतोष राखवो.
(अवसेसं के०) ते शिवाय बीजा कोइनी साथे (मे-

हुणनुं के०) मैथुन सेववानी (पच्चक्खाण के०) वंधी,
अने जे स्त्री पुरुषने मूलथकीज कायाये करी मेहुण
सेववानुं पच्चक्खाण होय एटले मैथुन सेववानी वंधी,
होय, तेहने देवता मनुष्य तिर्यंच संवंधी (मेहुणनुं
के०) मैथुन सेववानुं (पच्चक्खाण के०) त्याग, (जा-
वजीवाए के०) ज्यांसुधी जीवुं त्यां सुधी (देवता सं-
वंधी के०) देवतानी साथे दुविहं तिविहेणं न करेमि
न कारवेमि मणसा वयसा कायसा अने (मनुष्य
तिर्यंच संवंधि के०) माणस, तथा पशु वगेरेनी साथे
(एगविहं के०) एक करण (एगविहेणं के०) एक
जोगे (नकरेमि के०) हुं करूं नही, (कायसा के०)
कायाये करी एहवा चोथा (थूल मेहुणविरमणव्र-
तना के०) महोटां मैथुन त्याग करवा संवंधि व्रतना
(पंचअइयारा के०) पांच अतिचार, जाणियव्वा न
समायरिव्वा तं जहा ते (आलोउं के०) आलोचुं छुं,
(इत्तरिय परिग्गहिया गमणे के०) इत्वरते स्वल्प-
काल मास छ मास पर्यंत कोइ वेश्या प्रमुखने राखी
तेनी साथे, गमन कीधुं होय; (अपरिग्गहियागमणे

के०) जे परणेली न होय, एवी कुमारिका अथवा विधवा जेनो कोइ धणी न होय जेनुं कोइये परिग्रहण कर्युं नथी तेने अपरिग्रहीता कहीये तेनी साथे गमन कीधुं होय, (अनंग कीडा के०) अत्यासक्तिये स्वदेह परदेह *अनग जे काम तेनी चेष्टा कीधी* होय हास्य, कुतूहल कीधां होय, (परविवाहकरणे के०) पोतानां छोरुं टालीने परनां छोरुं संबंधि विवाह नात्रं मेलव्युं होय, (कामभोगेसु के०) काम भोगने विषे, (तिव्वाभिलासा के०) तीव्र परिणामे अत्यंत अभिलाषा राखी होय, (तस्स मिच्छामि दुक्कडं के०) ते संबंधि कीधेलुं पाप म्हारुं निष्फल थाजो ॥११॥इति॥

(५) पांचमुं अणुव्रत थुलाओ परिग्गहाओ, वेरमणं, खित्तवत्थुनुं यथापरिमाण, हिरण्णसोवण्णनुं यथापरिमाण, धनधान्यनुं यथापरिमाण, दुपदचउप्पदनुं यथापरिमाण, कुविय धातुनुं यथापरिमाण, ए यथापरिमाण कीधुं छे, ते उपरांत पोतानुं करी परिग्रह राखवानां पच्चक्खाण, जावजीवाए, एगविहंतिविहेण, न करेमि, मणसा, वयसा, कायसा एहवा पांचमा थूलप-

रिग्रहपरिमाण व्रतना, पंच अइयारा, जाणियव्वा, तं जहा ते आलोउं, खित्तवत्थुप्पमाणाइक्कमे, हिरण्णसोवण्णप्पमाणाइक्कमे, धनधाण्णप्पमाणाइक्कमे, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १२ ॥ इति ॥

अर्थः–(पांचमुं अणुव्रत थूलाओ के०) मोहोटुं परिग्रह जे दोलतते वगेरे ने (वेरमणं के०) तजवा विषेनुं ते कहे छे (खित्त के०) खेत्रादिक ते उघाडी जमीन, (वत्थुनुं के०) घरादिक ढांकी जमीननी (यथापरिमाण के०) जेटली मर्यादा कीधी छे, (हिरण्ण के०) रूपुं (सोवण्णनुं के०) सोनानी (यथापरिमाण के०) जे प्रमाणे मर्यादा कीधी छे, (धण के०) मोरबंधनाणुं, (धाण्णनुं के०) शाल्यादिक धान्यनी (यथापरिमाण के०) जे प्रमाणे मर्यादा कीधी छे (दुपद के०) बे पगां मनुष्यादिक (चउप्पदनुं के०) चोपगां ढोरादिकनी (यथापरिमाण के०) जे प्रमाणे मर्यादा कीधी छे. (कुविय धातुनुं के०) सर्व घरनी वस्तु ते घरवखरी वगेरेनी, (यथापरिमाण के०) जे प्रमाणे मर्यादा कीधी छे, ए यथापरिमाण कीधुं छे. ते उप-

रांत पोतानुं करी परिग्रह राखवानां पच्चक्खाण (जावज़ीवाए के०) ज्यां सुधी जीवुं त्यां सुधी, एगविहं इत्यादिनो अर्थ सुगम छे तेथी लख्यो नथी एना पांच अतिचार कहे छे. (खित्तवत्थुप्पमाणाइक्कमे के०) उघाडी जमीन तथा ढांकी जमीननुं प्रमाण, अतिक्रम्युं होय, (हिरण्णसोवण्णप्पमाणाइक्कमे के०) रुपा तथा सोनानी मर्यादा उल्लघी होय, (धणधाण्णप्पमाणाइक्कमे के०) रोकड नाणुं तथा दाणानी मर्यादा उल्लंघी होय, (दुपदचउप्पदप्पमाणाइक्कमे के०) बेपगां, चोपगांनी मर्यादा उल्लघी - होय, (कुवियप्पमाणाइक्कमे०) घरवखरीनी मर्यादा उल्लंघी होय, (तस्स मिच्छामि दुक्कडं के०) तेनुं पाप म्हारे निष्फल थाजो ॥ १२ ॥ इति ॥

(६) छठुं दिशिव्रत, - ऊर्ध्वदिशिनुं यथापरिमाण, अधोदिशिनुं यथापरिमाण, तिरियदिशिनुं यथापरिमाण. ए यथापरिमाण कीधुं छे, ते उपरांत सइच्छाये, कायाये जइने पंच आश्रव सेववानां पच्चक्खाण. जावजीवाए, दुविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, व-

यसा, कायसा, एहवा छठ्ठादिशिव्रतना पंच अइयारा, जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं, उढ्ढदिसिप्पमाणाइक्कमे, अहोदिसिप्पमाणाइक्कमे, तिरियदिसिप्पमाणाइक्कमे, खित्तवुढ्ढि सयंतर द्धाए, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १३ ॥ इति ॥

अर्थः-(छठुं दिशिव्रत के०) छठुं, दिशाना मान बांधवानुं व्रत, ते (ऊर्ध्वदिशानुं के०) उंचीदिशानुं (यथापरिमाण के०) जेम प्रमाण कीधुं छे, (अधोदिशिनुं के०) नीची दिशानुं (यथापरिमाण के०) जेम प्रमाण कीधुं छे, (तिरिय दिशानुं के०) तीर्च्छी जमीन, एटले उत्तर, दक्षिण, पूर्व अने पश्चिम ए चारे दिशानुं (यथापरिमाण के०) जेम प्रमाण कीधुं छे, ए यथापरिमाण कीधुं छे ते उपरांतनी भूमिमां स्वेच्छाये कायाये जइने पंच आश्रवसेववानां पाप भोगववानां, पच्चक्खाण जावजीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा, एवी रीते कीधां छे, एहवा छठ्ठा (दिशि व्रतना के०) करेला मानथी उपरांत दिशाने तजी देवाना व्रतना पंच अ-

इयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, त जहा ते आ-
लोउं, (उड्ढदिसिप्पमाणाइक्कमे के०) उंची दिशानुं
प्रमाण अति क्रम्युं होय, मर्यादा उल्लंघी होय (अ-
होदिसिप्पमाणाइक्कमे के०) नीची दिशानी मर्यादा
उल्लंघी होय, (तिरियदिसिप्पमाणाइक्कमे के०) तीर्च्छी
दिशानी मर्यादा उल्लंघी होय, (खित्तवुड्ढि के०) क्षेत्र
जमीननी वृद्धि, एटले एक दिशा घटाडीने वीजी
दिशा वधारी होय (सयंतरद्धाए के०) सदेह पड्यां
छतां आगल चाल्यो होय. (तस्स मिच्छामि दुक्कडं
के०) तेनुं पाप कीधेलुं महारे निष्फल थाजो ॥
१३ ॥ इति ॥

७ सातमुं व्रत उवभोग परिभोगविहं पच्चक्खाय-
माणे उलणियाविहं, १ दंतणविहं, २ फलविह, ३ अप्भं-
गणविहं, ४ उवट्टणविहं, ५ मज्जणविहं, ६ वत्थविहं, ७
विलेवणविहं, ८ पुप्फविहं, ९ आमरणविहं, १० धूपविह,
११ पेजविहं, १२ भक्खणविहं, १३ उदनविहं, १४ सूप-
विहं, १५ विगयविहं, १६ सागविहं, १७ माहुरविहं, १८
जिमणविहं. १९ पाणीविहं, २० मुखवासविहं, २१ वाह-

निविहं, २३ सयणविहं, २४ सचित्तविहं, २५ दव्वविहं, २६ इत्यादिकनुं, यथापरिमाण कीधुं छे, ते उपरांत उवभोग परिभोग भोगनिमित्ते भोगववानां पच्चक्खाण, जावजीवाए, एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा एहवा सातमा उवभोग परिभोग दुविहे पन्नत्ते तं जहा, भोयणाउय, कम्मउय, भोयणाउ समणोवासयाणं पंच अइयारा, जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं, सचित्ताहारे, सच्चित्तपडिबद्धाहारे, अप्पोलिओसहिभक्खणया, दुप्पोलिओसहिभक्खणया, तुच्छोसहिक्खणया, कम्मउण समणोवासयाणं, पनरस कम्मादाणाइ, जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं, इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणिज्ज, लक्खवाणिज्ज, केसवाणिज्ज, रसवाणिज्ज, विसवाणिज्ज, जंतापिल्लणकम्मे, निलंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलायपरिसोसणया, असईजण पोसणया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १४ ॥ इति ॥

अर्थः—सातमुं व्रत (उवभोग के०) जे वस्तु

एकज वार भोगवाय एवा जे अन्नादिक तेनो विधि प्रमुख (परिभोगविहं के०) उपभोग वस्तु जे वारंवार भोगववामां आवे एवां वस्त्र आभरण प्रमुख (तेनुं पच्चक्खायमाण के०) पच्चक्खाण करवुं ते कहे छे (उल्लणियाविहं के०) दातणना प्रकारनुं, (फलविहं के०) वृक्षनाफल प्रमुखना प्रकारनुं (अप्भंगणविहं के०) तेल प्रमुख शरीरे चोपडवाना प्रकारनुं रनुं, (उवट्टणाविहं के०) मर्दन करवानी वस्तु प्रमुखना प्रकारनुं, (मज्जणविहं के०) न्हावाना पाणी प्रमुखना प्रकारनुं (वत्थविह के०) वस्त्रना प्रकारनुं (विलेवणविहं के०) चदनादिक विलेपन करवाना तथा तिलक प्रमुख करवाना प्रकारनुं (पुप्फविहं के०) चंपादिकना फूल प्रमुखना प्रकारनुं, (आभरणविह के०) घरेणाना प्रकारनुं (धूपविहं के०) धूप करवाना प्रकारनुं (पेजविहं के०) पीवानी वस्तु प्रमुखना प्रकारनुं, (भक्खणविहं के०) सुखडी प्रमुख भोजन करवा योग्य वस्तुना प्रकारनुं, (उदनविहं के०) चावल प्रमुखनी धानसाल प्रकारनुं

(सूपविहं के०) मठ प्रमुख चावलना प्रकारनुं (विगयविहं के०) घृत, तेल, दूध, दहीं, गोल आदि विगयना प्रकारनुं (सागविहं के०) नीलां पत्र, शाक, प्रमुखना प्रकारनुं, (माहुरविहं के०) मधुर पदार्थना प्रकारनुं, (जिमणविहं के०) जिमवानो विधि जे अमुक आहार जमवो तेना प्रकारनुं (पाणीविहं के०) पाणी प्रमुख पीवाना प्रकारनुं, (मुखवासविहं के०) सोपारी, लविंगादिक मुखवास वस्तुना प्रकारनुं, (वाहनिविहं के०) पगेपहेरवाना पगरखा प्रमूखना प्रकारनुं, (वाहनविहं के०) वाहनना प्रकारनुं, (सयणविहं के०) शय्या पलंग आदि सुवानी वस्तुना प्रकारनुं (सचित्तविहं के०) सचित्त वस्तु तेने खावाना प्रकारनुं, (दव्वविहं के०) आज महारे अमूक अमूक आटलांज द्रव्य खावां उपरांत न खावां तेहना प्रकारनुं, (इत्यादिकनुं यथापरिमाण कीधुं छे के०) इत्यादि वस्तुनुं जेम प्रमाण कीधुं छे, एटले फलाणी वस्तु मारे आज आटली खावी, के पीवी तथा फलाणी वस्तु आज

एटली भोगववी इत्यादि, (ते उपरांत के०) जे हद कीधी छे ते उपरांत, (उवभोग के०) जे वस्तु एक वार भोगववामां आवे ते, (परिभोग के०) जे वस्तु वारंवार भोगववामां आवे ते, (भोगनिमित्त के०) भोगने कारणे, (भोगववा पच्चक्खाण के०) भोगववानी बंधी, (जावजीवाए के०) ज्यां सुधी जीवुं त्यां सुधी, एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा एहवा सातमा उवभोग परिभोग, (दुविहे के०) दोय प्रकारे, (पणत्ते के०) प्ररूप्या छे, (तंजहा के०) ते कहे छे, (भोयणाउय के०) एक भोजन संबंधि, (कम्मउय के०) बीजुं कर्म ते व्यापार संबंधी जाणवुं, तेमांथी (भोयणाउसमणोवासयाणं के०) भोजन व्रत संबंधिना श्रावकने (पंचअइयारा के०) पांच अतिचार छे, ते जाणियव्वा न समायरियव्वा (तंजहा ते आलोउं के०) ते जिम छे तिम कहे छे. (सचित्ताहारे के०) सचित्त वस्तु खावी एटले वनस्पति आदिक काचुं फल खाय, (सचित्तपडिबद्धाहारे के०) सचित्तनी साथे लागेली प्रतिबंद्धित वस्तु एटले लींबडानो गुं-

दर इत्यादिक सचित्त सहित वस्तु होय तेने अचित्त जाणीने खाय, (अप्पोलिओसहि भक्खणया के०) अपक्वौषधि ते जे वस्तुमां जीवना प्रदेश रहि गया होय, एवी तत्कालनी वाटेली अथवा पीशेली वस्तु प्रमुख, (दुप्पोलिओसहिभक्खणिया के०) दुःपक्वोषधि ते कांइक काचीने कांइक पाकी रही होय, जेने पूरुं अग्नि प्रमुख शस्त्र नथी प्रणम्युं एवी वस्तुनो भोग करे, (तुच्छोसहिभक्खणया के०) ते खावुं थोडुं अने नाखी देवुं घणुं पडे, एवी वस्तु जे सीताफल, शेलडी प्रमुख ए पांच प्रकारनी वस्तु खाधी होय तो अतिचार लागे, ए भोजनथी पांच अतिचार कह्या, हवे (कम्मउणं के०) व्यापारना, (समणोवासयाणं के०) श्रमणोपासक एटले श्रावकने (पनरसकम्मादाणाइ के०) पन्नर प्रकारे कर्म आववाना स्थानकरूप पन्नर अतिचार छे, ते जाणियव्वानसमायारियव्वा (तंजहा ते आलोउं के०) ते जेम छे तेम आलोचुं छुं, (इंगाल कम्मे के०) अग्निनो व्यापार लोहकारादिकनुं कर्म कीधुं होय, (वणकम्मे के०) वनना झाड वृक्ष क-

पावी व्यापार कीधो होय, (साडिकम्मे के०) गा-
डादिक करावीने वेच्यां होय, घरां, उंध प्रमुखनो
व्यापार कीधो होय (भाडिकम्मे के०) गाडां, घ-
रादिक, उंट, घोडा, बेल प्रमुखना भाडानो व्यापार
कीधो होय, (फोडिकम्मे के०) खाण खणाववी
पत्थरा फोडाववा कर्पण करवुं, इत्यादि पृथ्वीनां पेट
फोडाववां, कूवा, वाव आदि कराववा संबंधि कर्म
कर्यां होय, ए पांच कुकर्म, श्रावकने अत्यंतपणे
वर्जवां, (दंतवाणिज्ज के०) आगारमां जइ हाथी-
दांत, नखला कस्तूरी मृगचर्म, इत्यादि वस्तु लेवी,
ते दांतनु वाणिज्य एटले व्यापार कीधो होय, (लक्ख
वाणिज्ज के०) लाखनो व्यापार करवो, (रसवाणिज्ज
के०) द्विपद् चउप्पदजीवोनो व्यापार करवो, (विस-
वाणिज्ज के०) विष जे झेर, लोह, हथीयार, प्रमुख
जीवघातक वस्तुनो व्यापार कीधो होय, ए पांच
कुवाणिज्य श्रावकने वर्जवां, (जंतपिल्लणकम्मे के०)
घाणी, उखल, मुशल, घंटी प्रमुखनो व्यापार, निल्लं-
छणकम्मे के०) बलदादिकने अंकाववा, डांभ देव-

रावना, खसी करावनी (दवग्गिदावणया के०) दव देवा, देवरावना, (सर के०) सरोवर, (दह के०) द्रह, कुंड (तलाय के०) तलावना पाणीने, परिसोसणया के०) समस्त प्रकारे शोषाव्युं होय (असइजण पोसणया के०) कुर्कुट, श्वान, मांजारादिक हिंसक जीवने पोष्या होय तथा दुराचारी दासदासी प्रमुखनुं पोषण कर्युं होय, ते असती जन पोषण कहिये, ए पांच सामान्य कर्म निश्चे वर्जवां, (तस्स मिच्छामि दुक्कडं के०) तेनुं दुष्कृत एटले पाप म्हारुं निष्फल थाओ ॥ १४ ॥

८ आठमुं अनर्थदंड विरमण व्रत. ते चउविहे, अणत्थादंडे, पण्णत्ते, तं जहा, अवज्झाणायरिए, पमायायरिए, हिंसप्पयाणे, पावकम्मोवएसे, एहवा अनर्थदंड सेववाना पच्चक्खाण, तेमां आठ आगार आयेवा रायवा नायवा परीवारेवा देवेवा नागेवा जखेवा भुयेवा जावजीवाए, दुविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा आठमा अनर्थदंड विरमण व्रतना पंच अइयारा, जाणियव्वा, न समायरि-

यव्वा, तं जहा ते आलोउं, कंदप्पे, कुक्कुइए, मोहरिए, संजुत्ताहिगरणे, उवभोगपरिभोग अइरत्ते, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १५ ॥ इति ॥

अर्थः—आठमुं (अनर्थदंड के०) जे अर्थ विना कर्मबंधनां कारण सेववां, कारण विना आत्माने दंडाववो ते अनर्थदंड कहीये तेथकी (वीरमण के०) निवर्त्तवुं ते अनर्थदंड, विरमण व्रत कहीये ते (अणत्थाढंड के०) अनर्थ दंड, (चउविहे के०) चार प्रकारे (पपणत्ते के०) प्ररूप्यो, कह्यो (तं जहा के०) ते जिम छे तिम कहे छे, (अवज्झाणायरिए के०) अपध्यानाचरित ते खोटुं ध्यान धरवुं. माठी चितवणा करवी, (पमायायरिए के०) होड करवी, विकथा करवी, खेल करावबा, सर्व रात्रिये सुइ रहेवुं घी तेलादिकनां ठाम उघाडां राखवां ते प्रमादाचरित, (हिंसप्पयाणे के०) जे थकी हिसा थाय एहवा कोश कोदाल प्रमुख शस्त्र आपवां, ते हिंसप्रदान, (पावकम्मोवएसे के०) वलद समरावबो, खेतर खेडो, गाडी जोडो, इत्यादि पाप कर्मनो उप-

देश अर्थ विना करवो, ते हिंसप्रदान एहवा अनर्थ दंड सेववाना पच्चक्खाण, जावजीवाए, दुविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा, आठमा अनर्थदंडविरमणव्रतना पंच अइयारा, जाणियव्वा न समायरियव्वा, तं जहा, ते आलोउं (कंदप्पे के०) जे थकी काम वृद्धि थाय. एहवी वात कीधी होय, (कुक्कुइए के०) भांडनी पेरे कुचेष्टा कीधी होय, (मोहरिए के०) मौखर्य ते वाचालपणे जेम तेम बोल्यो होय, पारकी तांत कीधी होय, (संजुत्ताहिगरणे के०) उखल, मुशलादिक अधिकरण एकठां करी मुक्यां होय, (उवभोगपरिभोग अइरत्ते के०) उपभोग परिभोगमां अतिरक्त रहे, एटले भोगविलासमां बहु मची रह्या होइये, (तस्स मिच्छामि दुक्कडं के०) तेनुं पाप मने निष्फल थाजो ॥ १५ ॥ इति ॥

नवमुं सामायिक व्रत, सावज्ज जोगनुं, वेरमणं, जावनियमं, पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि, मणसा वयसा, कायसा, करंतं नाणु,

जाणइ, वयसा, कायसा, एहवो सद्दहणा, परूपणा, करिये तिवारे फरसनाये करी शुद्ध, एहवा नवमा सामायिक व्रतना पच अइयारा, जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा, ते आलोउं, मणदुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे, सामाइयस्स सइविहूणेअकरणियाए, सामाइयस्स, अणवुट्टियस्स करणयाए, तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ १६ ॥ इति ॥

अर्थ.—नवमुं (सामायिक व्रत के०) समतारूप सामायिकनु व्रत, (सावज्ज जोगनु के०) सावद्य जे पाप तेणे करी सहित एवा मनादि योग तेनुं (वेरमणं के०) निवर्त्तवु, (जावनियम के०) ज्यां सुधी सामायिकनो नियम एटले मर्यादा कीधीछे त्यां सुधी, (पज्जुवासामि के०) शुभ जोगने पर्युपासुं एटले सेवुं, (दुविहं तिविहेण न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा, करत नाणुजाणाउ, वयसा कायसा, एहवी (सद्दहणा के०) श्रद्धा, रुचि, प्ररूपणा, करिये त्यारे फरसनाये करी शुद्ध, एहवा नवमा सामायिक व्रतना, पंच अइयारा, जाणियव्वा,

न समायरियव्वा, तं जहा, ते आलोउं (मणदुप्पणिहाणे के०) सामायिक कीधुं छे तेमां मन माठुं वर्त्ताव्युं होय; (वयदुप्पणिहाणे के०) वचन माठुं वर्त्ताव्युं होय, (कायदुप्पणिहाणे के०) काया माठी प्रवर्त्तावी होय, (सामाइयस्ससइविहुणे अकरणियाए के०) सामायिकने बराबर कीधुं के नही ? तेनी खबर न रही, ते सइविहूणे एटले स्मृतिहीन अतिचार, (सामाइयस्स के०) सामायिकने (अणुवुट्ठियस्स करणयाए के०) पुरुं थया विना पार्युं होय, ते अनवस्था दोष नामे पांचमो अतिचार जाणवो (तस्स मिच्छामि दुक्कडं के०) तेनुं पाप मने निष्फल थाजो ॥ १६ ॥

१० दशमुं देसावगासिक व्रत, दिनप्रते प्रभातथकी प्रारंभीने पूर्वादिक छदिशे जेटली भूमिका मोकली राखी छे, ते उपरांत, सइच्छाये. कायाये, जइने, पांच आश्रव सेववानां पच्चक्खाण, जाव अहोरत्तं, दुविहं. तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा करंतं नाणुजाणिज्जा, वयसा, कायसा, जेटली

भूमिका मोकली राखी छे, तेमांहिज जे द्रव्यादिकनी मर्यादा कीधी छे, ते भोगववी ते उपरांत, उवभोग, परिभोग, भोगनिमित्ते, भोगववा पच्चक्खाण, जावअहोरत्तं, एगविहं, तिविहेणं, न करेमि, नकारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा दशमा देशावकाशिक व्रतना, पच अइयारा जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा, ते आलोउ, आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ, वहिया पुग्गलपक्खेवे, तस्स मिच्छामि दुकडं ॥ १७ ॥ इति ॥

अर्थ–दशमुं (दसावगासिक व्रत के०) देशथकी दिशाओनो अवकाश करवो संक्षेपवो तेमज सर्वे व्रतोना नियम संक्षेपवा एटले प्रथम घणी छूट राखी होय ते प्रतिदिवसे सक्षेपीने थोडी छूट राखवी ते संबंधी व्रत ते दिनप्रत्ये प्रभातथकी प्रारम्भीने छदिशे जेटली भूमिका मोकली राखी छे एटले सवारमां उठीने मान कर्युं छे के आज म्हारे दरेक दिशाये आटला गाउ उपरांत जावु नही ? ते उपरांत (सइत्थाइ के०) पोतानी इच्छाये करी कायाये जइने जीव

हिंसादिक पांच आश्रव, सेववानां पच्चक्खाण (जाव अहोरत्तं के०) यावत् दिवस ने रात्रि सुधी, दुविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, करंतं नाणुजाणिज्जा, वयसा कायसा, एवी रीते करेला छे. तिहां जेटली भूमिका मोकली राखी छे, तेमांही जे द्रव्यादिकनी मर्यादा कीधी छे, के आज म्हारे एटला पदार्थ उपभोगमां लेवा ते उ-परांत उवभोग परिभोग एहवा बे प्रकारे भोगयो-ग्य वस्तुने भोगनिमिते भोगनी इच्छाए भोगववाना पच्चक्खाण (जावअहोरत्तं के०) यावत् एक दिवसरात्रि सुधी (एगविहं के०) एक करणे, अने (तिविहेणं के०) त्रण जोगे, करी नकरेमि नकारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एवी रीते पच्चक्खाण कर्यां छे. एहवा दशमा देशावकाशिक व्रतना पंच अइयारा, जाणि-यव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा, ते आलोउं (आण-वणप्पओगे के०) प्रमाण करेली भूमिथी बाहिरली भूमिये कोइ जनार माणसनी हस्तक कोइ पदार्थनुं आनयन एटले मंगाववुं ते प्रथम आनयन प्रयोग-

नामा अतिचार जाणवो (पेसवणप्पओगे के०) प्रमाण करेली भूमिथी उपरांत कोइ चाकर मोकलीने वस्तु मगाववी क्रयविक्रयनो आदेश देवो ते बीजो पेसवण प्रयोगातिचार (सद्दाणुवाइ के०) सादनो उपाय ते कोइ माणसने खुंखारो करीने हद उपरांतथी बोलाववो ते शब्दानुपाति अतिचार, (रुवाणुवाइ के०) पोतानु रूप देखाडीने कोइने बोलावे, (बहियापुग्गलपक्खेवे के०) निमेली भूमिकाथी बाहिर रहेला पुरुपने कांकरादिक नांखी बोलावे, ते पांचमो पुद्गलप्रक्षेपातिचार, ए पाच अतिचारमांहे कोइ अतिचार दोप लाग्यो होय तो (तस्स मिच्छामि दुक्कड के०) तेनुं पाप मने निष्फल थाजो ॥ १७ ॥ इति ॥

११ इग्यारमु पोपध व्रत, असणं, पाणं, खाइम, साइमंनुं पच्चक्खाण, अबंभनुं पच्चक्खाण, अमुक मणिसुवर्णनुं पच्चक्खाण, मालविन्नग विलेपणनुं पच्चक्खाण, सत्थ मुसलादिक सावज्ज जोगनु पच्चक्खाण, जावअहोरत्तं पज्जुवासामि दुविहं, तिविहेणं, न करेमि, न

कारवेमि, मणसा वयसा, कायसा, करंतं नाणुजाणइ, वयसा, कायसा, एहवो सद्दहणा, परूपणा करोये, तेः वारे फरसनाये करी शुद्ध, एहवा इग्यारमा पडिपुन्नं पोषध व्रतना, पंच अइयारा, जाणियवा न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं, अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सिज्झासंथारए, अप्पमज्झिय दुप्पमज्झिय सिज्झा संथारए, अप्पडिलेहिय, दुप्पडिलेहिय उच्चारपासवणभूमि, अप्पमज्झिय दुप्पमज्झिय उच्चार पासवणभूमि, पोसहस्स सम्मं अणणुपालणया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १८ ॥ इति ॥

अर्थः—इग्यारमुं (पोषधव्रत के०) पाप रहित थइ, संवरे करी आत्माने पोषवा ते संबंधी व्रत ते चार प्रकारे छे, (असणं के०) अन्न, (पाणं के०) पाणी, (खाइमं के०) मेवानी जात, (साइमंनुं के०) मुखवास सोपारी लविंग प्रमुख खावानुं (पच्चक्खाण के०) निषेधवुं ते प्रथम चार प्रकारे आहार परिहार पोसह तथा (अबंभनुं पच्चक्खाण के०) अब्रह्मचर्यनी बंधी, ते बीजुं ब्रह्मचर्यपोससह (अमुक

के०) जे आभरण सुखे उतारयां न उतरे ते मूकीने उपरांत, (मणि के०) हिरा प्रमुख, (सुवर्ण के०) सुवर्ण प्रमुखना आभरण राखवाना (पच्चक्खाण के०) बंधी तथा (मालावन्नग के०) गुलावनां फूल आदिकनी मालानु अने वन्नग एटले वर्णक वस्तु ते अबीर, गुलाल अलतादिक जाणवा. (विलेपणनु के०) विलेपन करवानु पच्चक्खाणं ते त्रीजो शरीर सत्कार परिहार पोसह तथा (सत्थ के०) शस्त्र, हथीयार (मुसलादिक के०) आयुध, लाकडी, सांबेलां वगेरे, सावज्ज जोगनु पच्चखाण एटले पापिष्ट काम करवानी बधी, ते चोथो सर्व सावद्ययोग व्यापार परिहार पोसह. एवुं व्रत (जाव अहोरत्त के०) जाव रात्रि दिवस सुधी, (पज्जवासामि के०) हु पर्युपासुं एटले सेवु, आचरुं, दुविह, तिविहेण, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, करत नाणुजाणइ, वयसा, कायसा, एहवी, (सद्दहणा के०) ए करवानी श्रद्धा थाय, (परूपणा करीये के०) वात करीये, ते वारे फरसनाये करी शुद्ध एटले ते वखत

शक्ति मुजब शुद्ध होजो. एहवा इग्यारमा (पडि-
पुणं के०) प्रतिपूर्ण एटले आदिथी अंत पर्यंत सम-
ताभावे संपूर्ण एवुं (पोषधव्रतना के०) धर्मध्याने
तथा संवरे करी आत्माने पोषवानुं व्रत तेना, पंच
अइयारा, जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते
आलोउं (अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहियं सिज्झा संथा-
रए के०) पाट प्रमुख शय्या तथा पथारीने, ए सज्झा
संथाराने अप्रतिलेषित एटले बराबर प्रतिलेख्यां न
होय अने प्रतिलेख्यां तो कांइक प्रतिलेख्यां एटले
कांइ जोयां कांइ न जोयां ते प्रथम अप्रतिलेषित
सज्झासंथारातिचार. (अप्पमज्झिय दुप्पमज्झिय सिज्झा
संथारए के०) सज्झा संथाराने प्रमाज्यों न होय
अथवा प्रमाज्यों तो कांइ पुंज्यां प्रमाज्यों कांइ न
प्रमाज्यों एम यद्वा तद्वा पुंजे, ते बीजो अप्रमार्जित
दुःप्रमार्जितसज्झा संथार अतिचार. (अप्पडिलेहिये
दुप्पडिलेहिय उच्चारपासवण भूमि के०) एवी रीतेज
वडीनीत, लघुनीत परठवानी भूमिका तेनो त्रीजो
अतिचार जाणवो, तथा (अप्रतिलेषित दुप्रतिलेषित

अप्पमज्झिय दुप्पमज्झिय उच्चार पासवणभूमि के०) वडीनीत लघुनीत परठवानी भूमिका, पुजी नही अथवा कांइ पुजी, कांइ नही पुंजी ते चोथो अतिचार तथा (पोसहस्स के०) पोसह कीधो छे तेने (सम्म के०) सम्यक् प्रकारे एटले रूडे प्रकारे (अणणु पालणया के०) अनुपालना कीधी न होय पोसहमां भोजनादिक चिंता कीधी होय, जे क्यारे पोसह पूर्ण थाशे अने क्यारे हुं भोजन करीश? इत्यादिक पांचमो अतिचार जाणवो ए पांच अतिचार मांहेलो जे कोइ अतिचार लाग्यो होय (तस्स मिच्छामिदुक्कड के०) तेनु कीधेलु पाप मने निष्फल थाजो ॥ जातां तीन वार आवस्सही न कीधी होय, आवतां तीन वार निसही न कीधी होय, थोडी जायगा पुजी होय, घणी जायगा न पूजी होय काजो परठीने तीनवार वोसिरे वोसिरे न कीधो होय, परठवतां भूमिना धणीनी आज्ञा न मागी होय, पोसहमा निद्रा विकथादिक प्रमाद सेव्यो होय, तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ १८ ॥ इति ॥

१२ बारमुं अतिथि संविभागव्रत, समणे निग्गंथे, फासुअं एसणिज्जेणं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमेणं, वच्छ, पडिग्गह, कंबल, पायपुच्छणेणं, पाडिहारिय, पीड, फलग, सिज्झासंथारएणं, ओसह भेसज्जेणं, पडिलाभेमाणे, विहरामि, एहवी सद्दहणा, परूपणा, फरसनाये करी शुद्ध, एहवा बारमा अतिथि संविभागव्रतना, पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं, सचित्तनिक्खेवणिया, सचित्तपिहणिया, कालाइक्कमे, परोवएसे, मच्छरियाए, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १९ ॥ इति ॥

अर्थः—बारमुं (अतिथि के०) जेने तिथिनुं तहेवारनुं कांइ मुकरर नथी जे अमुक तिथिये अथवा अमुक तहेवारने दिवसे आहार लेवा आवशे, परंतु अणचिंत्या आवे एहवा साधुने वास्ते, (संविभाग व्रत के०) पोताना माटे नीपजावेला आहारमांथी संविभाग करवो तेनुं व्रत एटले आहार करती वखत चिंतवणा करवी जे (समणेनिग्गंथे के०) साधु निर्ग्रंथने, (फासुअं के०) प्राशुक एटले अचित्त (एसणिज्जेणं

के०) सूजतुं एटले दोष रहित साधुने कल्पे एवु (असणं के०) अन्न, (पाणं के०) पाणी, (खाइमं के०) मेवो सुखडी प्रमुख, (साइमेण के०) स्वादिम ते मुखवास, ए चार प्रकारनो आहार तेमज बीजां पण साधुने खपवायोग्य वस्तुनां नाम कहे छे वत्थ के०) वस्त्र, (पडिग्गह के०) पात्र, (कंबल के०) कांबली, (पायपुच्छणेण के०) पगने लूछवानुं पोछणुं (पाडिहारिय के०) जे वस्तु साधुने आपीने पाछी लेवाय तेवी वस्तु ते कहे छे, (पीढ के०) बाजोठ (फलग के०) पाटीयुं (सिज्जा के०) वस्ती, पाट, स्थानक (संथारएणं के०) तृण प्रमुखनी पथारी, (उसह के०) एक वस्तु ते औषध, (भेसज्जेण के०) घणी वस्तु मलवाथी थयेला एवी गोली वगेरे औषधो तेने (पडिलाभेमाणे के०) प्रतिलाभ थकां, आपतां थकां (विहरामि के०) विचरशुं, (एहवी सद्दहणा के०) श्रद्धा (परूपणा के०) उपदेश फरसनाये करी शुद्ध एहवा बारमा अतिथिसंविभाग व्रतना पंच अइयारा, जाणियव्वा, न समायरियव्वा,

तं जहा ते आलोउं, (सचित्तनिक्खेवणिया के०) साधुनी गोचरीनी वेलाये, आपवा योग्य सूजती वस्तु ोय तेने वीजी सचित वस्तुनी उपर राखी होय (सचित्तापेहणिया के०) आपवा योग्य अचित वस्तु होय, तेने सचित्त वस्तुये करी ढांकी मूकी होय (कालाइक्कमे के०) कालातिक्रम ते साधुने वहोरवानो वखत टालीने पछी अन्नपाननी निमंत्रणा करी होय (परोवएसे के०) दान देवा योग्य वस्तु पोतानी होय तेम छतां तेने न देवानी बुद्धिये पारकी कही होय, (मच्छरियाए के०) ईर्ष्याथी अनेरानुं दान देखी तेनी स्पर्द्धाये दान दीधुं होय (तस्स मिच्छामि दुक्कडं के०) तेनुं लागेलुं पाप मने निष्फल थाजो ॥ १९ ॥ इति ॥

पीत्थे "संलेषणा" को पाठ कहीजे, ते कहे छेः—

अपच्छिम मरणांतिय संलेहणा, झूसणा, आराहणा. पोपधशाला, पूंजीने, उच्चार पासवण भूमिका, पडिलेहीने, गमणागमणे पडिक्कमिने, दर्भादिक संथारा संथारीने, दर्भादिक संथारो दुरुहिने, पूर्व तथा

उत्तरदिशि, पल्यकादिक आमणे वेसोने, करयल संप-रिग्गहियं, सिरसावत्तं, मच्छए अजली, त्ति कट्टु, एवं वयामी नमोत्थुगं, अरिहंताणं, भगवंताणं, जावसंप-त्ताणं, एम अनंता सिद्धजीने नमस्कार करोने, जय-वता वर्त्तमान तीर्थंकरने नमस्कार करीने, पोताना धर्माचार्यने नमस्कार करीने, साधु प्रमुख चारे तीर्थ खपावीने, सर्व जीवराशि खमावीने, पूर्वे जे व्रत आ-दर्यां छे, तेना जे अतिचार दोष लाग्या होय, ते सर्वने आलोइ पडिक्मी, निंदी निःशल्य थईने, सव्वं पाणाइवाय पच्चक्खामि, सव्व मुसावायं पच्चक्खामि, सव्व अदिन्नादाण पच्चक्खामि, सव्व मेहुणं पच्चक्खा-मि सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि सव्वं कोहं माणं जाव मिच्छा दंसण सल्ल, सव्व अकरणिज्ज पच्चक्खामि, जावजीवाए तिविह, तिविहेण, न करेमि, न कारवे-मि, करंतंपि नाणुजाणामि. मणसा, वयसा, कायसा एम अढारे पाप स्थानक पच्चक्खीने सव्वं असणं, पाण खाइम साइम, चउव्विहंपि आहारं, पच्चक्खामि, जावजीवाए एम चारे आहार पच्चक्खीने जपीयं,

सीने पछी (करयल के०) बे हाथ, (संपरिग्गहि यं के०) जोडीने, (सिरसावत्तं के०) मस्तके आ-वर्त्तन करीने, (मच्छए अंजली त्ति कट्टु के०) माथा उपर बे हाथ जोडेला राखी, (एवं वयासी के०) एम कहे जे, (नमुत्थुणं के०) नमस्कार हो, (अ-रिहंताणं के०) श्री अरिहंतने, (भगवंताणं के०) भगवंतने, (जावसंपत्ताणं के०) यावत् संपत्ताणं एटले मुक्तिने पाम्या. त्यां सुधिनो पाठ जे सामा-यिकने अंते छे तेटलो कहेवो, एम अनंता सिद्धजीने नमस्कार करीने पछी पोताना धर्माचार्यने नमस्कार करीने, साधु, साधवी, श्रावक, श्राविकारूप चारे तीर्थने खमावीने, सर्व जीवराशि खमांवीने, पूर्वे जे व्रत आदर्यां छे, तेनां जे अतिचार दोष लागा होय ते सर्व संभारी संभारीने गुर्वादिक पासे (आलोइ के०) प्रकाशी तेथी (पडिक्कमि के०) निवृत्तिने (निंदी के०) तेनी आत्मानी साखे निंदा करीने, (निःशल्लथइने के०) शल्य रहित थइने (सव्वंपा णाइवायं के०) सर्व प्रकारे जीव हिंसा करवानां,

(पच्चक्खामि के०) पच्चक्खाण करुं छुं, (सव्वं मुसा वाय पच्चक्खामि के०) सर्व प्रकारनुं जूठु वोलवाना पच्चक्खाणने, (सव्वं अदिन्नादाण पच्चक्खामि के०) सर्व प्रकारनुं अणदीधुं लेवाना पच्चक्खाणने करुं छुं (सव्वं मेहुणं पच्चक्खामि के०) सर्व प्रकारे मैथुन, सेववानुं पच्चक्खाण करुं छु, (सव्वं परिग्गह पच्चक्खामि के०) सर्वथा नवप्रकारना परिग्रह राखवाने पच्चक्खुं छुं (सव्व कोहं के०) सर्व क्रोध (माण के०) सर्व मानथी मांडीने (जावमिच्छा दंसण सल्लं के०) यावत् मिथ्या दरिसण शैल्य पर्यंत १८ पाप स्थान क (सव्व अकरणिज्ज के०) सर्व नही करवा योग्य तेने, (पच्चक्खामि के०) पच्चक्खुंछुं, (जावजीवाएके०) जाव जीव सुधी, (तिविहं के०) तीन करणे करी, (तिविहेण के०) तीन जोगे करी, (न करेमि के०) हु करुं नहि (न कारवेमि के०) वीजा पासे करावुं नही, (करंतंपिनाणुजाणामि के०) कोइ पाप करे तेने पण हु रुडु जाणुं नही, (मणसा के०) मने करी (वयसा के०) वचने करी (कायसा के०)

कायाये करी एम अढारे पाप स्थानक पच्चक्खीने) (सव्वं के०) सर्व (असणं के०) अन्न (पाणं के०) पाणी (खाइमं के०) मेवो (साइमं के०) स्वादिम सुखवास ए (चउविहंपि आहारं पच्चक्खामि के०) चार प्रकारना आहारने पच्चक्खीने इहां निरागारी एटले साधु अनशन करतो होय तो ए रीते पाठ कहे. अने सागारी एटले श्रावक जो अनशन करतो होय तो पोतानी मरजी माफक जेहवो करे, तेवो आगार राखे. (जावजीवाए के०) ज्यां सूधी एम चारे आहार पच्चक्खीने, (जं के०) जे (पियं के०) प्रिय, हतुं एवुं (इमं सरीरं के०) आ मारुं शरीर, (इट्ठं के०) वारंवार वांछतुं हतुं माटे इष्टकारी, (कंतं के०) कांतिवंत, एटले विशिष्ट वर्णादिके करी युक्त (पीयं के०) प्रीतिकारी एटले इंद्रियने हर्षनुं करणहार (मणुन्नं के०) मनोज्ञ एटले मनने गमतुं (मणामं के०) मनने सदाइ अत्यंत वल्लभ, लागे माटे मणामं ए पांच शब्दनो अर्थ एकार्थ जाणवो, (धिज्जं के०) धीरज देणार, (विस्सासियं के०) वि-

श्वासनुं उपजावनार, (समयं के०) मानवा योग्य, (अणुमयं के०) विशेषे मानवा योग्य, (भंडकरडसमाणं के०) आभरणना डाबला समान, व्हालु (रयणकरडगभूयं के०) रत्नना करंडीया समान, (माणसिय के०) रखे मने शीत लागे, एटले ढाढ वाय, एम मानतो (माणं उन्ह के०) रखे मने ताप लागे, एम (मानतो माणं खूहा के०) रखे मने भूख लागे, एम मानतो (माण पिवासा के०) रखे मने तृषा लागे, (माणं वाला के०) रखे मुझने व्याल एटले सर्पादिक करडे, एम मानतो (माणं चोरा के०) रखे मने चारनो भय उपजे, (माण दसा के०) रखे मने डांस करडे, (माण मसगा के०) रखे मने मच्छर करडे, (माण वाहियं के०) रखे मने व्याधि उपजे (पित्तिय के०) रखे मने पित्त जागे, (सभीम कप्फिय के०) रखे मने भयकर श्लेष्म कफ उपजे, (सान्नि वाइय के०) रखे मने सन्निपात ते त्रिदोष थाय, (त्रिवहारोगायंका के०) रखे मने विविध प्रकारनो रोग उत्पन्न थाय, (परिसहा उव-

सग्गा के०) रखे मने वावीश जातिना परिसह तथा देवतादिकना करेला उपसर्ग उपजे, (फासा फुसंति के०) एवी रीतना पूर्वोक्त स्पर्शथी माहारा शरीरनी रक्षा करतो हतो (एवंपियणं के०) एवुं जे माहारुं प्रिय एटले वाहालुं, शरीर तेने (चरमेहिं के०) छेहला, (उस्सासनिस्सासेहिं के०) श्वासोच्छास सुधि, जीवना संवंध आश्रयी (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छुं, तजुं छुं. (त्ति कट्टु के०) एम कहीने एम शरीर वोसिरावीने ए शरीरनो संवंध तजी देइने (कालं अणवकंखमाणे के०) कालने जीववानी आशा तथा मरणनो भय अण वांछतो थको (विहरामि के०) विचरीश एहवी सद्दहणा परूपणा करिये, तिवारे फरशनाये करी शुद्ध एहवा अपच्छिम मरणांतिय संलेहणा झूसणा आराहणाना पंच अइयारा जाणियव्वा, न समाय रियव्वा, तं जहा ते आलोउं (इहलोगासंसप्पओगे के०) इह लोक संवंधि सुखनी वांछना करे के हुं चक्रवर्त्यादिक राजा थाउं, (परलोगासंसप्पओगे के०) परलोक संवंधि सुखनी इच्छा करे के

हुं देवता थाउ, इन्द्र थाउ, (जीवियासंसप्पओगे के०) जीवितव्यनी इच्छा करे के लोको म्हारो घणो सत्कार करे छे, माटे झाजुं जीवुं तो सारुं, (मरणासंसप्पओगे के०) मरणनी इच्छा करे के दुःख पामुं छुं, माटे तरत मरी जाउ तो दुःखमांथी छुटु (कामभोगासंसप्पओगे के०) काम भोगनी वांछना करे जे आ तपना प्रभावे हुं रूडा रसादि सांसारिक कामभोग पामुं ! एवी रीतनी जे आशंसा एटले वांछारूप प्रयोग एटले जे मननो व्यापार तेने कामभोगाशंसप्रयोग अतिचार कहीये (तस्स मिच्छामि दुक्कडं के०) तेनु पाप मने निष्फल थाओ ॥ २० ॥ इति ॥

एम समकित पूर्वक बारव्रत संलेषणा सहित एहने विषे जे कोइ अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अणाचार जाणतां अजाणतां मन वचन कायाये करी सेव्यो होय, सेवराव्यो होय, सेवता प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते अनंता सिद्ध केवलीनी साखे मिच्छामि दुक्कडं ॥ २१ ॥

अर्थः—एना अर्थमां नियम लीधेली वस्तुने फरी सेववाना दोष चार प्रकारे छे, ते कहे छे. १ अतिक्रम ते नियम लीधेली वस्तुने फरी भोगववानी इच्छा करवी, २ व्यतिक्रम ते नियम लीधेली वस्तुने लेवा माटे चालवुं, ३ अतिचार ते नियम लीधेली वस्तु भोगववा माटे हाथमां लेवी, अनाचार ते नियम लीधेली वस्तुने भोगववी ॥ २१ ॥

एम कहीने पछी १८ पाप स्थानक कहीजे; तेनो पाठ प्रथम लखायेलो छे, माटे अहीं अर्थज लखीये छैये. १ (प्राणातिपात के०) जीवनी हिंसा, २ (मृषावाद के०) जूठुं बोलवुं, ३. (अदत्तादान के०) चोरी करवी, ४ (मैथुन के०) मैथुन सेववुं, ५ (परिग्रह के०) परिग्रहनी वांछा, ६ (क्रोध के०) रोष, ७ (मान के०) अहंकार. ८ (माया के०) कपट, ९ (लोभ के०) लोभ, १० (राग के०) प्रीति, ११ (द्वेष के०) द्वेषभाव, १२ (कलह के०) क्लेश, १३ (अभ्याख्यान के०) खोटुं आल देवुं, १४ (पैशुन्य के०)

पारकी चाडी करवी, १५ (परपरिवाद् के०) अने-
राना अवगुण बोलवा, १६ (रतिअरति के०) हर्ष
शोक, १७ (मायामोसो के०) कपट सहित जूंठुं
बोलवुं, १८ (मिथ्यादंसण सल्ल के०) आभिग्रहिक
अनाभिग्रहिकादिक पांच प्रकारनां जे मिथ्यात्व छे
तेने सेववाना जे परिणाम ते. एव अढारे पाप स्था-
नक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय, सेवता प्रत्ये अनु-
मोद्यां होय, ते अनता सिद्ध केवलीनी साखे मिच्छा-
मि दुक्कड ॥ २१ ॥ इति ॥

विधि.—पछी "इच्छामि ठामि' नी पाटी कहीजे,
आहीं सुधी जिमणे गोडो उचो राखीने वेसीजे, पछी
उभो थइ हाथ जोडीने " तस्स धम्मस्स " नी पाटी
कहीजे, ते कहे छे—

तस्स धम्मस्स केवलिपणत्तस्स अब्भुट्ठिओमि,
आराहणाए, विरओमि विराहणाए तिविहेणं पडिक्कतो,
वंदामि जिणे चउव्वीस ॥ २२ ॥

अर्थ—(तस्स धम्मस्स केवलिपणत्तस्स के०)

ते केवलिभाषित एवा श्रावक धर्मने, (आराहणाए के०) आराधवाने माटे (अब्भुट्ठिओमि के०) हुं सारी रीते पालण करवाने उठ्यो छुं, अने ते धर्मनी (विराहणाए के०) विराधना करवाथकी (विरओमि के०) हुं विरम्यो छुं, एटले निवर्त्यो छुं (तिविहेणं के०) त्रिविधे करी, एटले मन, वचन अने कायाये करी, (पडिक्कंतो प्रतिक्रांत थको एटले अतिचार पापथकी निवर्त्यो थको (जिणेचउव्वीसं के०) चोवीश जिन प्रत्ये (वंदामि के०) हुं वांदुं छुं ॥ २२ ॥

विधिः—पछी "इच्छामि खमासणा"री पाटी दोय वार विधि पूर्वक कहीजे, पछी आज्ञा लहीने उक्कडु आसणे वेसी बेहु हाथ गोडानी वचाले राखी धरतीये मस्तक, लगावीने "पांच पदारी वंदणा" करीये ते कहे छेः—

इहां प्रथम नवकार कहेवो, पछी १ पहिले पदे श्री अरिहंतजी ते जघन्यथी वीश तिर्थंकरजी, उत्कृष्टा एकसो सित्तेर देवाधिदेवजी तेमांहि वर्त्तमान

(पच्चक्खामि के०) पच्चक्खाण करु छुं, (सव्वं मुसा वायं पच्चक्खामि के०) सर्व प्रकारनुं जूठुं बोलवाना पच्चक्खाणने, (सव्वं अदिन्नादाणं पच्चक्खामि के०) सर्व प्रकारनु अणदीधु लेवाना पच्चक्खाणने करुं छुं (सव्वं मेहुण पच्चक्खामि के०) सर्व प्रकारे मैथुन, सेववानुं पच्चक्खाण करुं छुं, (सव्वं परिग्गह पच्चक्खामि के०) सर्वथा नवप्रकारना परिग्रह राखवाने पच्चक्खुं छुं (सव्व कोहं के०) सर्व क्रोध (माण के०) सर्व मानथी मांडीने (जावामिच्छा दंसण सल्ल के०) यावत् मिथ्या दरिसण शैल्य पर्यंत १८ पाप स्थान क (सव्व अकरणिज्जं के०) सर्व नही करवा योग्य तेने, (पच्चक्खामि के०) पच्चक्खुंछुं, (जावजीवाएके०) जाव जीव सुधी, (तिविहं के०) तीन करणे करी, (तिविहेण के०) तीन जोगे करी, (न करेमि के०) हुं करु नाहि (न कारवेमि के०) बीजा पासे करावुं नही, (करंतंपिनाणुजाणामि के०) कोइ पाप करे तेने पण हु रूडु जाणुं नही, (मणसा के०) मने करी (वयसा के०) वचने करी (कायसा के०)

कायाये करी एम अढारे पाप स्थानक पच्चक्खीने) (सव्वं के०) सर्व (असणं के०) अन्न (पाणं के०) पाणी (खाइमं के०) मेवो (साइमं के०) स्वादिम सुखवास ए (चउविहंपि आहारं पच्चक्खामि के०) चार प्रकारना आहारने पच्चक्खीने इहां निरागारी एटले साधु अनशन करतो होय तो ए रीते पाठ कहे. अने सागारी एटले श्रावक जो अनशन करतो होय तो पोतानी मरजी माफक जेहवो करे, तेवो आगार राखे. (जावजीवाए के०) ज्यां सूधी एम चारे आहार पच्चक्खीने, (जं के०) जे (पियं के०) प्रिय, हतुं एवुं (इमं सरीरं के०) आ मारुं शरीर, (इट्ठं के०) वारंवार वांछतु हतुं माटे इष्टकारी, (कंतं के०) कांतिवंत, एटले विशिष्ट वर्णादिके करी युक्त (पीयं के०) प्रीतिकारी एटले इंद्रियने हर्षतुं करणहार (मणुन्नं के०) मनोज्ञ एटले मनने गमतुं (मणामं के०) मनने सदाइ अत्यंत वल्लभ, लागे माटे मणामं ए पांच शब्दनो अर्थ एकार्थ जाणवो, (धिज्जं के०) धीरज देणार, (विसासियं के०) वि-

श्वासनुं उपजावनार, (समयं के०) मानवा योग्य, (अणुमयं के०) विशेषे मानवा योग्य, (भंडकरंडसमाणं के०) आभरणना डाबला समान, व्हालु (रयणकरंडगभूय के०) रत्नना करंडीया समान, (माणसियं के०) रखे मने शीत लागे, एटले ढाढ वाय, एम मानतो (माण उन्ह के०) रखे मने ताप लागे, एम (मानतो माण खूहा के०) रखे मने भूख लागे, एम मानतो (माण पिवासा के०) रखे मने तृषा लागे, (माणं वाला के०) रखे मुझने व्याल एटले सर्पादिक करडे, एम मानतो (माण चोरा के०) रखे मने चोरनो भय उपजे, (माणं दसा के०) रखे मने डांस करडे, (माण मसगा के०) रखे मने मच्छर करडे, (माण वाहियं के०) रखे मने व्याधि उपजे (पित्तिय के०) रखे मने पित्त जागे, (सभीम कप्फिय के०) रखे मने भयकर श्लेष्म कफ उपजे, (सन्नि वाइयं के०) रखे मने सन्निपात ते त्रिदोष थाय, (विवहारोगायका के०) रखे मने विविध प्रकारनो रोग उत्पन्न थाय, (परिसहा उव-

सग्गा के०) रखे मने वावीश जातिना परिसह तथा देवतादिकना करेला उपसर्ग उपजे, (फासा फुसंति के०) एवी रीतना पूर्वोक्त स्पर्शथी माहारा शरीरनी रक्षा करतो हतो (एवंपियणं के०) एवुं जे माहारुं प्रिय एटले वाहालुं, शरीर तेने (चरमेहिं के०) छेहला, (उस्सासनिस्सासेहिं के०) श्वासोच्छ्वास सुधि, जीवना संवंध आश्रयी (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छुं, तजुं छुं. (त्ति कट्टु के०) एम कहीने एम शरीर वोसिरावीने ए शरीरनो संबंध तजी देइने (कालं अणवकंखमाणे के०) कालने जीववानी आशा तथा मरणनो भय अण वांछतो थको (विहरामि के०) विचरीश एहवी सद्दहणा परूपणा करिये, तिवारे फरशनाये करी शुद्ध एहवा अपच्छिम मरणांतिय संलेहणा झूसणा आराहणाना पंच अइयारा जाणियव्वा, न समाय रियव्वा, तं जहा ते आलोउं (इहलोगासंसप्पओगे के०) इह लोक संवंधि सुखनी वांछना करे के हुं चक्रवर्त्यादिक राजा थाउं, (परलोगासंसप्पओगे के०) परलोक संवंधि सुखनी इच्छा करे के

हु देवता थाउं, इंद्र थाउ, (जीवियासंसप्पओगे के०) जीवितव्यनी इच्छा करे के लोको महारो घणो सत्कार करे छे, माटे झाजु जीवुं तो सारुं, (मरणासंसप्पओगे के०) मरणनी इच्छा करे के दु:ख पामुं छुं, माटे तरत मरी जाउं तो दु:खमांथी छुटुं (कामभोगासंसप्प-ओगे के०) काम भोगनी वांछना करे जे आ तपना प्रभावे हुं रूडा रसादि सासारिक कामभोग पामुं ! एवी रीतनी जे आशंसा एटले वांछारूप प्रयोग एटले जे मननो व्यापार तेने कामभोगाशसप्रयोग अतिचार कहीये (तस्स मिच्छामि दुक्कडं के०) तेनु पाप मने निष्फल थाओ ॥ २० ॥ इति ॥

एम समकित पूर्वक बारव्रत संलेषणा सहित एहने विषे जे कोइ अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अणाचार जाणतां अजाणतां मन वचन कायाये करी सेव्यो होय, सेवराव्यो होय, सेवता प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते अनंता सिद्ध केवलीनी साखे मिच्छामि दुक्कडं ॥ २१ ॥

ते केवलिभाषित एवा श्रावक धर्मने, (आराहणाए के०) आराधवाने माटे (अप्भुट्ठिओमि के०) हुं सारी रीते पालण करवाने उठ्यो छुं, अने ते धर्मनी (विराहणाए के०) विराधना करवाथकी (विरओमि के०) हुं विरम्यो छुं, एटले निवर्त्यों छुं (तिविहेणं के०) त्रिविधे करी, एटले मन, वचन अने कायाये करी, (पडिक्कंतो प्रतिक्रांत थको एटले अतिचार पापथकी निवर्त्यों थको (जिणेचउव्वीसं के०) चोवीश जिन प्रत्ये (वंदामि के०) हुं वांदु छुं ॥ २२ ॥

विधिः—पछी "इच्छामि खमासणा"री पाटी दोय वार विधि पूर्वक कहीजे, पछी आज्ञा लहीने उक्कडु आसणे वेसी बेहु हाथ गोडानी वचाले राखी धरतीये मस्तक, लगावीने "पांच पदारी वंदणा" करीये ते कहे छेः—

इहां प्रथम नवकार कहेवो, पछी १ पहिले पदे श्री अरिहंतजी ते जघन्यथी वीश तिर्थंकरजी, उत्कृष्टा एकसो सित्तेर देवाधिदेवजी तेमांहि वर्त्तमान

काले *वीश विहरमानजी माहाविदेह क्षेत्रमांही विचरे छे, एक हजार आठ लक्षणना धरणहार, चोत्रीश अतिशय, पेंतीस वाणीये करी विराजमान छे, बार गुणेंकरी सहित, अढार दोषथकी रहित, चोसठ इंद्रना वंदिनिक पूजनिक, अनंतज्ञान, अनंतदर्शन अनंत चारित्र, अनंत बलवीर्य, अनत सुख, दिव्यध्वनि, भामडल, स्फाटिक सिंहासन, अशोकवृक्ष, कुसुमवृष्टि, देवदुंदुभि, छत्र धराय, चामर विंझाय, पुरषाकार पराक्रमना धरणहार, अढ्ढारद्वीप पंदर क्षेत्रमां विचरे तथा जघन्य तो दोय क्रोड केवली, उत्कृष्टा नव क्रोड केवली, केवलज्ञान, केवलदर्शनना धरणहार, सर्व द्रव्य

---

*१ श्रीश्रीमधरस्वामी २ श्रीयुगमंदरस्वामी ३ श्रीबाहुस्वामी
४ श्रीसुबाहुस्वामी ५ श्रीसुजातस्वामी ६ श्रीस्वयंप्रभस्वामी
७ श्रीरुपभाननस्वामी ८ श्रीअनंतवीर्यस्वामी ९ श्रीसुरप्रभस्वामी
१० श्रीविशालप्रभस्वामी ११ श्रीवज्रधरस्वामी १२ श्रीचंद्राननस्वामी
१३ श्रीचंद्रबाहुस्वामी १४ श्री भुजगस्वामी १५ श्रीईश्वरस्वामी
१६ श्री नेमिप्रभस्वामी १७ श्री वीरसेनस्वामी १८ श्रीमहाभद्रस्वामी
१९ श्री देवजसस्वामी २० श्रीअजितवीर्यस्वामी

क्षेत्रकाल भावना जाणणहार ॥ सवैय्या ॥ नमुं सिरि अरिहंत, करमांको कियो अंत, हुवा सो केवलवंत, करुणा भंडारी हे ॥ अतिसे चोतीस धार, पेंतिस वाणी उच्चार, समजावे नर नार, पर उपगारी हे ॥ शरीर सुंदराकार, सूरज सो झल्लकार, गुण हे अनंत सार, दोष परिहारी हे ॥ केत हे तिलोकरिक्ख, मन वच काय करी, लली लली वारंवार, वंदणा हमारी हे ॥ १ ॥ एसा अरिहंत भगवंत दीनदयाल महाराजको दिवस संबंधी अविनय, आशातना, कीधी होय तो हाथ जोडी, मान मोडी, काय संकोडी, वारंवार खमावुं छुं, मत्थएण वंदामि १००८ वार नमस्कार करुं छुं. "तिक्खुत्तो आयाहिणं, पयाहिणं वंदामि नमंसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं, पज्जवासामि " आप मांगलिक छो, उत्तम छो, हे स्वामिनाथ ! आपको इणभवे परभवे भवोभवे सदाकाल शरणो होजो ॥ ३२ ॥ इति प्रथम पद संपूर्ण ॥

२ बीजे पदे श्री सिद्धभगवंत महाराज ते पन्नर

भेदे अनंता सिद्ध छे, आठ कर्म खपावीने मोक्ष पहोता छे, १ तीर्थ सिद्धा, २ अतीर्थ सिद्धा, ३ तीर्थंकर सिद्धा, ४ अतीर्थंकर सिद्धा, ५ स्वयंबुद्ध सिद्धा, ६ प्रत्येक बुद्ध सिद्धा, ७ बुद्धबोवित सिद्धा, ८ स्त्रिलिंगसिद्धा, ९ पुरुपलिग सिद्धा, १० नपुंसकलिंग सिद्धा, ११ स्वलिग सिद्धा, १२ अन्यलिंग सिद्धा, १३ गृहस्थलिंग सिद्धा, १४ एक सिद्धा, १५ अनेक सिद्धा, जिहां जन्म नही, जरा नहीं, मरण नहि भय नही, रोग नही, सोग नही, दुःख नही, दारिद्र नही, कर्म नही, काया नही, मोह नही, माया नही, चाकर नही, ठाकर नही, भूख नही, तृपा नही, ज्योतिर्में ज्योति विराजमान, सकल कारज सिद्ध करीने चउदे प्रकारे पन्नरे भेदे अनंता सिद्ध भगवंत हुवा, अनंत सुखमां लीन, अनत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, क्षायिकसमकित, निराबाध, अटल अवगाहना, अमूर्ति अगुरुलघु, अनंत वीर्य, आठ गुणेकरी सहित ॥सवैय्या॥ सकल करम टाल, वश कर लीयो काल, मुगतिमे रह्या माल, आतमाका तारी हे॥ देखत सकल भाव. हुवा हे

जगत राव, सदाही खायिक भाव, भये अविकारी हे॥ अचल अटल रूप, आवे नवि भवकूप, अनुप सरूप ऊप, एसे सिद्धधारी हे॥ केत हे तिलोकरिक्ख, वतावो ए वास प्रभु, सदाही उगत सूर, वंदणा हमारी हे ॥२॥ एसा सिद्ध भगवंतजी माहाराज आपकी दिवस संवंधी अविनय आशातना कीधी होय तो हाथ जोडी मान मोडी काय संकोडी वारंवार खमावुं छुं, तिक्खुत्ताना पाठसूं मत्थएण वंदामि नमस्कार करुं छुं. जावत् भवोभव शरणुं होजो ॥ २५ ॥ इति ॥

३ त्रीजे पदे श्रीआचारजजी छत्तीस गुणेकरी विराजमान, पांच महाव्रत पाले, पांच आचार पाले, पांच इंद्रिय जीते, चार कषाय टाले, नव वाड शुद्ध ब्रह्मचर्यना पालणहार, पांच समितिये समित्ता, तीन गुप्तिये गुप्ता, आठ संपदा सहित ॥ सवैय्या ॥ गुण हे छत्तीस पूर, धरत धरम ऊर, मारत करम क्रूर, सुमति विचारी हे॥ शुद्धसो आचारवंत, सुंदर हे रूप कंत, भणियो सवि सिद्धंत, वांचणी सुप्यारी हे ॥ अधिक मधुरव क्षेइ नही लोपे केण, सकल जीवाका सेण; कीरत

अपारी हे ॥ केत हे तिलोकरिक्ख, 'हितकारी देत सीख, एसा आचारज ताकुं, वंदणा हमारी हे ॥ १॥ एसा आचारज न्यायपक्षी, भद्रकपरिणामी, परमपूज्य, कल्पनिक अचित्त वस्तुका ग्रहणहार, सचित्तका त्यागी, वैरागी, महागुणी, गुंणका अनुरागी, सोभागी एहवा श्री आचारजजी माहाराज आपकी दिवस सबंधि अविनय आशातना कीधी होय तो हाथ जोडी मान मोडी काया संकोडी वारंवार खमावुं छुं. १००८ वार तिक्खुत्ताना पाठथी मत्थएण वंदामि एटले नमस्कार करु छुं यावत् भवोभव शरणुं होजो ॥ २५॥ इति त्रीजुं पद संपूर्ण॥

४ चोथे पदे श्री उपाध्यायजी महागज पच्चीश गुणे करी सहित छे, ते पच्चीश गुण कहे छे ? इगियारा अंगना भणणहार. ते अगीयार अंग कहे छे श्री आचारंगजी, सुयगडांगजी, ठाणांगजी, समवा यांगजी, भगवतीजी, ज्ञाताधर्मकथाजी, उपासकदसांगजी, अंतगडदसांगजी, अनुत्तरोववाईजी, 'प्रश्नव्याकरणजी, विपाकसूत्रजी ॥ ए इग्यारा अगनो

अर्थ पाठ संपूर्ण जाणे. (१२ उपांग भणे, ते.) उव्व-वाइजी, रायप्पसेणीजी, जिवाभिगमजी, पन्नवणाजी जंबुद्वीपपणत्ती, चंदपणत्ती, सूरपणत्ती, निरयाव-लिया, कप्पविडंसिया, पुप्फिया, पुप्फचूलिया, वन्हि-दिशा (४ मूल सूत्र) उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, नंदीसूत्र, अनुयोगद्वार (४ छेद ग्रंथ) दशाश्रुत स्कंध, वृहत्कल्प, व्यवहार, निशीथ अने वत्तीसमुं आवश्यक ॥ आदि देइ अनेक ग्रंथना जाणनार, चौद पूर्वना पाठी, सात नय, निश्चय व्यवहार, चार प्रमाणादिके करी स्वमत तथा अन्यमतका जाण. मनुष्य अथवा देवता कोइ पण जेने विवादमां छल-वाने समर्थ नही, जिन नही पण जिन सरिखा, केवली नही पण केवली सरिखा ॥ सवैय्या ॥ पढत इग्यारा अंग, करमासूं करे जंग, पाखंडीको मान भंग, करण हुस्यारी हे ॥ चऊद पूरवधार, जानत आगमसार, भविनके सुखकार, भ्रमता निवारी है॥ पढावे भविक जन, थिर करदेत मन, तप करी तावे तन, ममता निवारी है ॥ केत हे तिलोकरिक्ख,

ज्ञानभानु परतिक्ख, एसे उपाध्याय, ताकुं वंदणा हमारी हे ॥ १ ॥ एसा श्री उपाध्यायजी माहाराज मिथ्यात्वरुप अंधकारना मेटणहार, समकितरूप उद्योतना करणहार, धर्मथकी डगता प्राणीने थिर करे, सारए, वारए, धारए, इत्यादिक अनेक गुण सहित छे, एहवा जे श्री उपाध्यायजी माहाराज आपकी दिवस सबंधी अविनय आशातना कीधी होय तो हाथ जोडी मान मोडी, काया संकोडी, वारंवार खमावुं छुं. १००८ वार तिक्खुत्ताना पाठथी मत्थएण वंदामि एटले नमस्कार करुं छुं. यावत् भवोभव शरणुं होजो॥ २६ ॥ इति चोथुं पद सपूर्ण ॥ ४ ॥

(५) पांचमे पदे श्री साधुजी ते पोताना धर्माचार्यजी (आ ठेकाणे आप आपका गुरु माहराजको नाम लेणो) आद देइने जघन्य तो दोय हजार क्रोड साधु साधवी, उत्कृष्ठा नव हजार क्रोड साधु साधवी, अट्ठाई द्वीप पन्नरे क्षेत्रमे जयवंता विचरे छे, ते साधुजी केहवा छे ? पांच महाव्रतको पालणहार, पांच इंद्रियोका जितणहार, चार कपायका टालण-

हार, भाव सच्चे, कर्ण सच्चे, जोग सच्चे. क्षमावंत, वैराग्यवंत, मन समाधारणीया, वयसमाधारणीया, कायसमाधारणीया, नाण संपन्ना, दंसणसंपन्ना, चारित्तसंपन्ना, वेदणीसमा अहियासनिया, मरणांतिसमा अहिया सनिया, एहवा सत्तावीश गुणे करी सहित, बारे भेदे तपका करणहार, सत्तरे भेदे संयमना पालणहार, तेत्तीस आशातनाका टालणहार, बेहेतालीश दोष टालीने आहार पाणीका लेवणहार, छेतालीस दोष टालीने भोगवणहार, बावन अनाचीर्णके टालणहार, तेडया आवे नही, नेथ्या जिमे नही, सचित्तका त्यागी, अचित्तका भोगी, बावीसपरिसहके जितणहार, अनेकलब्धिका धरणहार, लोचको करणो अणवाणेपगे चालणो, इत्यादिक काय क्लेशका करणहार, मोह ममता रहित ॥ सवैय्या ॥ आदरी संजम भार, करणि करे अपार, सुमति गुपतिधार, विकथा निवारी हे ॥ जयणा करे छ काय, सावद्य न बोले वाय, बुझाइ कषाय लाय, किरिया भंडारी हे ॥ ज्ञान भणे आठो जाम, लेवे भगवंत नाम, ध-

रमको करे काम, ममताके मारी हे॥ केत हे तिलोक रिक्ख, करमांको टाले विख, एसा मुनिराज ताकु वदणा हमारी हे ॥ १ ॥ एहवा श्री मुनिराज महाराज आपकी दिवस सवधी अविनय आशातना कीधी होय तो हाथ जोडी, मान मोडी, काया संकोडी, वारवार खमावु छु १००८ वार तिक्खुताना पाठसुं मत्थएण वंदामि एटले नमस्कार करु छुं जावत सदाकाल शरणु होजो॥२७॥ इति पांचमु पद संपूर्ण ५

विधि.—पछी उभा थइ आयरिय उवज्झाए कहीजे, ते कहे छे.—

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ॥ ज मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि॥१॥ सव्वस्स समणसंघस्स भगवओ अंजलि करिय सीसे॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि॥ २॥ सव्वस्स जीव रासिस्स, भावओ धम्म निहिय नियचित्तो॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि॥ ३॥

अर्थ.—पचाचार संपन्न अथवा छत्रीश गुणे विराजमान, अर्थ दानना दातार, तेने(आयरिय के०) आचार्य

कहीये. तथा समीप रह्या अने आव्या जे शिष्यादिक तेने सूत्रना भणावनार अथवा पच्चीश गुणेकरी विराजमान तेने (उवज्झाए के०) उपाध्याय कहीये, तथा ग्रहण शिक्षा अने आसेवना शिक्षाने योग्य होय, तेने (सीसे के०) शिष्य कहीये तथा श्रद्धा अने प्ररूपणादिक गुणे करीने जे आपण सरिखा होय, एवा सरखा धर्मना पालनार, होय तेने (साहम्मिए के०) साधर्मिक कहीये, तथा जे एक आचार्यनो शिष्य संतान परिवार, तेने (कुल के०) कुल कहीये. तथा घणा आचार्यना शिष्य संतान परिवार, तेने (गणे के०) गण एटले समुदाय कहीये. (अ के०) अकार ते वली वली कहेवाने अर्थे छे, ए सर्वनी उपर. (मे के०) म्हारे जीवे (जे के०) जे (केइ के०) कोइ पण (कसाया के०) क्रोधादिक कषाय कीधा होय, ए कारणे (सव्वे के०) सर्व, ते आचार्यादिक प्रत्ये (तिविहेण के०) त्रिविधे करी एटले मन, वचन अने कायाये करी (खामेमि के०) हुं खामुं छुं ॥१॥ (सव्वस्ससमणसंघस्सभगवओ के०) सर्व श्रमण

संघरूप भगवंतना कीधा जे अपराध ते (अंजलीक रियसीसे के०) मस्तकनी उपर बे हाथ प्रत्ये करीने एटले स्थापीने नम्रीभुत थइने (सव्वंखमावइत्ता के०) ते सर्व अपराध प्रत्ये खमावीने, वली एम कहे के (खमामि सव्वस्सअहयंपि के०) ते सर्वना करेला अपराध प्रत्ये हु पण खमुं छु, एटले सम्यक्प्रकारे सहन करु छुं ॥ २ ॥ (सव्वस्सजीवरासिस्स के०) एकेंद्रियादिक सर्व जीवनो राशि एटले समूह तेनो कीधो जे मे अपराध, ते (भावओ के०) भावथी (सव्वंस्वमावइत्ता के०) सर्व अपराध प्रत्ये खमावीने, वली एम कहे के ते सर्व जीवोनी उपर समभाव ते रूप (धम्म के०) धर्म, तेने विषे (निहिय के०) निधित करयुं छे एटले स्थाप्युं छे, भावथकी आरोपण करयु छे, (नियचित्ता के०) निज चित्त एटले पोतानु मन जेणे एहवो (अहयंपि के०) हु पण (सव्वस्स के०) सर्व जीव राशिना कीधा जे अपराध, ते अपराध प्रत्ये (खमामि के०) खमुछु ॥३॥इति ॥२८॥

पछी अढाइ द्वीपनो पाठ कहीजे, ते कहे छे

अढाइ द्वीप तथा पन्नर खेत्र मांहि तथा बाहेर, श्रावक श्राविका दान देवे, शील पाले, तपस्या करे, भावना भावे, संवर करे, सामायिक करे, पोसह करे, पडिक्कमणा करे, तीन मनोरथ, चउदे नियम चिंतवे, एक व्रतधारी, जाव बारे व्रतधारी थका जे भगवंतकी आज्ञामांहि विचरे, अमाराथकी मोटाने हाथ जोडी, पगे लागीने, खमावुं छुं, छोटाने वारंवार खमावुं छुं॥ ३० ॥ इति भाषा ॥

विधिः—पछी "चोराशी लाख जीवा योनि" खमाववानो पाठ कहीये पछी "खामेमि सव्व जीवेनो" पाठ कहीये, ते लखीये छैये.

अथ चोराशीलाख जीवायोनि प्रारंभः ॥

॥ सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय, बे लाख बेंद्रिय, बे लाख तेंद्रिय, बे लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चौद लाख मनुष्य, एवं

चोराशी लाख जीवायोनिमांहे महारे जीवे जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सर्व्वें मने, वचने, कायाये करी १८. २४, १२० आढारे लाख चोवीश हजार एकसो वीश प्रकारे तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥३१॥ इति ॥ एनो अर्थ सुगम छे माटे लख्यो नथी.

अथ खामेमि सव्वजीवेनो पाठ प्रारभ ॥

॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥१॥ एव-महं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअ सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ३२ ॥

अर्थ.–(खामेमि सव्वजीवे के०) सर्व जीवो प्रत्ये हु खमावु छुं एटले अनंता भवने विषे पण अज्ञान मोहावृतत्वे करीने जीवोने जे पीडा कीधी होय, ते खमावु छु अने (सव्वेजीवा के०) ते सर्व जीवोपण (म के०) महारा अपराध प्रत्ये, (खमतु के०) खमो, माफ करो ए क्षमनक्षमापनमां कारण कहे छे के (सव्वभूएसु के०) सर्व भूतोने विषे

(मे के०) महारे (मित्ती के०) मैत्रिभाव छे, (के-णइ के०) कोइ जीवनी साथे (मज्झं के०) महारे (वेरं के०) वैरभाव (न के०) नथी ॥ १ ॥ (एवं के०) एम (आलोइअ के०) पाप आलोच्युं प्रकाश कीधुं (निंदिअ के०) आत्म साखे निंद्युं, (गरहिअ के०) गर्ह्युं (दुगंछिअं के०) दुगंछ्युं अत्यंत खोटुं जाण्युं, ते माटे (सम्मं के०) सम्यक् प्रकारे ए सम्यक् पद सर्व पदोनी साथे पूर्वमां योजवुं (ति-विहेण के०) त्रिविधे करी एटले मन वचन अने कायाये करीने (पडिक्कंतो के०) अतिचारादिक पाप थकी प्रतिक्रांतथको, एटले पाछो फरतो थको, अ-र्थात् पापने पडिक्कमतो थको, एवो जे (अहं के०) हुं ते (चउव्वीसंजिणे के०) चोवीश जिन प्रत्ये (वंदामि के०) वांदु छुं ॥

विधिः—पछी " अढारे पापस्थानक " कहीजे.

इति सामायिक, चउविसत्थो, वंदणा, पडिक्कमणुं, चार आवस्सग्ग पूरां थयां.

हवे तिक्खुत्ताना पाठसेति पांचमा आवस्सग्गनी आज्ञा लीजे

पछी "दैवसिकप्रायाश्चित्त' कहिजे, ते कहे छेः—

दैवसिक प्रायश्चित्त विशुद्धनार्थं करेमि काउस्सग्गं ॥ ३३ ॥

अर्थ.—(दैवसिक के०) दिवस संबधि, (प्रायश्चित्त के०) प्रायाश्चित्त (विशुद्धनार्थं के०) शुद्ध करवा माटे (काउस्सग्गं के०) कायोत्सर्ग एटले कायानी स्थिरता प्रत्ये (करेमि के०) हु करुं छु ॥३३॥

विधि—पछी "नमोअरिहंताणथी मांडी यावत् नवकारनो सपूर्ण पाठ" कहीजे, पछी "करेमि भते सामाइयंथी मांडी (अप्पाण वोसिरामिनो पाठ कहीजे" "पछी इच्छामि ठामि काउस्सग्गथी मांडीने यावत् "तस्स मिच्छामि दुक्कडं" पर्यंत पाठ कहीजे "पछी तस्स उतरीकरणेण" थी मांडीने अप्पाणं वोसिरामि" सुधीनो पाठ कहीने पछी काउस्सग्ग करवो, तेमां मनमां देवसि, राइसि (४ लोगस्स) नु ध्यान कीजे पक्खी पडिकमणे (१२ लोगस्स)

नुं ध्यान कीजे. चोमासी पडिकमणे (२० लोगस्स) नुं ध्यान कीजे, संवत्सरी पडिकमणे (४० लोगस्स) नुं ध्यान कीजे. संवत्सरी संबंधि चालीश लोगस्सनो काउस्सग्ग लख्यो छे, परंतु एमां केटलाएक भाइयो न्यून काउस्सग्ग पण करे छे, माटे जेमना धर्माचार्यना आदेश उपदेश मूजब जेटला लोगस्सना काउस्सग्ग करवानी परंपरा चालती आवेली होय तेमणे तेटला लोगस्सनो काउस्सग करवो. पछी नमो अरिहंताणं कही काउस्सग्ग पारीजे. पछी काउस्सग्ग मांहि आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान, ध्यायुं होय, धर्मध्यान शुक्लध्यान न ध्यायुं होय. तस्स मिच्छामि दुकडं, एम कहीजे. पछी प्रगटपणे (एक लोगस्स) कहीजे पछी पूर्वली पेरे "इच्छामि खमासमणाथी मांडीने अप्पाणं वोसिरामि" पर्यंतनो पाठ दोय वार कहीजे. इति सामायिक चोविसत्थो, वंदनक पडिकमणुं अने काउस्सग्ग ए पांच आवश्यक पूरां थयां.

हवे छठ्ठो आवश्यकना कामी इम कही, पछी गुरु मुनिराज पासे तथा वडेरा पासे, इणारो योग न

हुवे, तो आपणी मेले पच्चक्खाण धारणा प्रमाणे करीये ते कहे छे'—

गण्ठीसहि, मुट्ठीसहि, नवकारसी, पोरिसी, साड्ढ पोरिसी, आप आपनी धारणा प्रमाणे तिविहंपि, चउविहंपि, आहार, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेण वोसिरे ॥ इति ॥ ३४ ॥

विधि —सामायिक, चउविसत्थो, वंदनक, पडिक्कमणुं, काउस्सग्ग अने छट्ठुं पच्चक्खाण. ए छ आवश्यकमाहि जाणता अजाणतां जे कांइ अतिचार दोष लाग्यो होय, तथा पाठ उच्चारतां कानो, मात्रा, मींडुं, पद, अक्षर अधिको ओछो हलवो भारी आघो पाछो कह्यो कहेवाणो होय. तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ मिथ्यात्वनु पडिक्कमणुं, अव्रतनुं पडिक्कमणुं, कषायनुं पडिक्कमणु, प्रमादनुं पडिक्कमणु, अशुभ जोगनुं पडिक्कमणु, ए पांच पडिक्कमणामांहेलुं पडिक्कमणुं नही कीनु होय, तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ गया कालनुं

पडिक्कमणुं वर्त्तमान कालना संवर, आवता कालनां पच्चक्खाण, तेने विषे जे दोष लागो होय, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ३५ ॥ थइ थुइ मंगल ॥

हवे नीचे बेसी डावो गोडो उभो राखीने बे वार नमोत्थुणं कहीजे. पछी उभो थइने श्री सीमंधर स्वामीजी प्रत्ये पांचे अंग नमावीने तिक्खत्ताना पाठथी १००८ वार वंदना करुं छुं, एम कहीने नमस्कार करवो. पछी पोताना धर्माचार्यजीने तिक्खुत्ताना पाठथी वंदना करीने उपाश्रयनां जो कोइ मुनिराज होय तो तेमने पण तिक्खुत्ताना पाठथी वंदना करीने खमाववुं. पछी तिहांज रहेला साधर्मिभाइओ मांहेला जे तपस्या करनार होय तेमने सुखशाता पूछीने खमत खामणां करवां. अने अन्य साधर्मिभाइओ साथे पण अविनय आशातना संबंधि खमत खामणां करवां. देवसिपडिकमणामांहे मिच्छामि दुकडं आवे. तिहां दिवस संबंधि मिच्छामि दुकडं दीजे. राइसीमे राइसी संबंधि, पक्खीमें देवसी पक्खी संबंधि, चोमासीमे, देवसी चोमासी संबंधि, संवच्छरीमे संवत्सरी

संबधि, मिच्छामि दुकड. इम कहीजे॥ ए पडिकमण विधि कह्यो, वीजो अंतर विधि वडेराथी जाणवो ॥

॥ इति प्रतिक्रमण अर्थविधि संपूर्ण ॥

॥ अथ अर्थ सहित दश पच्चक्खाण प्रारंभ ॥

॥ तिहा प्रथम नमुक्कारसहिअनुं पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहार असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं महमागारेणं वोसिरामि ॥ १ ॥

अर्थ.–(उग्गएसूरे के०) सूर्यना उदयथी मांडीने वे घडी प्रमाण एटले रात्रिभोजननो दोप निवारवाने अर्थे, वे घडी पछी (नमुक्कारसहिअं के०) नवकार कहीने पारवुं तिहां सुधी (पच्चक्खामि के०) पच्चक्खाण छे एटले नियम छे अहीयां नवकार कहीने पच्चक्खाण पारवु छे, माटे ए पच्चक्खाणनुं नाम नवकारसी कहेवाय छे. अहीया गुरु, जे पच्चक्खाणना करावनार होय ते पच्चक्खाइ कहे, तेवारे शिष्य जे पच्चक्खाणनो करनार होय ते पच्चक्खामि कहे. एम

सर्व पच्चक्खाणोने विषे जाणी लेवुं. तथा संपूर्ण पच्च-
क्खाणे गुरु, वोसिरइ कहे अने शिष्य जे पच्चक्खाण-
नो करनार होय ते वोसिरामि कहे. ए नवकारसीनुं
पच्चक्खाण बे घडी प्रमाण काल पर्यंत चउविहारोज
होय, एवो आम्नाय छे, एटले रात्रिना चार पहोर
जे रात्रिभोजननो नियम कर्यो हतो. तेना तीरण
रूप एटले शिक्षरूप ए पच्चक्खाण छे. ए पच्चक्खाणमां
बे घडी सूधी चउव्विहार होय, माटे बे घडी वीत्या
पछी नवकार गणे, तो पहोंचे, पण बे घडी वीत्यानी
अगाउ नवकार गणे, तो न पहोंचे.

हवे शेनुं पच्चक्खाण करे ? ते कहे छे. (चउ-
व्विहंपिआहारं के०) चारे प्रकारना जे आहार तेनुं
पच्चक्खाण करे, ते आहारनां नाम कहे छे.

एक (असणं के०) अशन एटले शालि, ज्वार,
गोधूम, बंटी प्रमुख तथा सर्व जातिना ओदन एटले
भात तथा मग, मठ अने तूवर प्रमूख सर्व कठोल
तथा साथुआदिक सर्व जातिना लोट, तथा मोदका-
दिक सर्व जातिनां कंद, तथा मांडा प्रमुख सर्व

जातिनी केलवेली वस्तु, ए सर्वने अशन कहिये. तेमज वेशण, वरियाली, धाणा, सुआ, आदे देइने बीजी पण केटलीएक वस्तुओने अशनज कहीये

बीजु (पाणं के०) पाणी ते कांजी, यव, चोखा अने काकडी प्रमूखनां धोयण तथा नदी प्रमूख सर्व जलाशयनां पाणी, ए सर्व पाणी कहीये तथा शाक-रवाणी, द्राक्षवाणी, आंबिलवाणी अने शेलडीरस प्रमूख ए सर्व, यद्यपि पाणीमांहे आवे छे, तथापि एने व्यवहारथी अशनज कहिये

त्रीजु (खाइम के०) खादिम ते खारेक, बदाम शिगोडां, खजूर, कोपरा, द्राक्ष, तथा अखोडादिक सर्व जातिनो मेवो, तथा काकडी, आंबां, फणस अने नालियेर प्रमुख सर्व जातिनां फल तथा शेकेलां धान्य जेवां के धाणी, पहुंआ प्रमुख तथा पापड प्रमूख ए सर्वने खादिम कहिये.

चोथुं (साइम के०) स्वादिम ते दंतकाष्ट, शुंठ, हरडे, पींपर, मरी, अजमो, जायफल, कसेलो, काथो, खसखस, जेठीमध, तज, तमालपत्र, एलची, लविं-

ग, जावंत्री, सोपारी, पान, बीड लवण, आजो, अजमोद, कलिंजण, पिंपलीमूल, चिणिकबाव, कचूरो, मोथ, कांटासेलीयो, कपूर, संचल, बेहेडां, आमलां, हिंगाष्टक, हिंग, त्रिविंसो, पुष्करमूल, जवासामूल, बावची, बावलछाल, धवछाल, खेरछाल, खिजडाछाल, पान, पंचकूल, तुलसी, जीरुं. ए जीराने केटलाएक सूत्र सिद्धांतोमां स्वादिम कह्युं छे, अने केटलाएक सूत्र सिद्धांतोमां खादिम कह्युं छे, तथा अजमाने पण केटलाक एक आचार्य खादिम कहे छे. तथा कोठवडी, आमलगंठी, लिंबुइपत्र, आंबागोटली प्रमुखने स्वादिम कहिये, ए चार प्रकारना आहार कह्या. एम ए पूर्वोक्त चारे प्रकारना आहारनो नियम लेवाय. हवे नियमभंग थवाना भयने लीधे अहींयां नोकारसीना पच्चक्खाणने विषे बे आगार मोकलां मुके छे, ते कहे छे.

१ (अन्नत्थणाभोगेणं के०) अन्यत्राना भोगात् एटले विसरवा थकी. ते अहींयां पच्चक्खाणनो उपयोग विसरवाथकी अजाणपणे अनुपयोगे कोइ वस्तु

मुखमा प्रक्षेप कर्याथी पच्चक्खाण भंग न थाय, परंतु वचमां पच्चक्खाण सांभरे तेवारे तरत मुखथी त्याग कर, थूंकी नाखे तो पच्चक्खाण न भागे, अथवा अजाणपणे मुखथकी हेठु उतरया पछी कालांतरे सांभर्युं, अथवा तरत सांभर्युं तो पच्चक्खाण न भांगे, पण शुद्ध व्यवहार माटे फरी निशक न थाय तेथी यथायोग्य प्रायश्चित्त लेवु. ए रीते सर्व आगारोने विषे जाणी लेवु.

२ (सहसागारेण के०) जे पच्चक्खाण करयुं छे, तेनो उपयोग तो विसरयो नथी, पण कार्य करवामा प्रवर्त्ततां योग्य लक्षण सहसात्कार एटले स्वभावेज मुखमध्ये प्रवेश थाय, जेम दधि मथता छांटो उडी मुखमां पडे, अथवा गाय, भेंश प्रमुख दोहोतां थका तथा घृतादिकना तोल करतां अचानक छांटो उडी मुखमा पडे, अथवा चउविहार उपवासे वर्षाकाले मेघना छांटा मुखमा पडे, तेथी पच्चक्खाण भंग न थाय. ए रीते पूर्वोक्त बे प्रकारना आगारे करी (पोरिसिमि के०) बे घडी सुधी चार आहारने

वोसिरावुं छुं, एटले अपच्चख्खाणी आत्माने छांडुंछुं ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ बीजुं पोरिसि साढ्ढपोरिसिनुं पच्चख्खाण ॥

॥ उग्गए सूरे पोरिसिं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरामि ॥ २ ॥

एवं साढ्ढपोरिसियं पच्चक्खामि पण कहेवुं.

अर्थः–(पोरिसिं के०) प्रहर दिवस सुधी अने साढ्ढपोरिसिनुं पच्चख्खाण लीये तो सार्द्ध पोरिसि एटले अर्द्ध प्रहर सहित एक प्रहर अर्थात् दोढ प्रहर सुधी (पच्चख्खामि के०) नियम करुं छुं. इहां पुरुष प्रमाण शरीरनी छाया ज्यां होय, पण अधिक न्यून न होय तेने पोरिसि कहिये, अथवा पुरुष जमणे काने सूर्यनुं विंब राखीने, दक्षिणायनने प्रथम दिवसे ढींचणनी छाया जे वखते बे पगलां होय, ते वखते पोरिसि थाय तिहांसुधी पच्चख्खाण करे.

(असणंपाणंखाइमंसाइमं के०) अशन, पान,

खादिम अने स्वादिम, ए चार प्रकारना आहारनो नियम करु छु.

हवे आहार कहे छे, एक (अन्नत्थणाभोगेणं के०) अनाभोगे एटले अजाणते विस्मरणथकी बीजो (सहसागारेण के०) सहसात्कारे, त्रीजो (पच्छन्न-कालेण के०) कालनी प्रच्छन्नता ते मेघादि ग्रहादि. दिग्दाह, रजोवृष्टि तथा पर्वत अने वादल प्रमुखे करी सूर्य ढंकाइ जाय. तेणे करी वखतनी बराबर खबर न पडे. एवा अजाणपणाये करी अधूरी पोरिसिये पण पोरिसि पूर्ण थइ, एवु समजीने पच्चक्खाण पारवामा आवे, तो तेथी भंग नही, अने कदापि ए रीते अधूरी पोरिसिये जमवा बेठा एटलामा नडको जोयो, अने जाण्यु जे हजी सवार छे, पोरिसिनो वखत पूर्ण थयो नथी, तेवारे जे मुखमा कोळीयो होय ते राखमां परठवीने बेसी रहे, अने यावत पोरिसि पूर्ण थया पछी जमवा बेसे, तो पच्चक्खाण भागे नही.

चोथु (दिसामोहेणं के०) दिशिने मूढपणे एटले

दिशिविपर्यास थयाथी अजाणते पूर्वने पश्चिम अने पश्चिमने पूर्व करी जाणे. एम अजाणतां वेहेलुं पलाय तो पच्चक्खाण भंग नही, अने थोडुं जम्या पछी कोइना कह्याथी जाणवामां आवे, तो मुखमांनो कोळीयो थूंकी नांखे. ए रीते दिशिनो मोह टल्या पछी, अर्द्ध जम्यो बेसी रहे तो भंग नही.

पांचमुं (साहुवयणेणं के०) उग्घाड पोरिसि एवा साधुना वचने करी पोरिसि भणी, सांभलीने पाले, तो पच्चक्खाण भंग नही, पछी ज्यारे जाणवामां आवे के साधु तो छ घडीनी पोरिसि भणे छे, तेवारे पूर्वली रीते तेमज बेसी रहे, तो पच्चक्खाण भांगे नही. ए पाछला बे आगार भ्रमतानां छे.

छट्ठुं (सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं के०) सर्व प्रकारे शरीरमां असमाधि ते अस्वस्थता रहे, एटले पच्चक्खाण कर्या पछी तीव्र शूलादिक रोग उपने थके अथवा सर्प्पादिके डश्यो होय, ते वेदनाथी जीव आर्त्तिमां पडे, अथवा जेवारे अकस्मात् कष्ट थाय, तेवारे सर्व इंद्रियोनी समाधिने अर्थे अपूर्ण पच्चक्खा-

णे पण पथ्य औषधादिक लेवां पडे तो तेथी पच्च-क्खाण भग न थाय, अने समाधि थया पछी तेमज पाछलो विधि करे. इहा पण पच्चक्खाणनो आपनार, गुरु वोसिरइ कहे, अने शिष्य पच्चक्खाणनो करनार होय, ते वोसिरामि कहे.

॥ अथ त्रीजु पुरिमड्ढनु पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे पुरिमड्ढं पच्चक्खामि. चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं वोसिरामि ॥ ३ ॥

अर्थ –(उग्गए सूरे के०) सूर्यना उदयथी मांडीने नवकार सहित (पुरिमड्ढं के०) पहेला बे प्रहर सुधी पुरिमार्ध कहिये एटले बे प्रहर सुधी अशनादिक चारे आहारनु पच्चक्खाण छे एना अन्नत्थणाभोगेणं इत्यादि आगारोना अर्थ सर्व प्रथम लखाइ गया छे अने महत्तरागारेणनो अर्थ प्रथम नथी लख्यो, तो तेनो अर्थ (महत्तर के०) कोटि मोटा कार्य एटले पच्चक्खाणमां जेटलो कर्मनिर्जरानो

लाभ थाय छे, ते करतां पण अत्यंत महोटो निर्ज्ज-रानो लाभ जे कार्यमां थतो होय, अर्थात् कोइ ग्लानादिकना, वैयावच्चने अर्थे कोइ बीजा पुरुषथी ते कार्य न थइ शकतुं होय, त्यारे गुरु तथा संघना आदेशथी पुरिमड्ढनो वखत पूर्ण थया विना जो पालवामां आवे, तो पच्चक्खाण भंग न थाय. अने ते कार्य पूर्ण थया पछी पाछलोज विधि समजवो ॥३॥

॥ अथ चोथुं विगइ निविगइनुं पच्चक्खाण ॥

विगइओ निविगइओ पच्चक्खामि अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खित्त विवेगेणं पडुच्च मक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ४ ॥

अर्थः—भोजन करतां जेथकी कामादिक उन्मादरूप विकार थाय, तेने विगइ कहीये, ते निवीनां पच्चख्खाण ग्रहीने विगयना प्रमाणनी संख्या करे एटले दूध, दहिं, घृत, तेल, गोल प्रमुख विगइमांथी एक पण विगइनुं जे पच्चख्खाण करवुं, तेने विगइनुं पच्चक्खाण कहीये, अने समस्त विगइनुं जे पच्चक्खा-

ण करवुं, तेने (निव्विगइओ पच्चक्खामि के०) निविनुं पच्चक्खाण करु छुं

हवे पच्चक्खाण भगना भयथी जे आगार मोकलां मुके छे, ते कहे छे एक अन्नत्थणाभोगेण बीजुं सहसागारेणं ए बेना अर्थ लखाइ गया छे.

त्रीजु (लेवालेवेणं के०) लेपालेप ते आवी रीते के घृत प्रमुख जे विगयनो नियम साधुने होय तेवी घृतादिक विगडथी गृहस्थनो हाथ खरडायेलो होय, पछी तेने लुछी नाख्यो होय. तेवा हाथथी अथवा खरडायेला चाटुवाने लुछीने ते चाटुवाथी वहोरावे अथवा पीरसे. तो पच्चक्खाण भग न थाय

चोथु (गिहत्थससट्ठेण के०) गृहस्थनु जे वाटकी प्रमुख भाजन ने विगड प्रमुखे खरड्यु होय तेवा भाजनथी जे गृहस्थ अन्न आपे, ते अन्न जमे, तो पच्चक्खाण भांगे नही

पांचमु (उक्खित्तविवेगेण के०) गाढी विगइजे गोल प्रमुख छे तेना कटका रोटली उपर नाखी करी

पछी उपाडी परहा कर्या होय, तेवी रोटली प्रमुख लेतां पण पच्चक्खाण भंग न थाय.

छट्ठुं (पडुच्चमक्खिएणं के०) रोटला प्रमुखने लगारेक सुंहाला राखवाने अर्थे मोण दीधुं होय, अथवा लगारेक हाथ चोपडी कीधी होय, ते रेचवाली रोटली प्रमुख तथा पुडलादिक लेतां पच्चक्खाण भंग न थाय.

सातमुं पारिट्ठावणियागारेणं, आठमुं महत्तरागारेणं, अने नवमुं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, ए त्रण आगारनो अर्थ, बीजा प्रथम लखाइ गयेला पच्चक्खाणोथी जाणवो ॥ ४ ॥

॥ अथ एज चोथुं निविगइनुं एकासण सहित पच्चक्खाण ॥

॥ उग्गए सूरे निविगइ एकासणं पच्चक्खामि तिविहं पि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खित्त विवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ४ ॥

अर्थ –एमां कहेला आगारादिकोनो अर्थ सर्व आगलना पच्चख्खाणोमां लखाइ गयो छे इहां निवी- ना पच्चख्खाणमां जो पिंड विगइ अने द्रव्यविगइ, ए बेहु विगइनु पच्चख्खाण करे, तो तेणे एमां कहेला नवे आगार कहेवां, अने जे एकली द्रव्यविगइ मा- त्रनो नियम करे तेणे उख्खित्तविवेगेण ए आगार मू- कीने बाकीनां आठ आगार कहेवां ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमु एकासणावियासणांनु पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे एगासणं बियासणं पच्चक्खामि, दुविह तिविहं पि आहारं असण खाइमं साइम अन्न- त्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं सागारिआगारेणं आउट्टण पसारेणं गुरुअभ्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणिआगारेणं महत्त- रागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

अर्थ –उग्गए सूरे इत्यादिकनो अर्थ प्रथमना पच्चक्खाणोमां लखाइ गयो छे, ज्यां एक वार (असण के०) भोजन करवु. तेने एकासणुं कहीये अथवा ज्यां एकज आसन छे ते एकासण कहेवाय छे, अने बेवार भोजन करवु तेने विआसणु कहीये, तेनु

(पच्चक्खामि के०) पच्चक्खाण करूंछुं. एकासणुं अथवा बियासणुं कर्या पछी जो स्वादिम अने पाणीये बे आहार लेवा होय तो दुविहंपि आहारं कहे एटले अशन अने खादिम ए बे आहारनुं पच्चक्खाण करे अने जो एकासणुं करी रह्या पछी एकज पाणी मोकळुं राखे तो तिविहंपि आहारं एटले अशन, खादिम अने स्वादिम, ए त्रणे आहारनुं पच्चक्खाण करे, अने जम्या पछी एक पाणी मोकळुं राखे, तेवारे असणं खाइमं साइमंनो पाठ कहिये. हवे एनां आगार कहे छे. त्यां एक अन्नत्थणाभोगेणं अने बीजो सहसागारेणं, एना अर्थ लखाइ गया छे.

त्रीजुं (सागारिआगारेणं के०) साधु जमवा बेठा पछी त्यां कोइ सागारिक जे गृहस्थ ते आव्यो, पछी ते चाल्यो जतो होय तो क्षण एक सबूर करे, बेशी रहे, अने जो तेने त्यां स्थिर रहे तो जाणे, अने गृहस्थनी नजर पडे, तो साधु त्यांथी उठीने बीजे स्थानके जइ आहार लीये. केम के गृहस्थनी देखतां जमे तो प्रवचनोपघातिक महादोष सिद्धांतमां

कह्या छे, ते लागे. ए साधु आश्री कह्युं, अने गृहस्थ आश्री तो गृहस्थ एकासणु करवा बेठा पछी जेनी दृष्टि पडतां अन्न पचे नही, एवा कोइ पुरुषनी दृष्टि पडे; अथवा सर्प आवे, चोर आवे, बंदीवान आवी उभो रहे, अकस्मात् अग्नि लागे, घर पडवा माडे; तथा अकस्मात् पाणीनी रेल आवे, इत्यादिक कारणे ते स्थानकथी उठीने बीजे स्थानके जइ एकासणु करता पच्चक्खाण भांगे नही

चोथु (आउट्टणपसारेणं के०) जमवा बेठा पछी हाथ-पग-जंघादिक अंगोपांग प्रसारतां तथा संकोचतां कांइ आसन चलायमान थाय तो पच्चक्खाण भंग न थाय. पांचमु (गुरुअब्भुठाणेणं के०) पच्चक्खाणे जमवा बेठा छतां गुरु जे आचार्य उपाध्याय तथा साधु आवे, तेमना विनय साचववाने अर्थे बे पगने ठामे राखी उठवु पडे, तो पच्चक्खाण भंग न थाय

छठुं (पारिठावणियागारेणं के०) विधिये निर्दोषपणे ग्रहण करेलुं अने विधिये वेहेंची आप्युं जे अन्न तेने साधुये विधिये भुक्त कर्या थकां काहि

उगरयुं एवुं पारिष्टापनयोग्य जे अधिक अन्न ते स्नि-ग्ध अन्नने परठवनां जीव विराधनादि घणा दोष उ-पजे छे, एवुं जाणीने तेवुं अन्न तथा विगयादिकने गुरुनी आज्ञाये एकासणादिकथी मांडीने उपवास पर्यंत पच्चक्खाणवालाने वधेला आहारने जमतां पच्चक्खाण भंग न थाय, ए आगार यतिने होय, पण श्रावकने न होय, तथापि आलावो तूटे माटे गृहस्थने एकज पाठ संलग्न कहेतां दोष नथी.

सातमुं महत्तरागारेणं, अने आठमुं सव्वसमा-हिवत्तियागारेणंना अर्थ लखाइ गया छे. (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छुं ॥ ५ ॥

॥ अथ छठुं एकलठाणनुं पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे एगलठाणं पच्चक्खामि ॥ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं. साइमं. अन्नत्थणाभोगेणं सह-सागारेणं सागारिआगारेणं गुरुअभ्भुठाणेणं पारिठाव-णिआगारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरामि ॥ ६ ॥

अर्थ —एकलठाणानुं पच्चक्खाण पण एकासणा प्रमाणेज छे, परंतु एमां हाथ पगादिकनो संकोच विकोच थाय मोटे सात आगार छे, तेथी एक आउट्टणपसारेण ए आगार न कहेवु ॥ ६ ॥

॥ अथ सातमु आंबिलनु पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे आयंबिल पच्चक्खामि तिविहंपि आहार असण, खाइम साइम, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेण लेवालेवेणं गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिठावणिआगारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेण, पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अत्थेण वा बहुलेवेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरामि ॥ इति आयंबिल पच्चक्खाण समाप्त ॥ ७ ॥

अर्थ —(आयंबिल पच्चक्खाड के०) आंबिलनुं पच्चक्खाण करु छु तेना आठ आगार छे, तेमांथी एक अन्नत्थणाभोगेणं अने बीजु सहसागारेणं ए बे आगारना अर्थ आगल लखाइ गया छे.

त्रीजु (लेवालेवेणं के०) जे विगय तथा शाकादिकने सस्नेह ले आंगली तथा भाजनादिक ख-

रड्यां होय, तेने लेप कहिये, पछी तेनेज घणी सारी रीते लुंछी नाखीने जेमां विगयादिकना अवयव कांइ पण देखाय नहीं एवुं कर्युं होय तेने अलेप कहिये. एवा लेपअलेपवालां भाजन होय, अथवा हाथ लेपालेपवालां होय, एवा कांइ लेप अलेपवाला भाजने तथा हाथे पीरसवाथकी पच्चक्खाण भंग न थाय. एने लेपालेप आगार कहिये.

चोथुं (गिहत्थसंसठ्ठेणं के०) गृहस्थे पोताने अर्थे हाथ तथा चाटुआदिकने विगये करी खरड्या होय, तेवा हाथे अथवा चाटुआदिके अन्न आपे. ते अन्न जमतां थकां आंबिल भंग न थाय.

पांचमुं (उख्खित्तविवेगेणं के०) गाढी विगय जे गोल प्रमूख छे तेने रोटली उपर मुकीने फरी परहिं करी होय, तेवी रोटली निवि आंबिलमां लेतां पच्चक्खाण भंग न थाय.

छट्ठुं (पारिट्ठावणिआगारेणं के०) परठवतो आहार लेतां एटले कोइ साधुये अधिक वहोर्युं

होय, पछी ते तेने परठववानु होय, ते परठवतां तेने घणीज अजयणा लागे, अने तेज त्रिगय प्रमुखनुं पोताने पच्चक्खाण पण होय, अथवा पोते आयंबिल तप करयुं होय, तेम छतां पण, गुरुनी आज्ञाये तेवा आहारने लेवा थकी पण पच्चक्खाण भंग न याय

सातमूं (महत्तरागारेणं के०) महोटी निर्जराने लाभे पच्चक्खाण भागे नही आठमु (सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं के०) सर्व प्रकारे शरीर असमाधिये पच्चक्खाण भांगे नही, वोसिरामि एनो अर्थ सुलभ छे. तथा उप्ण पाणी वावरवा माटे पाणस्स एटले पाणीना लेप अलेपादिक छ आगार कह्यां छे, तेनो अर्थ आगल तिविहार उपवासना पच्चक्खाणमां आवशे ॥ ७ ॥

॥ अथ आठमूं चउविहार उपवासनुं पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे अभत्तट्ठं पच्चक्खामि चउव्विहंपि, आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेण महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ८ ॥

अर्थः—सूर्यना उदयथी मांडीने (अभत्तट्ठं के०) अभक्तार्थ एटले भात पाणी खावा नहीं तेने अर्थे. (चउव्विहंपिआहारं के०) चार आहारनो (पच्चक्खामि के०) नियम करुं छुं. ते चार आहारनां नाम कहे छे. एक अशन, बीजुं पान, त्रीजुं खादिम, अने चोथुं स्वादिम, हवे एनां आगार कहे छे. एक अन्नत्थणाभोगेणं, बीजुं सहसागारेणं, त्रीजुं पारिट्ठावणि आगारेणं, चोथुं महत्तरागारेणं, अने पांचमुं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं, एनो अर्थ लखाइ गयो छे.

तथापि पारिट्ठावणिआगारेणंना अर्थमां विशेष एटलुं छे के, पाणी अने आहार ए बे बानां कोइ परठवतो होय तो गुरुनी आज्ञाये आहार कीधो कल्पे, पण एकलो आहारज कोइ परठवतो होय तो ते आहार कीधो कल्पे नहीं, केम के ? चउव्विहारमां पाणीनो नियम छे, अने पाणी विना मुख शुद्ध न थाय. माटे पाणी अने आहार ए बे बानां परठवतो होय तो चउव्विहार उपवासमां लीधा कल्पे अने तिविहार उपवासमां तो पाणी मोकलुं छे, माटे एकलो

आहार कोइ परठवतो होय तो पण गुरुनी आज्ञाये लीधो कल्पे ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमूं तिविहार उपवासनु पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे अभत्तठं पच्चक्खामि तिविहंपि आहार असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं पारिट्ठावणि आगारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणहार पोरिसि पच्चक्खामि ॥ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेण महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अत्थेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरामि ॥९॥

अर्थ–(सूरेउग्गए के०) सूर्यना उदयथी आरंभीने (अभत्तठ के०) अभक्तार्थ एटले उपवासनु (पच्चक्खामि के०) पच्चक्खाण करु छु ए त्रिविहारमा एक पाणीनो आहार मोकलो राखीने बाकीना (असणं के०) अशन अने (खाइमं के०) खादिम, तथा (साइमं के०) स्वादिम ए (तिविहंपिआहार के०)

त्रण आहार तेनो नियम करुं छुं. हवे एनां आगार कहे छे.

एक अन्नत्थणाभोगेणं, वीजुं सहसागारेणं, त्रीजुं पारिठावणि आगारेणं, चोथुं महत्तरागारेणं, पांचमुं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एना अर्थ सर्व प्रथमना पच्चक्खाणोमां लखाणा छे.

ए पच्चक्खाणमां पोरिसी साढपोरिसी अथवा पुरिमार्द्ध पछी (पाणहार के०) पाणीनो आहार मोकलो छे. तेनां आगार कहे छे.

(पाणस्स के०) पाणी पीवानां छ आगार छे ते कहे छे, (लेवेणवा के०) लेपजल ते खजूरनुं तथा आछण, वीजुं (अलेवेणवा के०) अलेपजल ते धोयण प्रमुख, त्रीजुं (अच्छेण वा के०) निर्मल उष्ण पाणी, चोथुं (बहुलेवेण वा के०) डोलुं तांदुलनुं धोयण प्रमुख, पांचमुं (ससित्थेण वा के०) सीथ सहित पीठनुं धोअण, छठुं (असित्थेण वा के०) सीथ रहित फासु जल एटलां टाली बाकीनां पाणीने (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छुं.

॥ अथ दशमुं राते चउविहार करवो; तेनुं पच्च-क्खाण तथा भवचरिमनुं ॥

दिवमचरिम पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असण पाणं खाइम साइमं अन्नत्थणाभोगेणं महसा-गारेण महत्तरागारेणं मव्व ममाहिवत्तियागारेणं वो-सिरामि ॥ ९ ॥

अर्थ –(दिवसचरिमं के०) दिवसना छेहेडाथी मांडीने एटले संध्या समयथी मांडीने ज्यां लगे नवो सूर्य उगे नही त्यां सुधी पच्चक्खाण जाणवु-अने-जे जावजीव पर्यंत सथारो करवानो वेलाये चार आहा-रनु पच्चक्खाण करे. तेने भवचरिम एवो-पाठ कहीये शेप " चउविहंपि " इत्यादिनो अर्थ सुलभ छे ॥१०॥

॥अथ गठसहिय मुठसहियादि अभिग्रहोनु पच्चक्खाण॥

सूरे उग्गए गंठमहिअं, मुठमहिअं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइम, अन्न-त्थणाभोगेण महमागारेणं महत्तरागारेणं मव्वममाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ इति ॥

अर्थ –गांठ सहित पच्चक्खाण ते, कोइ दोरा

प्रमुखनी गांठ वांधी राखे तिहां सुधी पच्चक्खाण करुं छुं, गांठ छोड्या पछी मोकलो एमज मूठ वांधी राखे ते मुठसहियं. तथा मुठवच्चे अंगुठो राखे, ते अंगुठ सहियं इत्यादि अभिग्रह जाणवा. पाछलो अर्थ सुलभ छे ॥ ११ ॥

॥ अथ चउद नियम धारनारने देसावगासिक अभिग्रहनुं पच्चक्खाण ॥

देसावगासिअं उवभोगं परिभोगं पच्चक्खामि अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं वोसिरामि ॥ इति ॥

अर्थः—(देसावगासिअं के०) दिशिना अवकाशनुं व्रत अथवा वधा नियम आश्री तो (देस के०) थोडामां अवकाश आणे तेने देशावकाशिक व्रत कहिये. एटले इहां कोइ एकली दिशिनुंज पच्चक्खाण करे, तेवारे उपभोग परिभोगनो पाठ न कहिये तेने देसावगासिअं पच्चक्खाइज कहिये. हवे (उवभोग के०) जे वस्तु एकवार भोगवीये एवा आहार तथा विलेपनादिकनुं परिमाण करे, तेने उ-

पभोग कहिये अने (परिभोग के०) वारंवार भोगवियें एवी वस्तु जे आभरण, स्त्री वस्त्रादिक तेनु परिमाण करे, एटले जे चौद नियम संभारे, तेने ए उपभोगनो पाठ कहिये, एना आगारनो अर्थ आगल लखाइ गयो छे ॥ इति ॥

इति दश पच्चक्खाणो अर्थ सहित समाप्तम

॥ अथ श्री चत्तारी मंगळ ॥

चत्तारी मंगळ, अरिहंता मंगळ, सिद्धा मंगळ, साहु मंगळ केवळी पन्नतो धम्मो मंगळ ॥ १ ॥ चत्तारी लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवळी पन्नतो धम्मो लोगुत्तमा ॥२॥ चत्तारी सरणं पवज्जामि अरिहंता सरणं पवज्जामि सिद्धा सरणं पवज्जामि, सहु सरणं पवज्जामि केवळी पन्नतो धम्मो सरणं पवज्जामि॥३॥ श्री अरिहंतजीनु शरण, सिद्धजीनु शरण, साधुजीनु शरण, केवळी प्ररुप्या धर्मनु

शरण ॥ ४ ॥ दोहा ॥ ए चार शरणां करे नर जेह, भवसायरमां न बूडे तेह ॥ सकळ कर्मनो आणे अंत, मोक्षतणां सुख लहे अनंत ॥१॥ भाव धरीने जे गुण गाय, ते जीव तरीने मुगति जाय॥ संसारमां शरणां चार, अवर शरणुं नही होय ॥ जे नरनारी आदरे, तेने अक्षय अविचळ पद होय ॥ अंगुठे अमृत वसे, लब्धितणो भंडार ॥ जयगुरु गौतम समरिये, मनवांछित फळदातार ॥ ३ ॥

॥ अथ श्री चार शरणां प्रारंभ. ॥

प्रह उठीने समरिये, हो भवियण मंगळिक शरणां चार॥ आपदा मटी संपदा हुवे हो, भवियण दोलतनां दातार ॥ हृदयमां राखीये, हो भवियण मंगळिक शरणां चार ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अरिहंत सिद्ध साधुतणां हो० केवळी भाषित धर्म ॥ ए शरणां नितध्यावतां हो० टुटे आठे कर्म ॥ हृ० ॥ हो० ॥२ ॥ वाटे घाटे चालतां, हो० रात दिवस मोझार ॥ गाम नगर पुर विचरतां हो० विघ्न निवारण हार

॥ ह० ॥ हो० ॥ ३ ॥ ए चारे सुख कारियां, हो० ए चारे जग सार ॥ ए चारे उत्तम कह्यां, हो० ए चारे हितकार ॥ ह० ॥ हो० ॥ ४ ॥ डायण सायण भूतडां, हो० सिंह चित्राने शूर ॥ वेरी दुश्मन चोरटा, हो० रहे ते सघला दुर ॥ ह० ॥ हो० ॥ ५ ॥ राखो शरणांनी आसना, हो० नेडो नहि आवे रोग. ॥ आणद वर्त्ते इण नामथी, हो० वहाला तणो संयोग ॥ ह० ॥ हो० ॥ ६ ॥ सुख शाता वर्त्ते घणी, हो० जे ध्यावे नरनार ॥ परभव जातां इण जीवने, हो० एह तणो आधार ॥ ह०॥हो० ॥ ७ ॥ मन चिंतित मनोरथ फळे, हो० वर्त्ते कोड कल्याण ॥ शुद्धे मने ध्यावनां, हो० निश्चे पद निरवाण ॥ ह० ॥ हो० ॥ ८ ॥ इण सरिखो शरणो नहि, हो० इण सरिखो नहि नाम ॥ इण सरिखो मित्र नही, हो० गाम नगरपुर ठाम ॥ ह० ॥ हो० ॥ ९ ॥ दान शियल तप भावना, हो० जगमे तत्तव सार ॥ करो आराधो भावशुं हो० पामो मोक्ष दुवार ह० ॥ हो० ॥१०॥ जोड कीधी छे जुगतिशू, हो० पाली शेखाकाळ ॥ रुषि चोथमलजी इम भणे,

हो० सुणजो बाळ गोपाळ ॥ ह० ॥ हो० ॥११ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावक निचे लखेला त्रण मनोरथने चिंतवतो थको महा मोटी निर्जरा करे. संसारनो अंत करे. ते लखिये छए.

॥१॥ जिहां पहेलो मनोरथ कहीए छीए. श्रमणोपासक श्रावक एम चिंतवे जे कवारे हुं, बाह्य तथा अभ्यंतर घणो आरंभ अने परिग्रह थोडो ने घणो, न्हानो अने म्होटो, सचित्त, अचित्त अने मिश्र, हलवो ने भारी, जे महा पापनुं मूल, दुर्गतिने वधारनारो, महा काम क्रोध, मान, माया, लोभ, विषय अने कषायनो स्वामी, महा दुःखनुं कारण, महा अनर्थकारी, महादुर्गतिनी शिला, माठी लेश्याना अध्यवसायनो परिणामी महा अज्ञान, मोह, मत्सर, राग अने द्वेषनुं मूल, दशविध यतिधर्मरुप कल्पवृक्ष तरु पवननो दावानल, ज्ञान क्रिया, क्षमा, दया, सत्य संतोषनो नाश करनारो, तथा बोध बीजरुप समकितनो नाश करनारो, संयमव्रत अने ब्रह्मचर्यनो घात

करनारो, सदा कुमति तथा कुबुद्धिरुप दुःख दारिद्रनो देवावालो, सुमति अने सुबुद्धिरुप सूख सौभाग्यनो नाश करनारो, महातप संयमरुप धनने लूंटनारो, महा लोभ क्लेशरूप समुद्रनो वधारनारो, महा जन्म, जरा अने मरणना भयनो देवावालो, महा माया ए टले कपटनो भंडार, मिथ्यात्व दर्शनरूप शल्ये भरेलो, महा मोक्ष मार्गनो विघ्नकारी महा कडवां कर्म विपाक फलनो देवावालो, अनंत संसारनो वधारनारो, महा पापी पांच इंद्रियना विषयरूप वैरीनी पुष्टिनो करनारो, महोटी चिंता शोक, गारव अने खेदनो करनारो, महा संसाररूप अगाध वह्निनो सिंचवावालो, महा कुड कपटनो आगार, महा अंध परम क्लेशनो आगार, महोटा खेदनो करावनारो महा मंदबुद्धिनो आदर्यो, उत्तम पुरुष साधु निग्रंथाये जेने निंद्यो छे अने सर्व लोकमा सर्व जीवोने एना सरिखो बीजो कोइ विषम नथी, मोहरुप पाशनो प्रतिबंधक, इह लोक तथा परलोकना सुखनो नाश करनार, महा पापी, पांच आश्रवनो आगार, महा अनंत दारुण,

कर्कश कठोर अछतां एवां दुःख अने भयनो देवा-वालो, महोटा सावद्य व्यापार, कुवाणिज्य कुकर्मा-दाननो करावनारो, महा अध्रुव, अनित्य, अशाश्वतो, असार, अत्राण, अशरण, एवो जे आरंभ अने परि-ग्रह तेने हुं केवारे छांडीश ! जे दिवस छांडीश, ते दिवस महारो धन्य छे ! एवी रीते प्रथम मनोरथ श्रावक करे ॥ १ ॥

२ हवे दुजा मनोरथमां श्रमणोपासक श्रावक एम चिंतवे जे केवारे हुं मुंड थइने दश प्रकारे यतिध र्म धारी, नववाडे विशुद्ध ब्रह्मचारी, सर्व सावद्य परि-हारी, अणगारना सत्तावीश गुणधारी, पांच समिति त्रण गुप्तिये विशुद्ध विहारी, महोटा अभिग्रहनो धारी, बेहेतालीश दोष रहित विशुद्ध आहारी, सतर भेदे संयम धारी, बार भेदे तपश्याकारी, अंत आ-हारी, प्रांत आहारी, अरस आहारी, विरस आहारी, लुख्ख आहारी, तुच्छ आहारी, अंतजीवी, प्रांतजीवी, अरस जीवी, विरस जीवी, लुख्खजीवी, तुच्छ जीवी, सर्वरस त्यागी, छक्कायनो दयाल, निर्लोभी, निःस्वा-

दी, कुक्षी संवल, पंखी तुल्य, वायरानी पेरे अप्रतिवध विहारी, वीतरागनी आज्ञासहित, एह्वा गुणोनो धारक, जे अणगार ते हुं केवारे थईश। जे दिवस हु पुर्वोक्त गुणवान थइश ते दिवस धन्य छे। ए रीते बीजो मनोरथ श्रावक करे ॥ २ ॥

३ हवे त्रीजा मनोरथमां श्रमणोपासक श्रावक एम चिंतवे जे केवारे हु सर्व पापस्थानक आलोइ, निंदी, निशल्य थइ सर्व जीवराशि खमावीने, सर्व वात संभारीने, अढार पापस्थानकथी त्रिविधे त्रिविधे करी वोसरीने, चारे आहार पच्चख्खीने आइट्ट, कन, पीय, माण, मणाण, धिज्ज, विसासिय, समय, अणु मय, बहुमयं, भंडकरंडगसमाण, रयण करंडगभूयं, माणसिया, माणउन्हा, माणखुआ, माणपीवासा, माणवाला, माणचोरा, माणंदसमम्मगा, माणवाइय, पित्तिय, सव्वं सनिवाइयं, विविहा रोगायका, परिसहो वसग्गा, फासा फुसंति, एहवुं महारुं शरीर छे तेने छेल्हे श्वासोश्वासे वोसिरावीने, त्रण आराधना आराधतो थको चार मंगलिकरूप चार शरण मुखे उचा-

तो थको, सर्व संसारने पूंठ देतो थको, एक अरिहंत, बीजा सिद्ध, त्रीजा साधु अने चोथा केवलि प्ररूपित दयाधर्म, तेना ध्यानने ध्यावतो थको, शरीरनी ममता रहित थयो थको, पादोगमन संथारा सहित, पंडित मरणना पांच अतिचार टाळतो थको, मरणने अणवांछतो थको एहवुं पंडित मरण अंतकाले मुजने होजो. ए रीते त्रीजो मनोरथ श्रावक करे ॥ ३ ॥

ए त्रण मनोरथने श्रमणोपासक श्रावक, मन, वचन अने कायाए करी शुद्धपणे ध्यावतो थको पडि जागरण माणे करतो थको, सर्व कर्मनी निर्जरा करीने संसारनो अंत करे. मोक्षरूप शाश्वत स्थानक प्रत्ये पामे.

॥ इति त्रण मनोरथ संपूर्णम् ॥

प्रतिक्रमणनी सज्जाय.

करो पडिकमणुं भावशुं, दोय घडी शुभ ध्यान लाल रे ॥ परभव जातां जीवने, संबल साचुं जाण लाल रे ॥ कर० १ ॥ श्री मुनिवर समुचरे, श्रेणीक

राय प्रतिबोध लालरे ॥ लाख खांडी सोनातणी, दिये दिन प्रतिदान लालरे ॥ कर० २ ॥ लाख वरस लगे ते वळी, एम दीए द्रव्य अपार लालरे ॥ एक सामायिकनी तोले, नावे तेह लगार लालरे ॥ कर० ३ ॥ सामायिक चउवीसथो, भलुं वंदन होय वार लालरे ॥ वृत सभाळोरे आपणां, ते भव- कर्मे निवार लालरे ॥ कर० ४ ॥ कर काउसग शुभ ध्यानथी, पचक्खाण सुधुं विचार लालरे ॥ दो संध्याये ते वळी, टाळो टाळो अतिचार लालरे ॥ कर०५ ॥ सामायिक प्रसादथी, लहीए अमर-विमान लालरे ॥ धरमसिंह मुनीवर कहे, मुक्तितणु-एह निधान लालरे ॥कर० ॥ ६॥

सामायिक प्रतिक्रमण सूत्रार्थ समाप्तम्

॥ अथ जीवराशिनी सज्जाय ॥

हवे राणी पदमावती, जीवराशि खमावे ॥ जाणपणुं जग ते भलुं, एणी वेळाये आवे॥ ते मुज मिच्छामिदुक्कडं ॥ १ ॥ अरिहंतनी साख ॥ जे मे जीव

विराधिया, चोराशी लाख ॥ ते मुज० ॥ २ ॥ सात लाख पृथवीतणा, साते अपकाय ॥ सातलाख तेउकायना, साते वळी वाय ते मुज० ॥ ३ ॥ दशलाख प्रत्येक वनस्पति, चउदह साधारण ॥ बी त्ति चौरेंद्रिय जीवना, बे बे लाख विचार ॥ ते मुज० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकाशी ॥ चउदह लाख मनुष्यना ए लाख चोराशी ॥ ते मुज० ॥ ५ ॥ इण भवे परभवे सेवियां, जे पाप अढार ॥ त्रिविधे त्रिविधे करी परिहरुं, दुर्गतिनां दातार ॥ ते मुज० ॥६॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृपावाद ॥ दोष अदत्तादानना, मैथुन उनमाद ॥ ते मुज० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष ॥ मान माया लोभ में कियां. वळी रागने द्वेष ॥ ते मुज० ॥ ८ ॥ कळह करी जीव दूहव्या, दीधां कूडां कलंक ॥ निंदा कीधी पारकी, रति अरति निसंक ॥ ते मुज० ॥ ९ ॥ चाडी कीधी पारकी, कीधो थापणमोसो ॥ कुगुरु देव कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोंसो ॥ ते मुज० ॥१०॥ खाटकीने भवे में किया, जीवना वध घात ॥ चडी

मार भवे चरकलो, मारयां दिनरात ॥ ते मुज० ॥ ११ ॥ काजी मुल्लांने भवे, पढी मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जभ्भे किया, कीधां पाप अघोर ॥ ते मुज० ॥ १२ ॥ माछीने भवे माछलां, झाल्यां जळवास ॥ धीवर भील कोळी भवे, मृग पाडयां पास ॥ ते मुज० ॥१३॥ कोटवालने भवे मे किया, आकरा कर दंड ॥ बंधीवान मराविया, कोरडा छडी दंड ॥ ते मुज० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधां नारकी दुःख ॥ छेदन भेदन वेदना, ताडन अति तिक्ख ॥ ते मुज० ॥ १५ ॥ कुंभारने भवे में किया, नीभाह पचाव्या ॥ तेली भवे तल पीलिया, पापे पिंड भराव्या ॥ ते मुज० ॥ १६ ॥ हाळी भवे हळ खेडीयां, फोडयां पृथ्वीनां पेट ॥ सूड निदान किधां घणां, दीधा बळद चपेट ॥ ते मुज० ॥ १७ ॥ माळी भवे रोप रोपिया, नानाविध वृक्ष ॥ मूळ पत्र फळ फलनां, लाग्या पाप अलक्ष ॥ ते मुज० ॥१८॥ अधोवाडयाने भवे, भरया अधिका भार ॥ पोठी उंट कीडा पडया, दया नाणी लगार ॥ ते मुज० ॥ १९ ॥ छीपाने भवे छेतरया, की-

धा रंगण पास ॥ अग्नि आरंभ कीधा घणा, धातुवाद अभ्यास ॥ ते मुज० ॥ २० ॥ शूरपणे रण झूजतां, मारयां माणस वृंद ॥ मदिरा मांस माखण भख्यां, खाधा मूळ ने कंद ॥ ते मुज० ॥२१॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी उलेच्यां॥ आरंभ कीधा अति घणा, पोते पाप ज संच्यां ॥ ते मुज० ॥ २२ ॥ अंगारकर्म कियां वळी, धरमे दव ज दीधा ॥ सम खाधा वीतरागना, कुडा कोस ज कीधा ॥ ते मुज० ॥ २३ ॥ बिल्ली भवे उंदर गल्या, गिरोळी हत्यारी ॥ मूढगमारतणे भवे, में जू लीख मारी ॥ ते मुज० ॥ २४ ॥ भाडभुंजातणे भवे, एकेंद्रिय जीव ॥ जार चणा घउं शेकिया, पाडंता रीव ॥ ते मुज० ॥ २५ ॥ खांडण पीसण गारना, आरंभ अनेक॥ रांधण इंधण अग्निनां, कीधां पाप उद्वेग ॥ ते मुज० ॥ २६ ॥ विकथा चार कीधी वली, सेव्या पंच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पडाविया, रुदन विषवाद ॥ ते मुज० ॥ २७॥ साधु अने श्रावकतणां, व्रत लेइने भाग्यां॥ मूल अने उत्तरतणां मुज दूषण लाग्यां ॥ ते मुज० ॥ २८ ॥ साप वींछी

सिंह चीतरा, शकराने समळी ॥ हिंसक जीवतणे भवे, हिंसा कीधी सवळी ॥ ते मुज० ॥ २९ ॥ सूवावडी दूषण घणां, वळी गर्भ गळाव्या ॥ जीवाणी ढोल्यां घणां, शीळ व्रत भंजाव्यां ॥ ते मुज० ॥ ३० ॥ भव अनत भमतां थकां, कीधो देह संबंध ॥ त्रिविधे त्रिविधे करी वोसिरुं, करुं जन्म पवित्र ॥ ते मुज० ॥ ३१ ॥ भव अनत भमतां थकां, कीधा परिग्रह सवध ॥ त्रिविधे त्रिविधे करी वोसिरु, तिणशूं प्रतिबंध ॥ ते मुज० ॥ ३२ ॥ भव अनत भमतां थकां, कीधा कुंटुब संवध ॥ त्रिविधे त्रिविधे करी वोसिरु, तिणशु प्रतिबंध ॥ ते मुज० ॥ ३३ ॥ इणिपरे इहभव परभवे, कीधां पाप अखत्र ॥ त्रिविधे त्रिविधे करी वोसिरुं, करुं जन्म पवित्र ॥ ते मुज० ॥ ३४ ॥ एणि विध ए आराधना, भावे करशे जेह ॥ समयसुंदर कहे पापथी, वळी छुटशे तेह ॥ ते मुज० ॥ ३५ ॥ रागवैराडी जे सुणे, एह त्रीजी ढाळ ॥ समयसुंदर कहे पापथी, छूटे ततकाळ ॥ ते मुज० ॥ ३६ ॥ इति ॥

॥ उपदेशक पद. ॥

भक्ति एहवीरे भाइ एहवी. जेम तरस्याने पाणी जेहवी—ए टेक. एक जुवति जल भरवा जाए, सामि वातो तेहवी थाय; माथे वेडुने लिए हाथ तालि, चालि मारग घुंघट वालि; घर वार पोतानुं समरवुं, एहवुं गुरु चरणे चित्त धरवुं. भक्ति १

एक माछलि जलमां रहे छे, निशदिन रंगमे रहे छे; कोइ पापीए पाणी बाहिर काडी, तरफडीने अंग पछाडी; जीव जाय तो जलने समरवुं—एहवुं. भक्ति. २

एक भमरो कमळमे रहे छे, निशदिन सुगंध लहे छे; सांज पडि ने कमळ बीडाणुं, थयो व्याकुल कांइए न जवाणुं; एने कमळनी प्रीते मरवुं—एहवुं. भक्ति. ३

एक गुणका ते गायन करे छे, सोल सणगार अंगे धरेछे; लेइ दरपणने मुख नीहाले, नख खिख शरिर संभाळे; एहने पारकुं मनज हरवुं—एहवुं. भक्ति. ४

एक मुंढमति नर जेह, तेने परनारिसुं स्नेह. हैडे अधम अधम पग भरतो, परनारिनी केडे फरतो; एहने सुलिना सुखेज ठरवुं—एहवुं. भक्ति. ५

एक चोर ते चोरि करे छे, पर मंदिर फेरा फरेछे; मालि माझम रात अधारि, डरतो नथी धिरज धारे; एहने पारकु धन पोतानुं करवु–एहवु भक्ति ६

एक राजमा आनद माने, एहना मदिर जोइ वखाणे, राजपाट अने हथीयार, हाथी घोडा ने रथ अपार, एहने राज जोइने ठरवु–एहवु भक्ति ७

एक नादनो मोह्यो मृग आवे, एहने यंत्रनो शब्द सोहावे, वेठो आसन वालि डोले, महा मग्न थइने वोले, एहने नादनी वातेज मरवु–एहवुं भक्ति- ८

बपैइयाने वरसाद वहालो, एहवो मोक्षनो मारग झालो, काया माया कारमी जाणो, रुडो ज्ञान हृदयमां आणो, कहे कल्याण एणीपरे तरवु–एहवु भक्ति ९

॥ उपदेश पद वीजु ॥

भैया कैसे गमाते उत्तम जनम ४ भैया कैसे ४ गमाने उत्तम जन्म ॥ ए टेक ॥ पीर भवानी पथर पुजे, करते हिंसा अजाण ॥ संत ज्ञानी धर्मि देखी, करते मान गुमान ॥ भैया १ ॥ कदमुल अभक्षको

खानो, पीनो अणगल पानी ॥ खोटा धंधा गुणिकि निंद्या, परनारि चित छानी ॥ भैया. २ ॥ नाटक जुवाव कुसंगे, भमके रात गमाते ॥ दया सामाइक मुनी दर्शन, गुण करतां दील शरमाते ॥ भैया. ३ ॥ गाली गावे खावे, खेले फाग गधे अस्वार ॥ मात तात गुरु जात लजावे, लाजे नही गमार ॥ भैया. ४ ॥ धन जोवन मदमे छकके, साधु सीख नही माने ॥ फीर रूवे ओर शिर फुटे, पहेलां समजाउ थाने. ॥ भैया. ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री महावीर स्वामीनुं चोढालीयुं ॥

॥ ढाल १ ली ॥

सिद्धारथ कूळे तुं उपन्यो, त्रिशलादे थारी मात जी ॥ वरशी दान देइ करी, संयम लीधो जगनाथ जी ॥ थें मन मोह्युं महावीर जी ॥ १ ॥ कंचन वरणी छे काय जी ॥ नयण न धापे जी निरखतां, दिठडे आवे छे दायजी ॥ थें मन० ॥ २ ॥ आप एकिला संयम आदर्यो, उपन्यो चोथो रे ज्ञान जी ॥ उ-

त्कृष्ट तप थें आदर्यों, धरता निर्मळ ध्यान जी ॥ थें मन० ॥३॥ उग्र विहार थे आदर्यों, केइ वास रह्या वनवास जी ॥ केइ वासा वस्तिये रह्या, न रह्या एक ठामे चोमास जी ॥ थे मन० ॥४॥ प्रभु पहेला चोमासो थे कियो, अट्ठी गाम मोझार जी ॥ दूजो वाणीज गाम में, पंच चपा सुखकार जी ॥ थे मन० ॥ ५ ॥ पत्र पृष्ठ चंपा करयां, विशाळा नगरीमां तीन जी ॥ राज ग्रहीमां चौदे करयां, नालदे पाडे लयलीन जी ॥ थे मन० ॥ ६ ॥ छ चोमासां मिथिला करया, भद्रिका नगरीमा दोय जी ॥ एक करयोरे आलभिया, सावत्थि नगरी एक होय जी ॥ थे मन० ॥ ७ ॥ एक अनारज देशमां, अपापा नगरी एक जाण जी ॥ एक करयो पावापूरि में, जट्टे पहोत्या निरवाण जी ॥ थे मन० ॥८॥ हस्तिपाळ राजा इम वीनवे, हु तुम चरणारा दास जी, एक शाळा म्हारे सूझती, आप करोने चोमास जी ॥ थे मन० ॥ ९ ॥ चाळीश चोमासां शहेरमां, दाख्यां देश नगरना नाम जी ॥ एक अनारज देशमां, एक चोमासु वळि गाम जी ॥ थें

मन० ॥ १० ॥ प्रभु गाम नगर पूर विचरिया, भव्य जीवारां भाग्य जी ॥ मारग बतायो मोक्षनो, कियो उपगार अथाग जी ॥ थें मन० ॥ ११ ॥ साडाबार वरसां लगे, उपर आधो रे मास जी ॥ छद्मस्थ रह्या प्रभु एटलुं, पछी कर्यो केवळज्ञान प्रकाश जी ॥ थें मन० ॥ १२ ॥ वर्ष बयालीश पाळियो, संयम साहस धीर जी ॥ त्रीश वरस घरमां रह्या, मोक्ष दायक महावीर जी ॥ थें मन० ॥ १३ ॥ पावापुरिमां पधारिया, नर नारी हूआ उल्लास जी ॥ ऋषि राय चंदजी इम वीनवे, हुं आयो प्रभुजीने पास जी ॥ थें मन०॥ १४ ॥ संवत अढार गुणचालीशमे, नागोर शहेर चोमास जी ॥ पूज्य जेमलजी प्रसादथी, एह करी अरदास जी ॥ थें मन० ॥ १५ ॥ इति. ॥

॥ ढाल २ जी ॥

शासन नायक वीर जिणंद, तीरथनाथ जाणे पूनम चंद ॥ चरणे लागे ज्यारे चोशठ इंद्र, सेवा करे ज्यारी सुर नर वृंद ॥ थें अबको चोमासो स्वामिजी अठेकरो जी, थें पावापुरिसे पग आघो मति

धरो जी, अट्टे करो, अट्टे करो, अट्टे करो, जी, थे चरम चोमासो स्वामिजी अट्टे करो जी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ हस्तिपाळ राजा विनवे कर जोड, पूरो प्रभुजी म्हारा मनरा हो कोड ॥ शीश नमाय उभो जोडी हाथ, करुणा सागर वांजो कृपाजी नाथ ॥ थें अवको० ॥२॥ रायनी राणी विनव राजलोक, पुण्य जोग मल्यो सेवानो सजोग ॥ मन वांछित सहु मळियां जी काज, थे मया करी मुज सामु जुओ जिनराज ॥ थे अवको० ॥ ३ ॥ श्रावक श्राविका कइ नर नार, मळी मळी विनती करे वारवार ॥ पावापूरिमां पधारया वीतराग, प्रगटी पुण्याइ म्हारां म्होटां जी भाग्य ॥ थे अवको० ॥ ४ ॥ वळि हस्ति पाळ राजा विनवे भूपाळ, प्रभु जी थे छो दीन दयाळ ॥ सूझती एक म्हारे म्होटी छे शाळ, हवे लागी गयो छे वरपा जी काळ ॥ थे अवको० ॥ ५ ॥ मानी विनती प्रभु रह्या चोमास, पावा पुरिमा हुओ हरख उल्लास ॥ गौतम गणधर गुराजीने पास, निशि दिन ज्ञाननो करेजी अभ्यास ॥ थे अवको० ॥ ६ ॥ साधु

अनेक रह्या करजोड, सेवा करे सदा होंडाजी होड॥ चौद हजार चेला रत्नारी माळ, दीक्षा लीधी छोडी माया जंजाळ ॥ थें अवको० ॥ ७ ॥ वडि चेली चंद नवाळा जी जाण, हुइ कुमारि महा सति चतुर सु-जाण ॥ मोतीनी माळा छत्रीश हजार ॥ सघळी में वडी साधवी ए शिरदार ॥ थें अवको० ॥ ८ ॥ चारुइ संघ सेवा नित्य करे, प्रभुजीने देखी देखी अंखीयां ठरे ॥ नव मह्लिने नव लच्छी जी राय, ज्यारां दर्शन करी चित्तमें चाय ॥ थें अवको० ॥ ९ ॥ संघ सघळा रे हुइ मन रंग रळी, पुण्य योगे प्रभुजीनी सेवा मळी ॥ ऋषि रायचंदजी विनवे जोडी हाथ, थे करुणासा-गर वांजो कृपाजीनाथ ॥ थें अवको० ॥ १० ॥ शहेर नागोरमे कियोजी चोमास, प्रभुजी देज्यो मुने मुग-तिना वास॥ हुं सेवक तुमे साहिव स्वाम, म्हारे अवर देवाशुं नहि कोइ काम॥ थें अवको० ॥१२॥ इति॥

॥ ढाल ३ जी. ॥

शासन नायक श्री महावीर, तीरथनाथ त्रिभुवन धणी॥ पावापुरिमे कियो चरम चोमास, हुइ मोक्षदा

य करी महिमा घणी ॥ गौतमने मेल दियो महावीर, देवशर्माने प्रतिबोधवा ॥१॥ उत्तराध्ययननां अध्ययन छत्रिश, कारतक वदि अमावास्ये कह्यां ॥ एकशोने वळि दश अध्ययन, सूत्र विपाक तणां लह्यां॥ गौतमने० ॥ २ ॥ पोसा किधा श्री वीरजीनी पास, देश अढारना राजीया ॥ नव मल्लिने नव लच्छीजी राय, वीरना भगता वाजीया ॥ गौतमने० ॥ ३ ॥ प्रभु शासनना गिरदार, सर्व संघने संतोषने ॥ सोळ पहोर लगे देशना दीध, पछी वीर वीराज्या मोक्षमे ॥ गौतमने० ॥ ४ ॥ तिन वरसने साडा आठ मास, चोथा आराना बाकी रह्या ॥ दिन दोय तणा सथार, *मौन रही मुगते गया ॥ गौतमने० ॥ ५ ॥ इन्द्र आव्याजी चित्त उदास, देव देवीना साथमे॥ जाणे झग मग लग रही ज्योत, अमावश्यानी रात मे ॥ गौतमने० ॥ ६ ॥ मुगति पहोत्या एका एक, सातमे हुवा ज्यारे केवळी ॥ चौदमें साधवियां हुइ सिद्ध, हु सहुने वांदु मनरळी ॥ गौतमने० ॥ ७ ॥ राया त्रीश वरस घर मांय, वर्ष

• मौन रही (पाठान्तर) मौन रहा।

वयालिं संयम पालियो ॥ प्रभु जग तारण जगदीश, दया मार्ग अजुवालियो ॥ गौतमने० ॥ ८ ॥ होजी देव देवीने वळि इंद्र, निर्वाण तणो महोच्छव कीयो ॥ अरिहंतनो पडियो वीजोग, सुर नरनो भरियो हीयो ॥ गौतमने० ॥ ९ ॥ साधु साधवी करता शोक, श्रावक श्राविका पण घणो ॥ भरत क्षेत्रमां पडियो वीजोग, आज पछी अरहंत तणो ॥ गौतमने० ॥ १०॥ पछी वेठा सुधर्म स्वामी पाट, चारुइ संघ चरण सेवता ॥ ज्यारी पाळता अखंडित आण, सेवा करे देवी ने देवता ॥ गौतमने० ॥ ११ ॥ मुगते पहोत्या श्री महावीर, प्रभु सुख पाम्या छे शाश्वतां ॥ ऋषि रायचंदजी कहे एम, महारे अरिहंत वचननी आसता ॥ गौतमने० ॥ १२ ॥ इति.

॥ ढाल ४ थी. ॥

श्री महावीर पहोत्या निर्वाण, गौतमस्वामीये वातज जाणी ॥ गुरांजी थें मने गोडे न राख्यो ॥१॥ ए आंकणी ॥ मुगति जावणरो नाम न दाख्यो ॥ गुरांजी० ॥ २ ॥ हूं सघळा पहेलो हुवो थारो चेलो,

इण अवसर आघो किम मेल्यो ॥ गूरांजी० ॥ ३ ॥ प्रभु तुम चरणे महागे चित्त लाग्यो, पण थें मुने मेल दियो आगो ॥ गूरांजी ॥ ४ ॥ मुने दरशन आपरो लागतो प्यारो, आप पहोत्या निर्वाण मुने मेल न्यारो ॥ गूरांजी० ॥ ५ ॥ आपे तो मुजशूं अंतर राख्यो, पिण मे महारो मनरो दरद न दाख्यो ॥ गूरांजी० ॥ ६ ॥ हुं आडो मांडीने न झालत पल्लो, पण साहिब काम कियो तुमे भल्लो ॥ गूरांजी० ॥ ७ ॥ हुं तुमने अंतराय न देतो, मुगतिमे जग्या वहेंची न लेतो ॥ गूरांजी० ॥ ८ ॥ हु सकडाइ न करतो कांइ, आप साथे हु मोक्षमे आइ ॥ गूरांजी० ॥९॥ अब हुं पुछा करशुं किण आगे, प्रभु, महारो मन एक थाराशुज लागे ॥ गूराजी० ॥ १० ॥ महारो सांसो कहो कुण टाळे, आप विना पाखडीना मद कुण गाळे ॥ गूरांजी० ॥११॥ हुतो चोद पूरवने चौनाणी, पिण मोहनी कर्मे लपेटयो आणी ॥ गूरांजी० ॥ १२ ॥ इसा गौतमस्वामीये किया विलपात, ए मोहनी कर्मनी अचरिज वात ॥ गूरांजी० ॥ १३ ॥ हवे

मोहनी कर्म दूरे टाळी, गौतमस्वामीये सुरति संभाळी ॥ वीतराग राग द्वेपशुं जीत्या. ॥१४॥ ए आंकणी ॥ महारा चित्तमां आइ गइ चिंता ॥ वीतराग० ॥ १५ ॥ तिणि वेळा निर्मळ ध्यानज ध्यायो, केवळ ज्ञान गौतमस्वामिये पायो ॥ वीतराग० ॥ १६ ॥ बार वरस रह्या केवळज्ञानी, वात जाशुं कांइ नवि रही छानी ॥ वीतराग० ॥ १७ ॥ गौतमे पण कियो मुगतिमे वासो, संसारनो सर्व देखे तमासो ॥ वीतराग० ॥१८॥ जेणि राते मुगति गया वर्द्धमान, इंद्रभूतिने उपन्युं केवळज्ञान ॥ वीतराग० ॥ १९ ॥ तिण दिन थी ए वाजी दीवाली, महोटो दिन ए मंगळ माळी ॥ वीतराग० ॥ २० ॥ रात दीवालीनो शियल थे पाळो, वली रात्रिभोजन करवो टालो ॥ वीतराग० ॥ २१ ॥ ऋषि रायचंद कहे सुणो हो सुज्ञानी, दया रुप दीवाली थे लेज्यो मानी ॥ वीतराग० ॥ २२ ॥

॥ कलश.॥ श्री शासन नायक, मुगति दायक, दया मारग अजुआलियो ॥ श्री गौतमस्वामी, मुगति गामी, कियो चित्त वल्लभ चोढालियो ॥ २३ ॥ संवत

अठारे गुणचालीशे, नागोर चोमासो निर्मल मने ॥ पूज्य जेमलजी प्रसादे, सपूर्ण कियो दीवाली दिने॥ २४ ॥ इति समासम् ॥

अथ श्री गौतम स्वामीनो छंद.

वीरजिणेशर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो निशदिश ॥ जो कीजे गौतमनुं ध्यान, तो घर विलशे नवे निधान ॥१॥ गौतम नामे गिरिवर चडे, मनवछित हेला सपडे ॥ गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामे सर्व सजोग ॥२॥ जे वैरी विरु आ वकडा, तस नामे नावे ढुकडा ॥ भूत प्रेत नवि मडे प्राण, ते गौत मना करु वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे निर्मल काय, गौतम नामे वाधे आय ॥ गौतम जिन सासन शणगार, गौतम नामे जय जयकार ॥ ४ ॥ शालि दाळ सुरहा घृत गोळ, मनवछित कापड तबोल ॥ घर सुघरणी निर्मल चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥५॥ गौतम उग्यो अविचल भाण, गौतम नाम जपो जग जाण॥ म्होटां मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोडानी जोड, वारु पहोंचे

वंछित कोड ॥ महियल माने म्होटा राय, जो तुठे गौतमना पाय ॥७॥ गौतम प्रणम्या पातक टले, उत्तम नरनी संगत मले ॥ गौतम नामे निर्मल ज्ञान, गौतम नामे वाधे वान ॥८॥ पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे बहु ॥ कहे लावण्य समय करजोड, गौतम तूठे संपति कोड ॥ ९ ॥ इति ॥

अथ श्री महावीर स्वामीनो छंद.

श्री सिद्धारथ कुळ शणगार, त्रिशला देवी सुत जग आधार ॥ शोभे सुंदर सोवन वान, शरण तमारुं श्री वर्द्धमान ॥ १ ॥ तुम नामे लहिये संपदा, तुम नामे मन वंछित मुदा ॥ तुम नामे लहिये सनमान शरण० ॥२॥ दुर्जन दुष्ट वैरी विकराल, तुम नामे नासे ततकाल ॥ तुम नामे दिन दिन कल्याण, शरण ॥३॥ तुम नामे नावे आपदा, भूत प्रेत व्यंतर नहि कदा ॥ रोग शोग चिंता नवि जाण, शरण० ॥ ४ ॥ ग्रहादिक पीडा नवि करे, नाम तमारुं जे अनुसरे ॥ धर्मसिंह मुनी भाव प्रधान, शरण० ॥ ५ ॥ इति ॥

समाप्तम.